पंद्रह रुपए

वर्ष : ३ अंक : १
१४ फरवरी, २०२३

RNI-UPHIN/2021/79954

खुले दिमाग़ के खुले विचार

ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार–पत्र

आजादी का 75 अमृत महोत्सव

तुर्किये और सीरिया में भूकंप

शोधादर्श के प्रो. ऋषभदेव शर्मा विशेषांक 'प्रेम बना रहे' का विमोचन

खुले दिमाग़ के खुले विचार

ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

नियमित ग्राहक बनें

Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703

समयावधि	रुपए डाक खर्च सहित	पीडीएफ/प्रिंट अंक	विशेषांक
वार्षिक	- १०००	४८	४
द्विवार्षिक	- १६००	६६	८
पंचवार्षिक	- ४५००	२४०	२०

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814

Title-Code-UPHIN49431 RNI-UPHIN/2021/79954

रजिस्टर्ड पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Email- opendoornbd@gmail.com Mob.- 9897742814

'ओपन डोर' साप्ताहिक समाचार पत्र में

विज्ञापन दर निम्नवत है- शुभकामना संदेश/विज्ञापन प्रकाशित करवाने के संदर्भ में

क्रम	विज्ञापन स्थान संपूर्ण पृष्ठ	मूल्य रुपए में	विज्ञापन स्थान आधा पृष्ठ	मूल्य रुपए	विज्ञापन स्थान चौथाई पृष्ठ	मूल्य रुपए
1	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	26,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	13,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	7,000.00
2	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	22,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	11,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	6,000.00
3	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	20,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	10,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	5,000.00
4	श्वेत श्याम पृष्ठ	10,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	5,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	2,500.00

क्लासीफाईड- कम से कम 500 रुपए विशेष- एक साथ पांच या उससे अधिक बार विज्ञापन प्रकाशन पर विशेष छूट का प्रावधान है।

भुगतान के लिए बैंक खाता विवरण "Open Door" INDIAN OVERSEAS BANK, NAJIBABAD, AC- 368602000000245 IFSC- IOBA0003686

तकनीकी जानकारी- आकार- २१.५x२७.५ सेमी, प्रिंट एरिया- १८x२५ सेमी, कॉलम- ३ (कॉलम की चौड़ाई ५.५ सेमी.) लगभग, पृष्ठ- आवरण सहित ३६

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

Subscribe

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज़

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधि की

https://www.youtube.com/@OPENDOORNews

RNI-UPHIN/2021/79954 MSME-UDYAM-UP-17-0002703

पंद्रह रुपए

खुले दिमाग़ के खुले विचार

ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

वर्ष : ३, अंक : १, १४ फरवरी, २०२३

तुर्किये और सीरिया में महाविनाश

धरती करवट बदल रही है। ऐसा तब कहा जाता है जब भूकंप आता है। ऐसी ही करवट तब बदली जब तुर्किये और सीरिया में ६ फरवरी को ७.८ की तीव्रता का शक्तिशाली भूकम्प आया और ऐसा महाविनाश हुआ कि हजारों जान लील गया। तुर्किये में उसकी भौगोलिक स्थिति के कारण अक्सर भूकम्प आते रहते हैं, इसके बावजूद वहां बनाई गई बहुमंजिला इमारतें इस बात की गवाही हैं कि वहां के लोगों को भूकम्प का कोई डर नहीं था। जबकि १९९९ में आए भूकम्प से १८ हजार से अधिक लोगों की जान चली गई थी। भारत के विभिन्न हिस्सों में भी भूकम्प के झटके लग रहे हैं। जिसके चलते यहां भी चिंता हो रही है कि तुर्किये और सीरीया जैसी भयानक तबाही न आ जाए। आईआईटी कानपुर के वैज्ञानिकों का तो मानना है कि भारत में भी तुर्किये जैसे ही तेज भूकम्प के झटके लग सकते हैं। इनका मानना है कि आने वाले एक-दो वर्षों में या एक-दो दशक में कभी भी भारत के कुछ हिस्सों में ७.५ से भी अधिक तीव्रता से भूकम्प आ सकता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि हमारे देश में विशेष रूप से दिल्ली और उसके आसपास का क्षेत्र भूकम्प जोखिम पर है, जहां बार-बार भूकम्प के झटके लग रहे हैं। ५ जनवरी की रात को ५.९ तीव्रता के भूकम्प के झटके अनुभव किए गए थे। ३ फरवरी की रात ३.२ तीव्रता के भूकम्प के झटके अनुभव किए गए थे। जबकि २४ जनवरी की दोपहर को कुछ राज्यों में रिक्टर स्केल पर ५.८ तीव्रता के भूकम्प के तेज झटके अनुभव किए गए थे। बीते वर्ष नवम्बर में दिल्ली-एनसीआर में दो बार ऐसे भूकम्प भी आए, जिनकी तीव्रता रिक्टर स्केल पर ६.३ मापी गयी थी। जिसके झटके उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड सहित कई राज्यों के अलावा चीन और नेपाल तक अनुभव किए गए थे।

बार-बार आ रहे इन भूकम्पों से राहत के इन्तजाम भारत सरकार को पहले ही कर लेने चाहिए। बड़ी-बड़ी इमारतों के लिए भी नियम कड़े और भूकम्परोधी बनाए जाने चाहिए। प्रकृति की करवट से डरना चाहिए।

अमन कुमार

संपादक
अमन कुमार
प्रबंध संपादक
सौरभ भारद्वाज

प्रतिनिधि
डॉ. सुशील कुमार त्यागी 'अमित' (हरिद्वार)
उपेन्द्र सिंह (दिल्ली)
अर्चना राज चौबे (नागपुर)
निधि मिथिल (सतारा)
अतुल शर्मा (मेरठ)

कार्यालय प्रमुख
तन्मय त्यागी

भुगतान करें
Ac. Name - OPEN DOOR
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK
Branch- NAJIBABAD
AC- 368602000000245
IFSC- IOBA0003686
PAN- AABAO7251R

वैधानिक-समाचार-पत्र में प्रकाशित किसी भी सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी लेख/समाचार/कविता/कहानी/विज्ञापन आदि के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र नजीबाबाद होगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमन कुमार द्वारा आशीष प्रिंटर्स, मोहल्ला मकबरा, नजीबाबाद से मुद्रित तथा ए-७, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-२४६७६३ ज़िला बिजनौर (उ.प्र.) से प्रकाशित।
संपादक-अमन कुमार
मोबाईल नं.- 9897742814
E-Mail- opendoornbd@gmail.com
RNI-UPHIN/2021/79954

संपादकीय कार्यालय
साई एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद- २४६७६३ बिजनौर (उप्र)
सदस्यता प्राप्त करें
एक साल १००० रुपए, दो साल १९०० रुपए पांच साल ४९०० रुपए
अंक की हार्ड कॉपी कम पड़ जाने की दशा में पीडीएफ मिलेगी

अतिथि का पन्ना

चरमपंथियों से सावधान ब्रिटेन

कट्टरवाद और उससे पैदा होने वाली हिंसा इक्कीसवीं सदी की दुनिया की सबसे बड़ी और साझा समस्या है। इसके बावजूद कुछ देश जानबूझ कर कट्टरवाद की आग को हवा देने से बाज नहीं आते। पाकिस्तान ऐसे देशों में अग्रणी है। उसकी जर्जर आर्थिक हालत किसी से छिपी नहीं, पर उसका इलाज खोजने के बजाय पाकिस्तानी हुकूमत कश्मीर पर भड़काऊ बयानबाजी में ज़्यादा रुचि रखती है। इस बयानबाजी की आँच ब्रिटेन तक भी महसूस की जा रही है। यही वजह है कि ब्रिटेन सरकार ने आतंकवाद को रोकने के लिए बनाई गई योजना की समीक्षा के दौरान इस्लामी चरमपंथ को देश के लिए बड़ा खतरा बताया है।

समीक्षा में सिफारिश की गई है कि ब्रिटेन को इसे प्राथमिक खतरा मानते हुए निपटने की योजना बनानी चाहिए। इसके अलावा अन्य क्षेत्रों को लेकर भी चिंता जाहिर की गई है, जिसमें कट्टरवाद भी शामिल है। समीक्षा में कश्मीर मसले पर ब्रिटेन के मुसलमानों और खालिस्तान समर्थक उग्रवादियों को लेकर गहरी चिंता प्रकट की गई है। इस समीक्षा रिपोर्ट में यह चेतावनी भी शामिल है कि कश्मीर को लेकर पाकिस्तान की बयानबाजी ब्रिटेन के मुस्लिम समुदायों को प्रभावित कर रही है और उनमें भारत विरोधी भावनाएँ भड़काने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अलावा ब्रिटेन में सक्रिय खालिस्तान समर्थक समूहों द्वारा प्रसारित किए जा रहे भारत विरोधी झूठ के खिलाफ भी चेतावनी दी गई है। कहना न होगा कि अगर भारत के खिलाफ मुस्लिम और सिख उग्रवाद ब्रिटेन की जमीन में सुगबुगा रहा है तो इसका असर भारत और ब्रिटेन के रिश्तों पर भी विपरीत असर डाल सकता है। खुद ब्रिटेन भी इस समय उत्तर कोरोना काल की मंदी और महँगाई से हलकान है। ऐसे में वह नहीं चाहेगा कि उसकी जमीन से उठकर आतंक की चिंगारी भारत के आँगन में आ गिरे। इसलिए सुनक सरकार का इस रिपोर्ट को गंभीरता से लेना स्वाभाविक है कि वहाँ इस बात के सबूत मिले हैं कि ये चरमपंथी समूह हिंसा फैलाने का आह्वान कर रहे हैं। कहा गया है कि ब्रिटेन में एक पाकिस्तानी मौलवी को कश्मीर में हिंसा के प्रयोग का आह्वान करते हुए देखा गया है। यह भी याद दिलाया गया है कि ब्रिटेन में ऐसे आतंकवाद के अपराधों के दोषी भी विद्यमान हैं, जिन्होंने अतीत कश्मीर में हिंसा की थी। बाद में वे अल-कायदा में शामिल हो गए। साथ ही यह भी कि ब्रिटेन के सिख समुदाय में मौजूद खालिस्तान समर्थक चरमपंथ के प्रति भी सावधान रहना चाहिए। यह सचमुच खतरनाक है कि ब्रिटेन में सक्रिय कुछ खालिस्तान समर्थक समूह यह झूठ फैलाने में लगे हुए हैं कि ब्रिटेन की सरकार सिखों को सताने के लिए भारत की सरकार के साथ मिलीभगत कर रही है! कहना न होगा कि ऐसे झूठे प्रचार का इस्तेमाल लोगों को भड़काने और हिंसा पैदा करने के लिए किया जाता है। यही वजह है कि सुनक सरकार इस रिपोर्ट की सिफारिशों को तेजी से लागू करना चाहेगी ताकि चरमपंथ की रोकथाम की जा सके। जाहिर है कि इसके लिए इन संगठनों के पाकिस्तान से जुड़े तार भी काटने होंगे।

कहना न होगा कि इस रिपोर्ट से ब्रिटेन सहित उन सब देशों की आँख खुलनी चाहिए जो भारत में कट्टरपंथियों और आतंकवादियों के आपराधिक और हिंसक कुकृत्यों की ओर से यह कह कर आँख फेरते रहे हैं कि यह तो भारत का निजी मामला है। इसी आधार पर वे आतंकवाद की फैक्टरी पाकिस्तान के प्रति नरम ही नहीं बल्कि प्रेमपूर्ण भी बने रहे हैं। अब जबकि आग खुद उनके परों में लगती महसूस हो रही है, उन्हें सँभल जाना चाहिए और आतंक के खिलाफ भारत की लड़ाई में खुल कर साथ आना चाहिए। ०००

प्रो. ऋषभ देव शर्मा
rishabhadeosharma@yahoo.com

‘शोधादर्श’ के प्रो. ऋषभदेव शर्मा पर आधारित ‘प्रेम बना रहे’ विशेषांक का विमोचन संपन्न

महान हिंदी गजलकार दुष्यंत कुमार के भतीजे अतुल त्यागी ने किया ‘प्रो. ऋषभदेव शर्मा विशेषांक’ का लोकार्पण

नजीबाबाद। प्रतिष्ठित शोध पत्रिका ‘शोधादर्श’ के ‘प्रो. ऋषभदेव शर्मा विशेषांक’ के विमोचन समारोह का आयोजन आदर्श नगर में किया गया। अंचल के साहित्यकारों, पत्रकारों और कवियों ने इस मौके पर प्रोफेसर ऋषभदेव शर्मा के साहित्यिक सफर को अपने शब्दों के माध्यम से प्रदर्शित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता हरिद्वार से पधारे डॉ. सुशील कुमार त्यागी ने की। उन्होंने स्वस्ति वाचन और सरस्वती वंदना से समारोह का शुभारंभ किया। प्रो. ऋषभदेव शर्मा, डॉ. सुशील कुमार त्यागी, डॉ.ओपी सिंह एवं डॉ. संजय त्यागी को अंगवस्त्र ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। हिंदी गजल के पितामह प्रसिद्ध साहित्यकार दुष्यंत कुमार के भतीजे अतुल कुमार त्यागी ने प्रोफेसर ऋषभदेव शर्मा को समर्पित ‘शोधादर्श -प्रेम बना रहे - विशेषांक’ का विमोचन किया।

इस अवसर पर प्रमुख वक्ता डॉ. ओपी सिंह ने कहा कि प्रो. ऋषभदेव शर्मा न सिर्फ हिंदी सहित्य की सेवा कर रहे हैं, बल्कि सुदूरवर्ती दक्षिण भारत में हिंदी भाषा के सम्मान के लिए उसका प्रचार-प्रसार भी कर रहे हैं। आभासी माध्यम से जुड़े प्रो. गोपाल शर्मा, डॉ. मंजु शर्मा, संयुक्त संपादक डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा, डॉ. एन. लक्ष्मी ‘प्रिया’, डॉ. शिवकुमार राजौरिया और अतिथि संपादक डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह ने कवि-समीक्षक ऋषभदेव शर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व पर संक्षिप्त चर्चा की और उन पर केंद्रित विशेषांक के लिए शोधादर्श-परिवार को बधाई दी।

पत्रिका संपादक अमन कुमार त्यागी ने बताया कि लोकार्पित विशेषांक में ६६ शोधपूर्ण आलेख और संस्मरण शामिल हैं। इन्हें ४ खंडों में रखा गया है, जिनके शीर्षक क्रमशः ‘आँखिन की देखी’, ‘कागद की लेखी’, ‘गहरे पानी पैठ’ और ‘चकमक में आग’ हैं। पाँचवें खंड ‘कबहूँ न जाइ खुमार’ में ऋषभदेव की दपप्रतिनिधि ५१ कविताएँ तथा ३२ मुक्तक शामिल हैं।

विशेषांक की प्रथम प्रति स्वीकार करते हुए प्रो. ऋषभदेव शर्मा ने कहा कि मैं अपने प्रति यह सम्मान देख कर कृतज्ञता का अनुभव कर रहा हूँ। उन्होंने अपनी कई रचनाओं का वाचन भी किया। इस अवसर पर सौरभ भारद्वाज, आलोक त्यागी, डा. बेगराज यादव, डा. संजय त्यागी, पुनीत गोयल, गोविंद बौद्ध, डा. ओ०पी० सिंह, अतुल त्यागी, विश्वास द्विवेदी, सौरभ भारद्वाज, आचार्य सुरेन्द्र शर्मा, सुधीर राणा, आनंद विभोर यादव, वसीम अहमद, फारेहा इरम, अक्षि त्यागी, तन्मय त्यागी, मंजु त्यागी, रवीन्द्र कुमार, हर्षवर्धन,आदि उपस्थित रहे।

प्रस्तुति -
अक्षि त्यागी
उप संपादक ‘शोधादर्श’
नजीबाबाद - २४६७६३

‘शोधादर्श’ के प्रो. ऋषभदेव शर्मा पर आधारित ‘प्रेम बना रहे’ विशेषांक विमोचन के छायाचित्र

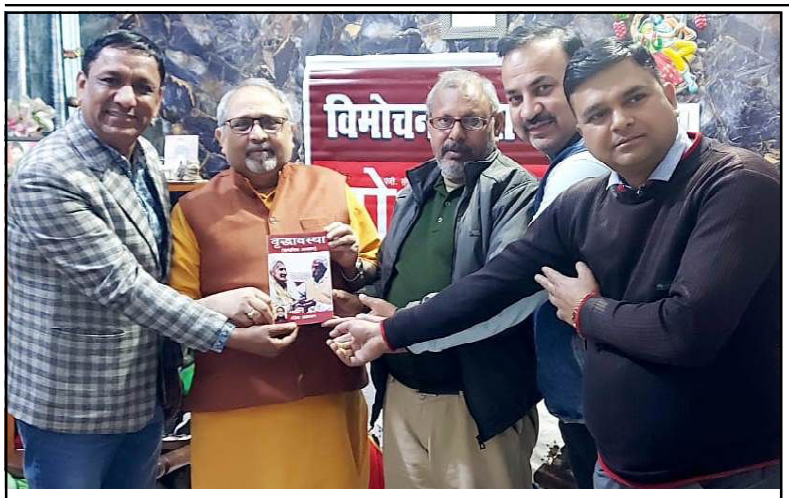

ओपन डोर प्रकाशन से प्रकाशित रश्मि अग्रवाल की पुस्तक 'वृद्धावस्था' एक सामाजिक अध्ययन सुधीर कुमार राण, अमन कुमार, डॉ. बेगराज और रविन्द्र कुमार ने प्रो. ऋषभदेव शर्मा को भेंट की। इस पुस्तक की भूमिका आप ही ने लिखी है।

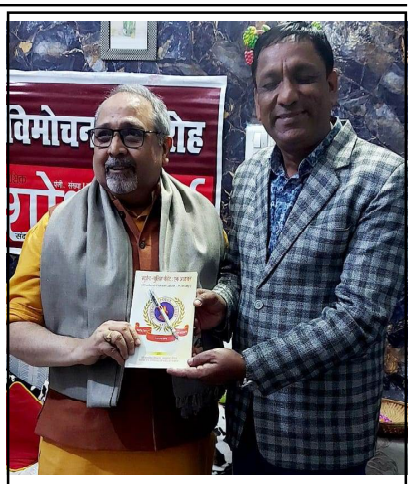

ओपन डोर प्रकाशन से प्रकाशित सुधीर कुमार राणा की पुस्तक 'स्टूडेंट पुलिस कैडेट' भी प्रो. ऋषभदेव को सुधीर कुमार राणा द्वारा भेंट की गई।

अर्चना राज की पुस्तक 'कुछ लम्स कुछ गिरहें अमलतास' का हुआ लोकार्पण

ओपन डोर प्रकाशन से प्रकाशित अर्चना राज की काव्य पुस्तक 'कुछ लम्स कुछ गिरहे अमलतास' का विमोचन हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान प्रो. ऋषभदेव शर्मा के कर कमलो द्वारा संपन्न हुआ। उन्होंने कहा पुस्तकें अच्छी होती हैं उन्हें पढ़ना और भी अच्छा होता है।

ओपन डोर के प्रकाशक अमन कुमार ने बताया कि यह काव्य पुस्तक एक सौ चार पृष्ठ की है जिसकी कीमत दौ सो रुपए है। इस पुस्तक में अर्चना राज की बेहतरीन कविताओं को संजोया गया है।

इस अवसर पर सौरभ भारद्वाज, आलोक त्यागी, डा. बेगराज यादव, डा. संजय त्यागी, पुनीत गोयल, गोविंद बौद्ध, डा. ओ.पी. सिंह, अतुल त्यागी, विश्वास द्विवेदी, सौरभ भारद्वाज, आचार्य सुरेन्द्र शर्मा, सुधीर राणा, आनंद विभोर यादव, वसीम अहमद, फारेहा इरम, अक्षि त्यागी, तन्मय त्यागी, मंजु त्यागी, रवीन्द्र कुमार, हर्षवर्धन आदि रहे।

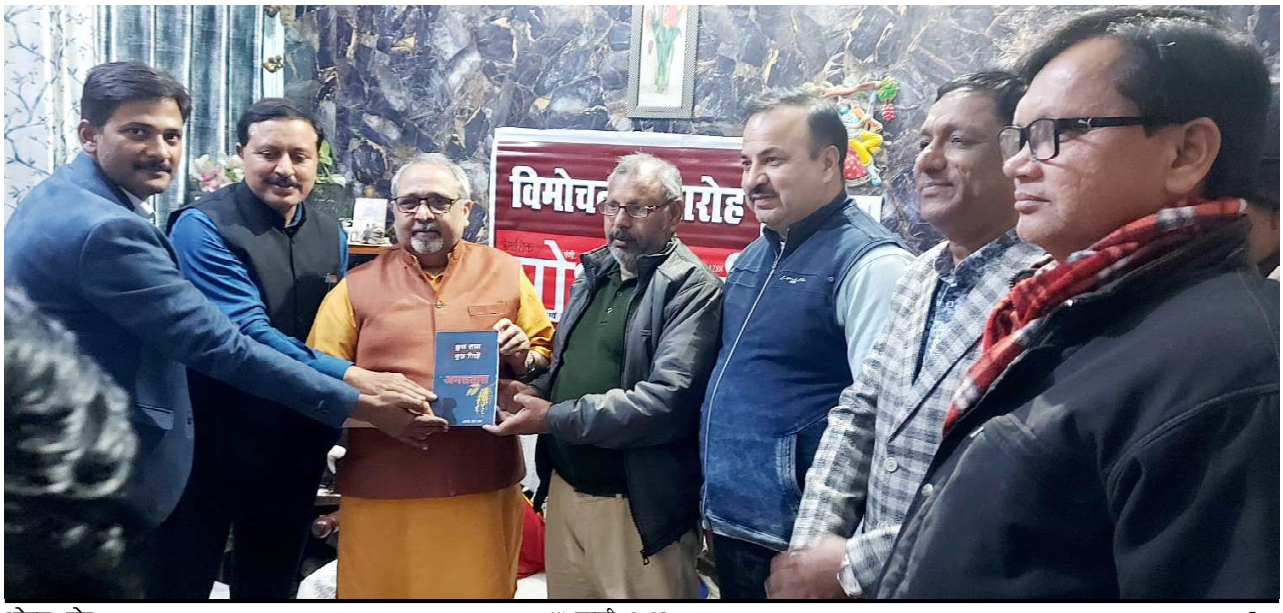

‘अकादमिक लेखन : शोध की नई प्रवृत्तियाँ’ पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

वर्तमान में भारत विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर - प्रो.ऋषभदेव शर्मा

बिजनौर। वर्धमान कॉलेज, बिजनौर (उत्तर प्रदेश) में ‘अकादमिक लेखन : शोध की नई प्रवृत्तियाँ’ विषय पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की शुरुआत माँ सरस्वती की वंदना और अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर इनॉग्रल सेशन का शुभारंभ किया गया। इसके पश्चात कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों को बालवृक्ष देकर उनका स्वागत किया गया। साथ ही महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर सी.एम. जैन ने संगोष्ठी में उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। साथ ही इस महत्त्वपूर्ण विषय की गंभीरता पर बात की। उन्होंने कहा कि इस तरह की संगोष्ठियों में शोधार्थियों और प्राध्यापकों को बढ़-चढ़ कर भाग लेना चाहिए, जिससे उनके रिसर्च की काबीलियत में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहे। इसके पश्चात संगोष्ठी की कॉर्डिनेटर डॉ. अलका साहू ने संगोष्ठी में सहयोग के लिए विभिन्न संस्थाओं का धन्यवाद ज्ञापित किया। संगोष्ठी के कन्वीनर डॉ. एस.के. शोन ने शोध पत्रिका में छपे शोधपत्रों और उनकी गुणवत्ता की बात की।

इसी क्रम में मुख्य अतिथि ने यूजीसी केयर लिस्टेड पत्रिका ‘शोध-दिशा’ के ४८४ पृष्ठीय दीर्घकाय विशेषांक का लोकार्पण किया। इस विशेषांक में इस संगोष्ठी के लिए प्राप्त ८१ शोधपत्र प्रकाशित किए गए हैं।

इसके पश्चात डॉ. शशि प्रभा ने संगोष्ठी के बीज वक्तव्य के लिए वर्धा से पधारे प्रोफेसर देवराज, डीन, अनुवाद विद्यापीठ, महात्मा गांधी हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा का परिचय-पाठ किया। ततपश्चात उन्होंने अपना गंभीर और सुलझा वक्तव्य देना शुरू किया। उन्होंने अपनी बात करते हुए कहा कि मैं भाषा का छोटा सा सिपाही हूँ। इसी क्रम में बोलते हुए उन्होंने कहा कि हमारा देश वैश्विक प्रौद्योगिकी, सांस्कृतिक पहचान आदि की धारा में एक साथ छलांग लगा रहा है। उन्होंने शोधार्थियों द्वारा उनके विषय चुनाव की पद्धति पर बात करते हुए नवाचार को अपनाने की सलाह दी।

इसी क्रम में डॉ. यशवेंद्र ढाका ने संगोष्ठी के मुख्य अतिथि के रूप में पधारे प्रो. ऋषभदेव शर्मा (पूर्व अध्यक्ष, पोस्टग्रेजुएट एन्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद) का परिचय-पाठ किया। प्रो. ऋषभदेव ने शोध की वर्तमान दशा और दिशा पर बात करते हुए भूमंडलीकरण के प्रभाव का मूल्यांकन किया। साथ ही विभिन्न विमर्शों पर शोध की प्रक्रिया और उपयोगिता पर बात की। उन्होंने बताया कि वर्तमान में पूरा भारत अपनी कर्मठता और क्रियाशीलता से विश्वगुरु बनने की प्रक्रिया में लगा हुआ है। उन्होंने आगे कहा कि शोधार्थियों को भी अपने शोध की गुणवत्ता का ध्यान रखते हुए देश की प्रगति में अपना योगदान देना

चाहिए।

इनॉग्रल सेशन के बाद विभिन्न तकनीकी सत्रों का आयोजन हुआ, जिसमें प्रतिभागियों ने अपने शोधपत्रों का वाचन किया।

संगोष्ठी का सफल मंच संचालन ऑर्गेनाइजिंग सेक्रेटरी डॉ. अन्जू बंसल द्वारा किया गया।

दूसरे दिन संगोष्ठी के चतुर्थ टेक्निकल सेशन में चेयरपर्सन के रूप में अलवर से पधारे प्रोफेसर राजीव जैन, डीन, सनराइज यूनिवर्सिटी, अलवर और को-चेयरपर्सन डॉ. राजीव जौहरी, डीन, फैकेल्टी ऑफ साइंस, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर शामिल हुए। इस सेशन में विभिन्न शोधार्थियों ने ऑनलाइन तथा ऑफलाइन माध्यम से अपने शोधपत्रों का वाचन किया। कार्यक्रम की शुरूआत में अतिथि वक्ता के रूप में डॉ. दीप्ति माहेश्वरी, एक्स डीन, रवींद्रनाथ टैगोर, यूनिवर्सिटी, भोपाल ने रिसर्च मैथडोलॉजी : सेलेक्शन ऑफ टूल्स ऐंड टेक्निक्स विषय पर अपना सारगर्भित वक्तव्य ऑनलाइन माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने विषय पर बात करते हुए विभिन्न विषयों और उनमें प्रयोग की जाने वाली विभीन्न शोध-प्रविधियों पर सोदाहरण अपनी बात रखी।

इसके पश्चात आईआईटी कानपुर के विद्वान प्रोफेसर अरुण कुमार शर्मा, हेड एवं डीन, ह्यूमैनिटीज ऐंड सोशल साइंसेज ने हाउ टू राइट अ रिसर्च प्रपोजल पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने अपने विषय पर बोलते हुए कहा कि शोधार्थियों को सबसे पहले विषय का चुनाव किस प्रकार किया जाय, इस पर विचार करना चाहिए। तत्पश्चात यह देखना चाहिए कि उस विषय पर अभी तक कितना कार्य हो चुका है। साथ ही आप उसमें नया क्या करने वाले हैं और आपकी पद्धति वैज्ञानिक है अथवा नहीं। साथ ही आपके शोध में समाज के नैतिक विषयों को उठाया जा रहा है अथवा नहीं। इन सभी संस्तरणों पर शोधार्थियों को क्रमवार विचार करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। प्रोफेसर शर्मा के बारे में जब श्रोताओं को पता चला कि आप वर्धमान कॉलेज के पूर्व छात्र रहे हैं, तो पूरा सभागार तालियों से गूँज उठा।

अगले सत्र में विभिन्न शोधार्थियों द्वारा शोधपत्रों का वाचन किया गया, जिनमें प्रवीण कुमार, अनमत खान आदि ने शोधप्रविधि पर अपनी बात रखी। इस टैक्निकल सत्र का मंच संचालन डॉ. मेघना अरोड़ा द्वारा किया गया।

इसके पश्चात षष्ठ टैक्निकल सत्र की शुरुआत हुई, जिसके चेयरपर्सन डॉ. जी.आर. गुप्ता, पूर्व प्राचार्य, वर्धमान कॉलेज और को-चेयरपर्सन डॉ.

एस.के. गुप्ता, डीन, फैकेल्टी ऑफ कॉमर्स, वर्धमान कॉलेज रहे।

इस सत्र में अतिथि वक्ता के रूप में प्रोफेसर एस. के. यादव, एनसीईआरटी,नई दिल्ली और डॉ. भावना जौहरी, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट आगरा ने संगोष्ठी के विषय पर अपना महत्त्वपूर्ण वक्तव्य दिया। साथ ही शोधार्थियों व प्राध्यापकों ने भी अपने शोधपत्र पढ़े।

अंत में इस संगोष्ठी का समापन सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र की शुरुआत अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर की गई। इसके पश्चात संगोष्ठी के कन्वीनर डॉ. एस.के. शोन ने अतिथियों का स्वागत किया। कॉर्डिनेटर डॉ. अलका साहू ने पूरे दो दिनों तक चले इस आयोजन का रिपोर्ट प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात दिल्ली विश्वविद्यालय से विशेष अतिथि के रूप में पधारे प्रोफेसर पूरन चंद टण्डन ने इस संगोष्ठी के विषय की महत्ता पर बात करते हुए कहा कि यह विषय प्रत्येक शोधार्थी व शैक्षिक कर्तृतव्य में लगे प्राध्यापकों के लिए आवश्यक है, जिनका सीधा सम्बन्ध विद्यार्थियों के साथ संप्रेषण व अध्यापन के माध्यम से होता है। आपने शोध-पद्धति से सम्बंधित ज्ञान के विस्तार को आवश्यक बताया।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में साउथ एशियन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली से पधारे प्रोफेसर पंकज जैन ने साइंस विषयों में अपनाई जाने वाली शोधप्रविधि का उल्लेख करते हुए इस संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए आयोजन समिति को बधाई दी। आपने कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से शिक्षण संस्थाओं में शोध-प्रक्रिया को बल मिलता है।

प्रो. देवराज में समाकलन वक्तव्य दिया और प्रोफेसर ऋषभदेव शर्मा ने संगोष्ठों का मूल्यांकन करते हुए टिप्पणी की। दोनों ने ही इस बात पर जोर दिया कि शोध-पद्धति के हर एक सोपान पर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में अलग-अलग कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए।

संगोष्ठी की ऑर्गेनाइजिंग सेक्रेटरी डॉ. अन्जू बंसल द्वारा अतिथियों के माध्यम से सर्टिफिकेट वितरण का कार्य पूर्ण किया गया। इसी क्रम में डॉ. सी.एस. शुक्ला, पूर्व विभागाध्यक्ष, बीएड विभाग की दो पुस्तकों, क्रमशः भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षाविद व शिक्षा मनोविज्ञान का अतिथि विद्वानों द्वारा विमोचन किया गया।

अंत में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर सी.एम. जैन द्वारा सभी अतिथियों व संगोष्ठी प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। समापन सत्र का सफल संचालन डॉ. यशवेंद्र ढाका द्वारा किया गया।

इस अवसर पर विभिन्न प्रदेशों और शहरों से पधारे प्रतिभागियों व शोधार्थियों के अलावा शोध के इच्छुक विद्यार्थीगण भी उपस्थित रहे। साथ ही महाविद्यालय के प्राध्यापकगणों में डॉ. रेणु शर्मा, डॉ. राजीव जौहरी, डॉ. सुनील अग्रवाल, डॉ. एस. के. जोशी, डॉ. ए.के.एस. राणा, डॉ. पूनम शर्मा, डॉ. संजय कुमार, डॉ. टी.एन. सूर्या, डॉ. धर्मेंद्र कुमार, डॉ. पदमश्री, डॉ. जे.के. विश्वकर्मा, डॉ. शशि प्रभा, डॉ. प्रीति खन्ना, डॉ. राजेश यादव, डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. नीरज कुमार, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. वैशाली पूनिया, डॉ. सुरभि सिंघल, डॉ. निदा खान, डॉ. राजीव अग्रवाल, डॉ. धर्मेंद्र यादव, डॉ. दिव्या जैन, मौ. साबिर, डॉ. पंकज भटनागर, श्री विकास, डॉ. सोनल शुक्ला, डॉ. अवनीश अरोड़ा, डॉ. विपिन देशवाल, डॉ. चारुदत्त आर्य, डॉ. दुर्गा जैन, डॉ. काकरान, श्री प्रशांत आहलूवालिया, डॉ. राहुल, डॉ. प्रतिभा, डॉ. अनामिका, डॉ. ओ.पी. सिंह आदि शामिल रहे।

प्रस्तुति- डॉ. अंजु बंसल
वर्धमान कॉलेज, बिजनौर।

तुर्किये और सीरिया में भूकंप से भारत को सबक लेना चाहिए

अमन कुमार

धरती करवट बदल रही है। ऐसा तब कहा जाता है जब भूकंप आता है। ऐसी ही करवट तब बदली जब तुर्किये और सीरिया में ६ फरवरी को ७.८ की तीव्रता का शक्तिशाली भूकम्प आया और ऐसा महाविनाश हुआ कि हजारों जान लील गया। तुर्किये में उसकी भौगोलिक स्थिति के कारण अक्सर भूकम्प आते रहते हैं, इसके बावजूद वहां बनाई गई बहुमंजिला इमारतें इस बात की गवाही हैं कि वहां के लोगों को भूकम्प का कोई डर नहीं था। जबकि १९९९ में आए भूकम्प से १८ हजार से अधिक लोगों की जान चली गई थी। भारत के विभिन्न हिस्सों में भी भूकम्प के झटके लग रहे हैं। जिसके चलते यहां भी चिंता हो रही है कि तुर्किये और सीरीया जैसी भयानक तबाही न आ जाए। आईआईटी कानपुर के वैज्ञानिकों का तो मानना है कि भारत में भी तुर्किये जैसे ही तेज भूकम्प के झटके लग सकते हैं। इनका मानना है कि आने वाले

एक-दो वर्षों में या एक-दो दशक में कभी भी भारत के कुछ हिस्सों में ७.५ से भी अधिक तीव्रता से भूकम्प आ सकता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि हमारे देश में विशेष रूप से दिल्ली और उसके आसपास का क्षेत्र भूकम्प जोखिम पर है, जहां बार-बार भूकम्प के झटके लग रहे हैं। ५ जनवरी की रात को ५.६ तीव्रता के भूकम्प के झटके अनुभव किए गए थे। ३ फरवरी की रात ३.२ तीव्रता के भूकम्प के झटके अनुभव किए गए थे। जबकि २४ जनवरी की दोपहर को कुछ राज्यों में रिक्टर स्केल पर ५.८ तीव्रता के भूकम्प के तेज झटके अनुभव किए गए थे। बीते वर्ष नवम्बर में दिल्ली-एनसीआर में दो बार ऐसे भूकम्प भी आए, जिनकी तीव्रता रिक्टर स्केल पर ६.३ मापी गयी थी। जिसके झटके उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड सहित कई राज्यों के अलावा चीन और नेपाल तक अनुभव किए गए थे।

बार-बार आ रहे इन भूकम्पों से राहत के इन्तजाम भारत सरकार को पहले ही कर लेने चाहिए। बड़ी-बड़ी इमारतों के लिए भी नियम कड़े और भूकम्परोधी बनाए जाने चाहिए। प्रकृति की करवट से डरना चाहिए।

यह डर दिल्ली और एनसीआर में लगातार लग रहे भूकम्प के झटकों से तुर्किये का हाल देखकर भयभीत है। भूकम्प के खतरे को देखते हुए देश को पांच जोन में बांटा गया है। सर्वाधिक खतरनाक सिस्मिक जोन ५ है। दिल्ली और आस-पास का क्षेत्र सिस्मिक जोन ४ में आता है। हिमालयी बेल्ट को सिस्मिक जोन ५ में रखा गया है जिसका खतरा भी दिल्ली और आस-पास में बना हुआ है। यहां कभी भी ८ तीव्रता वाला भूकम्प भी आ सकता है। हालांकि भूकम्प का पूर्वानुमान लगाना संभव नहीं है। परन्तु दिल्ली में बार-बार अनुभव किए जा रहे भूकम्प के झटकों से सबक लिया जा सकता है। और नुकसान से बचने की तैयारियां कर लेनी चाहिए।

दिल्ली हाईकोर्ट ने दिल्ली सरकार, डीडीए, एमसीडी, दिल्ली छावनी परिषद, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद को नोटिस जारी कर, पूछा था कि तेज भूकम्प आने पर लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं? हाईकोर्ट का कहना था कि भूकम्प जैसी विपदा से निपटने के लिए ठोस योजना बनाने की आवश्यकता है क्योंकि भूकम्प से लाखों लोगों की जान जा सकती है।

राजनाथ का चीन पर निशाना, बोले- सहायता चाहने वाले देशों को उपदेश देने में विश्वास नहीं करता भारत

उन्होंने कहा कि संकट ने एक बार फिर इस बात को रेखांकित किया कि हम सभी एक ही नाव में सवार हैं और हम या तो एक साथ डूबते हैं या एक साथ तैरते हैं।

बेंगलुरु। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार कोकहा कि भारत जरूरतमंद देशों को उपदेश या पूर्व निर्धारित समाधान देने में विश्वास नहीं करता है और यह मानता है कि बेहतर सैन्य शक्ति वाले देशों को दूसरों पर अपने समाधान थोपने का अधिकार नहीं है। उनके यह बयान स्पष्ट तौर पर चीन के आक्रामक व्यवहार के संदर्भ में था। एयरो इंडिया में लगभग ३० देशों के अपने समकक्षों और उप रक्षा मंत्रियों को संबोधित करते हुए सिंह ने कहा कि भारत हमेशा एक नियम-आधारित वैश्विक व्यवस्था के लिए खड़ा रहा है जिसमें सभी संप्रभु राष्ट्रों के बीच सही होने की संभावना की मौलिक प्रवृत्ति को निष्पक्षता, सम्मान और समानता से प्रतिस्थापित किया जाता है। सिंह ने चीन या किसी अन्य देश का नाम लिए बिना कहा कि समस्याओं को हल करने के लिए ऊपर से आदेश देने (टॉप डाउन अप्रोच) की अवधारणा कभी टिकाऊ नहीं रही है, अक्सर यह कर्ज के जाल, स्थानीय आबादी की ओर से प्रतिक्रिया तथा संघर्ष की ओर जाती है।

'टॉप डाउन अप्रोच' एक ऐसी रणनीति है जिसमें निर्णय लेने की प्रक्रिया उच्चतम स्तर पर होती है और फिर शेष टीम को उस फैसले के बारे में बताया जाता है। सामूहिक दृष्टिकोण पर भारत की तवज्जो का उल्लेख करते हुए सिंह ने कहा कि कैसे कोविड-१९ महामारी एक देश में उत्पन्न हुई और कैसे कुछ ही समय में इसने पूरी दुनिया पर विनाशकारी प्रभाव डाला। उन्होंने कहा कि संकट ने एक बार फिर इस बात को रेखांकित किया कि हम सभी एक ही नाव में सवार हैं और हम या तो एक साथ डूबते हैं या एक साथ तैरते हैं। एसपीईईडी (शेयर्ड प्रॉस्पेरिटी : एनहेंस्ड एंगेजमेंट्स इन डिफेंस) शीर्षक वाले सम्मेलन में सिंह ने आतंकवाद जैसी चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए एकजुट प्रयासों का भी आह्वान किया और कहा कि राष्ट्रों के समग्र विकास और समृद्धि के लिए सामूहिक सुरक्षा अनिवार्य शर्त बन गई है।

सिंह ने सुरक्षा खतरों का मुकाबला करने के लिए नई रणनीतियों को तैयार करने की आवश्यकता को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि भारत पुराने पितृसत्तात्मक या नव-उपनिवेशवादी प्रतिमानों में इस तरह के सुरक्षा मुद्दों से निपटने में विश्वास नहीं करता है। उन्होंने कहा, हम सभी देशों को समान भागीदार मानते हैं। इसलिए, हम किसी देश की आंतरिक समस्याओं के लिए बाहरी या 'सुपर नेशनल' समाधान थोपने में विश्वास नहीं करते हैं। उन्होंने कहा, हम धर्मोपदेश या पहले से निर्धारित ऐसे समाधान देने में विश्वास नहीं करते हैं जो सहायता चाहने वाले देशों के राष्ट्रीय मूल्यों और बाधाओं का सम्मान नहीं करते हैं। इसके बजाय हम अपने सहयोगी देशों की क्षमता निर्माण का समर्थन करते हैं ताकि वे अपनी नियति खुद तय कर सकें। सिंह ने कहा, ऐसे राष्ट्र हैं जो दूसरों की तुलना में समृद्ध, सैन्य या तकनीकी रूप से अधिक उन्नत हैं, लेकिन यह उन्हें इस बात का अधिकार नहीं देता कि वे मदद चाहने वाले राष्ट्रों पर अपने समाधान थोपें। उनकी टिप्पणी हिंद-प्रशांत, अफ्रीका और भारत के पड़ोस में सैन्य प्रभाव बढ़ाने के चीन के बढ़ते प्रयासों की पृष्ठभूमि में आई है।

बीबीसी पर कार्रवाई को अघोषित आपातकाल कहने वाले बताएं कि देश में घोषित आपातकाल किसने लगाया था?

आयकर विभाग के सूत्रों का कहना है कि दिल्ली और मुंबई में बीबीसी के कार्यालयों में आयकर अधिकारियों के पहुंचने के साथ ही सुबह ११ बजे अचानक से यह कार्रवाई शुरू हुई। उन्होंने कहा कि बीबीसी के कर्मचारियों को परिसर के अंदर एक विशेष स्थान पर अपने फोन रखने के लिए कहा गया था। उन्होंने कहा कि विभाग, लंदन मुख्यालय वाले सार्वजनिक प्रसारक और उसकी भारतीय शाखा के कारोबारी संचालन से जुड़े दस्तावेजों पर गौर कर रहा है।

देश में ऐसे कई राजनेता और संस्थाएं हैं जो लोकतंत्र और मानवाधिकारों की बात तो करते हैं लेकिन इन मुद्दों के प्रति दोहरा रवैया रखते हैं। यह लोग मीडिया स्वतंत्रता की बात करते हैं लेकिन मीडिया पर सर्वाधिक हमले भी यही लोग करते हैं। आज बीबीसी पर आयकर विभाग ने कार्रवाई की तो जैसे पूरा टूलकिट गैंग ही परेशान हो गया। कांग्रेस आग बबूला हो गयी। पार्टी ने कह दिया कि यह अघोषित आपातकाल है। यहां कांग्रेस से पूछा जाना चाहिए कि वह उस पार्टी का नाम बताये जिसने देश में घोषित आपातकाल लगाया था। देश में आपातकाल लगा कर जनता पर अत्याचार का मजा लूटने वाले भला क्या जानेंगे कि आपातकाल क्या होता है। यदि बीबीसी पर मोदी सरकार की कार्रवाई पर कांग्रेस को आपत्ति है तो वह बताए कि इंदिरा गांधी ने बीबीसी पर क्यों प्रतिबंध लगाया था?

बीबीसी पर आयकर विभाग की कार्रवाई पर जो लोग सवाल उठा रहे हैं उनसे पूछा जाना चाहिए कि क्या कर चोरी का मामला अगर है तो आयकर विभाग चुपचाप बैठा देखता रहे? इसके अलावा, बीबीसी के खिलाफ कार्रवाई के विरोध में जिस तरह एक साथ और एक समय पर कांग्रेस के नेताओं, वामपंथी दलों के नेताओं, आम आदमी पार्टी के नेताओं, तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा, पीडीपी प्रमुख महबूबा मुफ्ती और पत्रकारों के साथ होने वाले अन्याय को चुपचाप देखते रहने वाले एडिटर्स गिल्ड ने हमला बोला है, वह भी कई सवाल खड़े करता है। कमाल की बात यह है कि सबने एक लाइन पकड़ते हुए बीबीसी पर आयकर विभाग की कार्रवाई को मोदी संबंधी डॉक्यूमेंट्री से जोड़ दिया। देखा जाये तो देश में एक चलन-सा बनता जा रहा है कि जांच एजेंसियों की कार्रवाई को ही संदेह के घेरे में ला दिया जाये जिससे गुनाहगार को बचने का अवसर मिल जाये। आज जो लोग भारत की छवि खराब करने वाले बीबीसी के समर्थन में खड़े हो रहे हैं वह यह भी दर्शा रहे हैं कि उनकी मानसिकता अब भी औपनिवेशिक काल की ही है। वह यह भूल गये हैं कि अब ब्रिटिश राज नहीं है और वहां के संस्थानों के साथ खड़ा होने की कोई मजबूरी भी नहीं है। लेकिन मोदी विरोध में कुछ लोग कुछ भी करने के लिए तैयार हैं, भारत का विरोध करना पड़े तो संभवतः वह भी करने को तैयार हैं। जो लोग बीबीसी पर आयकर विभाग की कार्रवाई को गलत बता रहे हैं उन्हें पता होना चाहिए कि भारत में पहली बार किसी मीडिया संस्थान के खिलाफ आयकर विभाग की कार्रवाई नहीं हुई है। इससे पहले भी जिसने गलती की है उसके खिलाफ नियम सम्मत कार्रवाई हुई ही है।

ब्रिटेन के सार्वजनिक प्रसारक बीबीसी ने कहा है कि भारतीय आयकर विभाग के अधिकारी नयी दिल्ली और मुंबई स्थित उसके कार्यालयों में हैं तथा वह उनके साथ पूरा सहयोग कर रहा है। बीबीसी ने आयकर सर्वे के संबंध में अधिक विवरण नहीं दिया। बताया जा रहा है कि इस सर्वे के दौरान स्थानीय बीबीसी कर्मचारियों को कथित तौर पर कार्यालय परिसर में प्रवेश करने से रोका गया और उनके मोबाइल फोन बंद कर दिए गए।

आयकर विभाग के सूत्रों का कहना है कि दिल्ली और मुंबई में बीबीसी के कार्यालयों में आयकर अधिकारियों के पहुंचने के साथ ही सुबह ११ बजे अचानक से यह कार्रवाई शुरू हुई। उन्होंने कहा कि बीबीसी के कर्मचारियों को परिसर के अंदर एक विशेष स्थान पर अपने फोन रखने के लिए कहा गया था। उन्होंने कहा कि विभाग, लंदन मुख्यालय वाले सार्वजनिक प्रसारक और उसकी भारतीय शाखा के कारोबारी संचालन से जुड़े दस्तावेजों पर गौर कर रहा है। सूत्रों ने संकेत दिया कि जांच बीबीसी सहायक कंपनियों के अंतरराष्ट्रीय कराधान के मुद्दों से जुड़ी है। यह खबर फैलते ही मध्य दिल्ली के कस्तूरबा गांधी मार्ग स्थित बीबीसी कार्यालय के बाहर भारी संख्या में राहगीरों और मीडिया कर्मियों को देखा गया। मुंबई में बीबीसी का कार्यालय सांताक्रूज में है। हम आपको बता दें कि

सर्वे के तहत, आयकर विभाग केवल कंपनी के व्यावसायिक परिसर की ही जांच करता है और इसके प्रवर्तकों या निदेशकों के आवासों और अन्य स्थानों पर छापा नहीं मारता है।

बीबीसी पर आयकर छापों के बाद विपक्षी हमलों को गलत बताते हुए भाजपा ने बीबीसी को विश्व का सबसे ''भ्रष्ट बकवास कार्पोरेशन'' करार दिया और कहा कि इस मीडिया समूह के खिलाफ आयकर विभाग का जारी ''सर्वे ऑपरेशन'' नियमों और संविधान के तहत है। भाजपा ने बीबीसी पर भारत के खिलाफ 'जहरीली' रिपोर्टिंग करने का आरोप लगाया और कहा कि उसका दुष्प्रचार और कांग्रेस का एजेंडा साथ-साथ चलता है। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया ने संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए आयकर (आईटी) विभाग की कार्रवाई की कांग्रेस द्वारा की गई आलोचना की निंदा की और कहा कि सरकारी एजेंसी को अपना काम करने देना चाहिए। उन्होंने कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों को आड़े हाथ लेते हुए उन्हें याद दिलाया कि पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भी बीबीसी पर प्रतिबंध लगाया था। भाटिया ने कहा, ''बीबीसी के खिलाफ आयकर विभाग की कार्रवाई नियमानुसार और संविधान के तहत हो रही है।'' उन्होंने कहा कि भारत संविधान और कानून के तहत चलता है और आज केंद्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार है। उन्होंने कहा, ''आयकर विभाग पिंजरे का तोता नहीं है। वह अपना काम कर रहा है।'' भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि कोई भी एजेंसी हो, मीडिया समूह हो, अगर भारत में काम कर रहा है और अगर उसने कुछ गलत नहीं किया है तथा कानून का पालन किया है, तो फिर डर कैसा? उन्होंने आरोप लगाया कि बीबीसी में पत्रकारिता की आड़ में ''एजेंडा'' चलाया जाता है।

कांग्रेस ने कटाक्ष करते हुए कहा कि ''विनाशकाले विपरीत बुद्धि।'' पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने यह आरोप भी लगाया कि मोदी सरकार में प्रेस की स्वतंत्रता पर हमला हो रहा है। उन्होंने ट्वीट किया, ''मोदी सरकार में समय-समय पर प्रेस की स्वतंत्रता पर हमला होते रहा है। यह सब आलोचनात्मक आवाजों को दबाने के लिए किया गया है। यदि संस्थाओं का उपयोग विपक्ष और मीडिया को दबाने के लिए होगा, तो कोई भी लोकतंत्र नहीं बच सकता।'' खरगे ने कहा कि लोग सरकार के इस कदम का प्रतिरोध करेंगे। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने संवाददाताओं से कहा, 'हम अडाणी मामले में संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) जांच की मांग कर रहे हैं और सरकार बीबीसी के पीछे पड़ गई है। विनाशकाले विपरीत बुद्धि।'

ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन और सरकार आमने-सामने हैं। आयकर अधिकारियों ने अंतरराष्ट्रीय कराधान और स्थानांतरण मूल्य निर्धारण अनियमितताओं के आरोपों पर दिल्ली और मुंबई में बीबीसी कार्यालयों में सर्वेक्षण किया।

दूसरी ओर, तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा ने पूछा है कि क्या बीबीसी के कार्यालयों पर ''छापेमारी'' के बाद ''मिस्टर ए'' पर छापा मारा जाएगा? उन्होंने यह बात स्पष्ट तौर पर अडानी समूह के प्रमुख गौतम अडानी पर हमला बोलते हुए कही। टीएमसी सांसद ने सेबी और प्रवर्तन निदेशालय को टैग करते हुए एक ट्वीट में कहा, 'चूंकि एजेंसियां ये वैलेंटाइन डे 'सर्वे' कर रही हैं, ऐसे में आयकर विभाग और सेबी का सरकार के सबसे चहेते व्यक्ति 'मिस्टर ए' पर छापे के बारे में क्या कहना है?'

पीडीपी की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने कहा है कि मुंबई और दिल्ली में बीबीसी के कार्यालयों में आयकर विभाग का ''सर्वे अभियान'' केंद्र की भाजपा सरकार द्वारा ''आलोचकों को खुल्लमखुल्ला प्रताड़ित करना'' है। उन्होंने एक ट्वीट में कहा, ''बीबीसी कार्यालय पर छापों का कारण और प्रभाव काफी स्पष्ट है। भारत सरकार सच बोलने वालों को बेशर्मी से प्रताड़ित कर रही है। चाहे वह विपक्षी नेता हों, मीडिया हो, कार्यकर्ता हों या कोई और हो। सच्चाई के लिए लड़ने वाले को उसकी कीमत चुकानी पड़ती है।''

दूसरी ओर, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ने भारत में बीबीसी के दफ्तरों पर आयकर विभाग के 'छापे' को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधा और सवाल किया कि क्या भारत अब भी 'लोकतंत्र की जननी' है। माकपा महासचिव सीताराम येचुरी ने ट्वीट किया, ''पहले बीबीसी की डॉक्यूमेंट्री को प्रतिबंधित करो। अडाणी के मामले में जेपीसी/जांच पर कोई जांच नहीं। अब बीबीसी के कार्यालयों पर छापा। भारत : लोकतंत्र की जननी?'' भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सांसद विनय विश्वम ने कहा कि आयकर विभाग की यह कार्रवाई सच की आवाज को दबाने का प्रयास है।

आम आदमी पार्टी ने बीबीसी के कार्यालयों में आयकर विभाग के सर्वेक्षण अभियान को लेकर केंद्र पर निशाना साधा और कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 'तानाशाही के चरम' पर पहुंच गए हैं। आप के राष्ट्रीय प्रवक्ता और राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने आयकर विभाग के सर्वेक्षण पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए एक ट्वीट में कहा, 'मोदी जी, आप तानाशाही के चरम पर पहुंच गए हैं।' आप नेता ने कहा, ''पहले बीबीसी की डॉक्यूमेंटरी पर प्रतिबंध लगाया। अब इसके दफ्तरों पर छापेमारी. .मोदी जी मत भूलिए, हिटलर की तानाशाही भी खत्म हो गई। आपकी तानाशाही भी खत्म हो जाएगी।''

बीबीसी इंडिया के कार्यालयों में आयकर विभाग के सर्वे को लेकर गहरी चिंता जताते हुए एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया ने इसे सरकार की आलोचना करने वाले मीडिया संस्थानों को 'डराने और परेशान करने' के लिए सरकारी एजेंसियों के उपयोग की 'प्रवृत्ति' की निरंतरता करार दिया। एडिटर्स गिल्ड ने एक बयान जारी कर मांग की कि ऐसी सभी जांच में काफी सावधानी और संवेदनशीलता बरती जाए, जिससे पत्रकारों और मीडिया संगठनों के अधिकार कमजोर नहीं हों। गिल्ड ने अपनी पुरानी मांग को दोहराया कि सरकारें सुनिश्चित करें कि इस तरह की जांच निर्धारित नियमों के तहत हों और वे स्वतंत्र मीडिया को डराने के लिए उत्पीड़न के तरीकों में नहीं बदल जाएं।

ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन और सरकार आमने-सामने हैं। आयकर अधिकारियों ने अंतरराष्ट्रीय कराधान और स्थानांतरण मूल्य निर्धारण अनियमितताओं के आरोपों पर दिल्ली और मुंबई में बीबीसी कार्यालयों में सर्वेक्षण किया। विपक्षी नेताओं ने २००२ के गोधरा दंगों पर ब्रिटिश ब्रॉडकास्टर के हालिया डॉक्यूमेंट्री के खिलाफ इस सरकार की कार्रवाई की आलोचना की। इस साल जनवरी में बीबीसी द्वारा अपनी डॉक्यूमेंट्री जारी करने के बाद से अब तक जो कुछ हुआ है, वह सब यहां है।

१७ जनवरी, २०२३- बीबीसी ने २००२ के गोधरा दंगों के बाद हुए दंगों पर डॉक्यूमेंट्री - इंडिया : द मोदी क्वेश्चन रिलीज की, जिसमें तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली गुजरात सरकार की भूमिका की पड़ताल की गई है। इसे यूके में स्ट्रीमिंग के माध्यम से जारी किया गया, यह जल्द ही सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध था।

२१ जनवरी- सरकार ने आईटी नियम २०२१ के

नियम १६ के तहत आपातकालीन शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए डॉक्यूमेंट्री को ब्लॉक करने का आदेश जारी किया। यहां तक कि यूट्यूब और ट्विटर को भी डॉक्यूमेंट्री शेयर करना बंद करने का निर्देश दिया।

२२ जनवरी - ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने हाउस ऑफ कॉमन्स में अपने भारतीय समकक्ष का बचाव करते हुए कहा, 'मुझे यकीन नहीं है कि मैं विवादास्पद बीबीसी डॉक्यूमेंट्री में पीएम नरेंद्र मोदी के चरित्र चित्रण से सहमत हूं।'

२४ जनवरी - दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में छात्रों ने बीबीसी वृत्तचित्र की स्क्रीनिंग की योजना बनाई। पावर कट के बाद इसे मोबाइल फोन पर देखें। जेएनयू छात्र संघ के अध्यक्ष ने स्क्रीनिंग कार्यक्रम से पहले अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के सदस्यों द्वारा पथराव का आरोप लगाया।

२४ जनवरी - बीबीसी ने अपने विवादास्पद डॉक्यूमेंट्री का दूसरा भाग जारी किया, जिसमें २०१६ में मोदी सरकार के फिर से चुने जाने के बाद उनके प्रदर्शन को दिखाया गया। रिपोर्टों में कहा गया था कि डॉक्यूमेंट्री के इस संस्करण के लिए सरकार द्वारा कोई अवरोधन आदेश नहीं दिया गया था।

२६ जनवरी - स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) ने हैदराबाद विश्वविद्यालय परिसर में डॉक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग का आयोजन किया। एसएफआई का मुकाबला करने के लिए, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) ने 'द कश्मीर फाइल्स' फिल्में दिखाईं।

२७ जनवरी - कांग्रेस की केरल इकाई ने तिरुवनंतपुरम के शांघुमुगम समुद्र तट पर 'इंडिया : द मोदी क्वेश्चन' का सार्वजनिक प्रदर्शन किया।

३ फरवरीरू सुप्रीम कोर्ट ने २००२ के गोधरा दंगों पर ब्रॉडकास्टर की डॉक्यूमेंट्री पर प्रतिबंध लगाने के केंद्र के फैसले के खिलाफ कई याचिकाओं पर सरकार को नोटिस जारी किया।

१० फरवरी - सुप्रीम कोर्ट ने २००२ के गोधरा दंगों के डॉक्यूमेंट्री पर भारत में बीबीसी पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की मांग वाली याचिका को खारिज कर दिया।

१४ फरवरी - आयकर अधिकारियों ने अंतरराष्ट्रीय कराधान और स्थानांतरण मूल्य निर्धारण अनियमितताओं के आरोपों पर दिल्ली और मुंबई में बीबीसी कार्यालयों में सर्वेक्षण किया। विपक्षी नेताओं ने बीबीसी के खलिाफ आयकर विभाग की कार्रवाई की आलोचना की।

स्रोत- प्रभासाक्षी

बुलडोजर नीति सरकार की क्रूरता का चेहरा - राहुल

उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात के एक गांव में अतिक्रमण हटाओ अभियान के दौरान मां-बेटी की कथित तौर पर आत्मदाह करने के मामले में अब राजनीति तेज हो गई है। विपक्ष भाजपा की बुलडोजर नीति पर सवाल खड़े कर रहा है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भी उत्तर प्रदेश सरकार की नीति पर निशाना साधते हुए साफ तौर पर कहा है कि बुलडोजर नीति सरकार की क्रूरता का चेहरा बन गई है। अपने ट्वीट में उन्होंने कहा कि जब सत्ता का घमंड लोगों के जीने का अधिकार छीन ले, उसे तानाशाही कहते हैं। कानपुर की घटना से मन विचलित है। ये 'बुलडोजर नीति' इस सरकार की क्रूरता का चेहरा बन गई है। भारत को ये स्वीकार नहीं।

इस घटना को लेकर कांग्रेस की उत्तर प्रदेश प्रभारी प्रियंका गांधी ने कहा कि भाजपा सरकार के बुलडोजर पर लगा अमानवीयता का चश्मा इंसानियत व संवेदनशीलता के लिए खतरा बन चुका है। उन्होंने कहा कि कानपुर की हृदयविदारक घटना की जितनी निंदा की जाए उतनी कम है। हम सबको इस अमानवीयता के खिलाफ आवाज उठानी होगी। कानपुर के पीड़ित परिवार को न्याय मिले एवं दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने लिखा कि सत्ता के अहंकार की अग्नि ने एक परिवार को भस्म कर दिया। कानपुर नगर या कानपुर देहात ही नहीं पूरा उप्र भाजपा सरकार के अन्याय का शिकार हो रहा है।

कानपुर घटना को लेकर डिप्टी सीएम बृजेश पाठक ने कहा कि कानपुर देहात की घटना अत्यंत दुःखद है, प्रकरण की उच्च स्तरीय जाँच होगी और दोषियों के विरुद्ध कठोरतम कार्यवाही की जायेगी। किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जायेगा। सरकार पीड़ितों के साथ खड़ी है। गौरतलब है कि सोमवार शाम कानपुर देहात जिले के रूरा थाना इलाके के मडौली गांव में अतिक्रमण विरोधी अभियान के दौरान सोमवार को एक अधेड़ उम्र की महिला और उसकी बेटी ने कथित तौर पर अपनी झोपड़ी में खुद को आग लगा ली, जिससे दोनों की मौत हो गयी थी। इस मामले में उप जिलाधिकारी (एसडीएम), थानाध्यक्ष, चार लेखपालों, एक दर्जन से अधिक पुलिसकर्मियों सहित ३६ लोगों के खिलाफ मंगलवार को प्राथमिकी दर्ज की गयी है।

गरीब भी इनसान है, जनाब!

कई बार यह भी सुनने में आता है कि धन के पीछे अंधी दौड़ में पड़ने पर आज का आदमी ज़्यादा क्रूर होता जा रहा है। यानी, हम एक ऐसे मनोरोगी समाज का निर्माण कर रहे हैं जिसे धन ने पिशाच बना दिया है। शायद ऐसे लोगों को कानूनी सबक ही नहीं, मानसिक स्तर पर भी काउंसलिंग की सख्त जरूरत है, ताकि वे गरीब को भी अपने जैसा मनुष्य समझना सीख सकें।

प्रो. ऋषभदेव शर्मा

इक्कीसवीं सदी के लोकतांत्रिक भारतीय समाज में आए दिन रोंगटे खड़े कर देने वाली ऐसी घटनाएँ भी देखने- सुनने को मिलती रहती हैं, जिनसे लगता है कि क्या यह वही समाज है जिसने कभी दरिद्र को नारायण का दर्जा दिया था! पहले तो तेरह वर्षीय लड़की को घरेलू नौकर के रूप में रखना ही बाल शोषण होने के कारण गलत है, ऊपर से अगर मालिक-मालकिन उसे गर्म चिमटे से दाग दें, तो यह तो अमानवीय हुआ न? काश यह खबर सच न होती कि हरियाणा के गुरुग्राम में तेरह साल की नाबालिग को एक दंपति ने काम पर रखा और उस पर बेइंतहा जुल्म ढाए। डंडों से पीटा और उसके शरीर को गर्म चिमटे से दागा। यही नहीं, कई दिनों तक उसे खाना भी नहीं दिया जाता था। नाबालिग डस्टबिन से खाना उठाकर अपना पेट भरती रही बताया गया है कि आरोपी दंपति ने एक साल पहले अपने ३ महीने के बच्चे की देखभाल के लिए मूल रूप से झारखंड की रहने वाली इस नाबालिग लड़की को प्लेसमेंट एजेंसी के जरिये घर में रखा था। बाद में पति-पत्नी कभी खाना चुराने का आरोप लगाकर तो कभी काम ठीक से न करने की बात पर उसे पीटने लगे। उन्होंने उसे भूखा रख कर भी दंडित किया। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि बच्ची का यौन उत्पीड़न तो नहीं हुआ था।

इस तरह की घटनाएँ समाज में बढ़ती संवेदनहीनता की भी सूचक हैं। कहाँ तो शिक्षित और आत्मनिर्भर जोड़ों को दूसरों की तुलना में ज़्यादा आधुनिक चेतना से संपन्न होना चाहिए और अपने ही नहीं, दूसरों के भी मानवाधिकारों के प्रति जागरूक होना चाहिए, और कहाँ यह स्थिति कि वे सहज मानव सुलभ करुणा तक से दूर होते जा रहे हैं! इस मामले में दोनों आरोपी अच्छी कंपनी में काम करने वाले बताए जा रहे हैं। पति जीवन बीमा व्यवसाय में है और पत्नी जनसंचार के क्षेत्र में। इस लिहाज से उन्हें बाल श्रमिकों के अधिकारों और उनके सम्मान के बारे में जानकारी होनी चाहिए। लेकिन अपनी सारी शिक्षा और जानकारी को ताक पर रख कर उनके जैसे और भी बहुत से दंपति घरेलू नौकरानियों के साथ बद से बदतर सलूक करते पाए जाते हैं, तो यह सोचने के लिए मजबूर होना पड़ता है कि ऐसे लोग पैसे और स्वार्थ के लिए इस कदर अंधे हो जाते हैं कि न उन्हें उचित-अनुचित सूझता है, न पाप-पुण्य।

इसी तरह पिछले दिनों नोएडा की हाइराइज सोसाइटी में नौकरानी के साथ लिफ्ट में मारपीट और गला दबाने का मामला सामने आया था। घरेलू नौकरानी को बंधक बनाकर रखने, मारने-पीटने और उनके साथ दुष्कर्म की ये खबरें क्या समाज को विचलित नहीं करतीं? क्या गरीब होना इतना बड़ा अपराध है कि व्यक्ति का मनुष्य होने का हक भी निरस्त हो जाए? यदि ऐसा है तो कहना होगा कि समाज अभी तक बर्बरता के युग से बाहर नहीं निकला है। कई बार यह भी सुनने में आता है कि धन के पीछे अंधी दौड़ में पड़ने पर आज का आदमी ज़्यादा क्रूर होता जा रहा है। यानी, हम एक ऐसे मनोरोगी समाज का निर्माण कर रहे हैं जिसे धन ने पिशाच बना दिया है। शायद ऐसे लोगों को कानूनी सबक ही नहीं, मानसिक स्तर पर भी काउंसलिंग की सख्त जरूरत है, ताकि वे गरीब को भी अपने जैसा मनुष्य समझना सीख सकें।

अंततः यह भी जरूरी है कि जन प्रतिनिधि और सरकारें घरेलू कामगारों के मूल अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए समुचित व्यवस्था करें। आखिर वे भी तो इनसान हैं, गरीब हुए तो क्या!

भारत
INDIA
300
स्वामी सहजानंद सरस्वती
SWAMI SAHAJANAND SARASWATI
2000

वर्तमान क्यों नहीं गढ़ पा रहा स्वामी सहजानन्द सरस्वती जैसा किसानों का मसीहा?

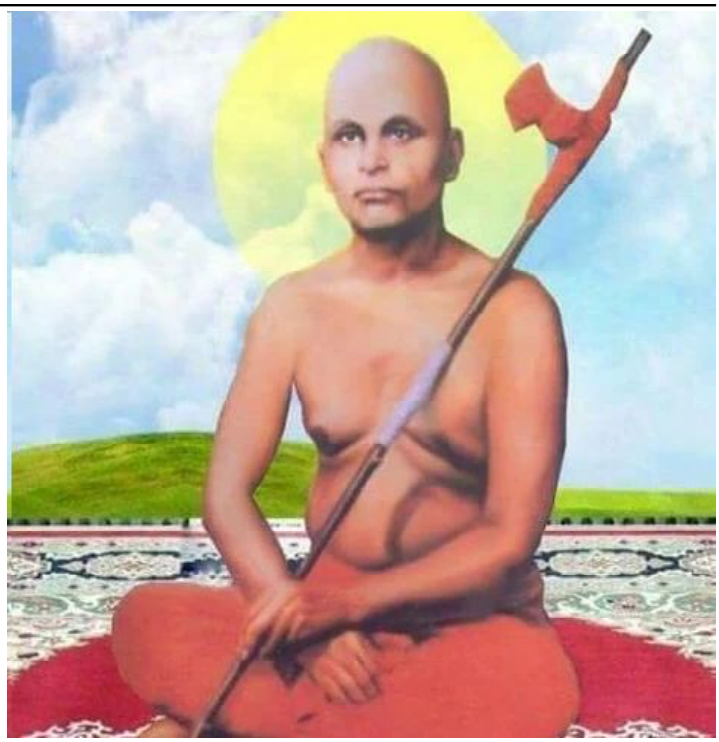

आज किसानों के एक बड़े वर्ग के लिए आरक्षण जरूरी है, लॉलीपॉप वाली योजनाएं पसंद हैं, जबकि कृषि अर्थव्यवस्था को हतोत्साहित करने वाले और किसानों का परोक्ष शोषण करने वाले कतिपय कानूनों का समग्र विरोध नहीं। यही वजह है कि खेतों को बिजली, बीज, खाद, पानी, मजदूरी और उचित समर्थन मूल्य दिए जाने के मामलों में निरन्तर लापरवाही दिखा रही सरकारों का कोई ठोस विरोध आजतक नहीं हो पाया है। निकट भविष्य में होगा भी नहीं, क्योंकि अब नेतृत्व के बिक जाने का प्रचलन बढ़ा है। सच कहा जाए तो मनरेगा ने 'गंवई हरामखोरी' को ऐसा बढ़ाया है कि कृषि मजदूरों का मन भी अपने पेशे से उचट चुका है जिससे शिक्षित किसानों के किसानी कार्य बहुत प्रभावित हो रहे हैं।

गोपाल जी राय

कहते हैं कि वर्तमान में ही इतिहास गढ़ा जाता है। लेकिन यह कैसी विडंबना है कि समकालीन वर्तमान अपने धवल अतीत को पुनः गढ़ पाने में असहाय प्रतीत होता है। यह कौन नहीं जानता कि अमूमन इतिहास खुद को दुहराता है, लेकिन स्वामी सहजानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व और कृतित्व अब तक अपवाद स्वरूप है। आगे क्या होगा भविष्य के गर्त में है, पर वर्तमान को उनकी याद सताती है। भले ही उनको गुजरे जमाने हो गए, फिर भी इतिहास खुद को दुहरा नहीं पाया! जबकि लोगबाग बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं किसी समतुल्य नायक का, जो उनकी जीवनधारा बदल दे। किसानी जीवन की सूखी नदी में दखल देने वाली व्यवस्था की रेत और छाड़न को किसी अग्रगामी चिंतनधारा से ऐसे लबालब भर दे कि पूंजीवाद और साम्यवाद के तटबंध बौने पड़ जाएं समाजवादी उमड़ती दरिया देख।

आप मानें या नहीं, लेकिन भारतीय राजनीति में जब भी किसानों की चर्चा होती है तो उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर पहली बार संगठित करने वाले दंडी स्वामी स्वामी सहजानन्द सरस्वती की याद बरबस आ जाती है। यदि यह कहा जाए कि स्वामी जी किसानों के पहले और अंतिम अखिल भारतीय नेता थे तो गलत नहीं होगा। दरअसल, वो पहले ऐसे किसान नेता थे जिन्होंने किसानों के सुलगते हुए सवालों को स्वर तो दिया, लेकिन उसके आधार पर कभी खुद को विधान सभा या संसद में भेजने की सियासी भीख आमलोगों से कभी नहीं मांगी। इसलिए वो अद्वितीय हैं और अग्रगण्य भी।

खासकर तब जब भारतीय किसानों की दशा और दिशा को लेकर हमारी संसद और विधान मंडलें गम्भीर नहीं हैं। त्रिस्तरीय पंचायती राज संस्थाएं भी अपने मूल उद्देश्यों से भटक चुकी हैं। ये तमाम संस्थाएं जनविरोधी पूंजीपतियों के हाथों की कठपुतली मात्र बनी हुई हैं। ये बातें तो किसानों की करती हैं, लेकिन इनके अधिकतर फैसले किसान विरोधी ही होते हैं। सम्भावित किसान विद्रोह से अपनी खाल बचाने के लिए इनलोगों ने किसानों को जाति-धर्म में इस कदर बांट रखा है कि वो अपने मूल एजेंडे से ही भटक चुके हैं। इसलिए उनकी आर्थिक बदहाली भी बढ़ी है। सच कहा जाए तो जबसे किसानों में आत्महत्या का प्रचलन बढ़ा है, तबसे स्थिति ज्यादा जटिल और विभत्स हो चुकी है। इसलिए स्वामी सहजानन्द सरस्वती की याद बार बार आती है।

स्वामी जी का सियासी कद नेहरू और गांधी जी के समतुल्य है। लेकिन उन्हें मृत्यु के उपरांत भारत रत्न से नवाजे जाने की जरूरत नहीं समझी गई। ऐसा इसलिए कि किसानों की आवाज जन्मजन्मांतर तक दबी रहे। वह उनके नाम पर भी आगे अंतस ऊर्जा नहीं प्राप्त कर सके। इस बात में कोई दो राय नहीं कि भारत में संगठित किसान आंदोलन को खड़ा करने का जैसा श्रेय स्वामी सहजानंद सरस्वती को मिला, बाद में उसका हकदार कोई दूसरा नेता नहीं बन सका। ऐसा इसलिए कि सेवा और त्याग स्वामी

जी का मूलमंत्र था। अब कोई भी इस मूलमंत्र को नहीं अपना पायेगा, क्योंकि कृषक समाज की प्राथमिकता बदल गई है।

आज किसानों के एक बड़े वर्ग के लिए आरक्षण जरूरी है, लॉलीपॉप वाली योजनाएं पसंद हैं, जबकि कृषि अर्थव्यवस्था को हतोत्साहित करने वाले और किसानों का परोक्ष शोषण करने वाले कतिपय कानूनों का समग्र विरोध नहीं। यही वजह है कि खेतों को बिजली, बीज, खाद, पानी, मजदूरी और उचित समर्थन मूल्य दिए जाने के मामलों में निरन्तर लापरवाही दिखा रही सरकारों का कोई ठोस विरोध आजतक नहीं हो पाया है। निकट भविष्य में होगा भी नहीं, क्योंकि अब नेतृत्व के बिक जाने का प्रचलन बढ़ा है। सच कहा जाए तो मनरेगा ने 'गंवई हरामखोरी' को ऐसा बढ़ाया है कि कृषि मजदूरों का मन भी अपने पेशे से उचट चुका है जिससे शिक्षित किसानों के किसानी कार्य बहुत प्रभावित हो रहे हैं। बावजूद इसके, इन ज्वलन्त सवालों को स्वर देने वाला कोई राष्ट्रीय नेता नहीं दिखता, बल्कि किसी अवसरवादी गठजोड़ की झलक जरूर मिलती है। वो भी एक दो संगठन नहीं, बल्कि दो-तीन सौ संगठन मिलकर किसान हित की बात को आगे बढ़ा रहे हैं या फिर अपनी सियासी रोटियां किसी अन्य दल के लिए सेंक रहे हैं, किसी के भी समझ में नहीं आता। इसलिए कहा जाता है कि स्वामी जी के बाद कोई ऐसा किसान नेता पैदा नहीं हुआ जो चुनावी राजनीति से दूर रहकर सिर्फ किसानों की ही बात करे। उनके भावी हितों-जरूरतों की ही चर्चा परिचर्चा करे और उन्हें आगे बढ़ाए।

कहने को तो आज प्रत्येक राजनीतिक दल में किसान संगठन हैं लेकिन किसान हित में उनकी भूमिका अल्प या फिर नगण्य है। इस स्थिति को बदले बिना कोई राष्ट्रीय किसान नेता पैदा होना सम्भव ही नहीं है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि दण्डी संन्यासी होने के बावजूद उन्होंने रोटी को भगवान कहा और किसानों को देवता से भी बढ़कर बताया। इससे किसानों को भी अपनी महत्ता का भी पता चला। किसानों के प्रति स्वामी जी इतने संवेदनशील थे कि तत्कालीन असह्य परिस्थितियों में उन्होंने स्पष्ट नारा दिया कि 'जो अन्न वस्त्र उपजाएगा, अब वो कानून बनाएगा। ये भारतवर्ष उसी का है, अब शासन वही चलाएगा।।'

निःसन्देह, स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने आजादी कम और गुलामी ज्यादा देखी थी। इसलिए काले अंग्रेजों से ज्यादा गोरे अंग्रेजों के खिलाफ मुखर रहे। समझा जाता है कि किसानों से मालगुजारी वसूलने की प्रक्रिया में जब उन्होंने सरकारी मुलाजिमों का आतंक और असभ्यता देखी तो किसानों की दबी आवाज को स्वर देते हुए कहा कि 'मालगुजारी अब नहीं भरेंगे, लट्ठ हमारा जिंदाबाद।' इतिहास साक्षी है कि किसानों के बीच यह नारा काफी लोकप्रिय रहा और ब्रिटिश सल्तनत की चूलें हिलाने में अधिक काम आया।

स्वामीजी का परिचय संक्षिप्त है, लेकिन व्यक्तित्व विराट। हालांकि परवर्ती जातिवादी किसान नेताओं और उनके दलों ने उनके व्यक्तित्व को वह मान-सम्मान नहीं दिया, जिसके वे असली हकदार हैं। यही वजह है कि किसान आंदोलन हमेशा लीक से भटक गया। समाजवादी और वामपंथी नेता इतने निखट्टू निकले की, उनलोगों ने किसान आंदोलन का गला ही घोंट किया। उनके बाद चौधरी चरण सिंह और महेंद्र टिकैत किसान नेता तो हुए, लेकिन किसी को अखिल भारतीय पहचान नहीं मिली, क्योंकि इनकी राष्ट्रीय पकड़ कभी विकसित ही नहीं हो पाई। दोनों पश्चिमी उत्तरप्रदेश में ही सिमट कर रह गए। किसान हित में कोई उल्लेखनीय उपलब्धि भी उनके खाते में नहीं रही।

(लेखक सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय अंतर्गत बीओसी- डीएवीपी के सहायक निदेशक हैं।)

अनुच्छेद-३७० के निरस्त होने से जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी घटनाओं में कमी आई है, अमित शाह

करनाल। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मंगलवार को कहा कि अनुच्छेद-३७० निरस्त होने के बाद जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी घटनाओं में काफी कमी आई है और रिकॉर्ड संख्या में पर्यटक केंद्र शासित प्रदेश की यात्रा कर रहे हैं। अमित शाह ने मंगलवार को हरियाणा पुलिस को उसकी असाधारण सेवा के लिए 'राष्ट्रपति निशान' प्रदान किया और अपने संबोधन में यह बात कही। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि केंद्र में भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) के नेतृत्व वाली सरकार ने पिछले आठ वर्षों में जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों तथा पूर्वोत्तर में उग्रवाद और वामपंथी उग्रवाद समेत देश की आंतरिक सुरक्षा संबंधी चुनौतियों का सफलतापूर्वक मुकाबला किया है।

उन्होंने कहा, '' आज मैं संतोष के साथ कह सकता हूं कि अनुच्छेद-३७० हटने के बाद जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी घटनाओं में काफी कमी आई है और रिकॉर्ड संख्या में पर्यटक जम्मू-कश्मीर आते हैं। यह बेहद संतोष देने वाला है।'' केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ऐसे अपराधों के संबंध में फॉरेंसिक जांच को अनिवार्य बनाने के लिए आपराधिक प्रक्रिया संहिता, भारतीय दंड संहिता और साक्ष्य अधिनियम में बदलाव लाएगी, जिनके लिए छह साल अथवा उससे अधिक की सजा का प्रावधान है। शाह ने करनाल के मधुबन में हरियाणा पुलिस अकादमी में एक समारोह में राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू की ओर से यह सम्मान प्रदान किया। 'राष्ट्रपति निशान' एक सैन्य, अर्धसैनिक या पुलिस इकाई को उसकी सेवाओं के लिए दिया जाने वाला एक विशेष 'ध्वज' है।

हरियाणा पुलिस को प्रदान किए गए ध्वज की प्रतिकृति को सभी अधिकारियों और बल के रैंक धारक जवानों द्वारा उनकी वर्दी पर प्रतीक चिन्ह के रूप में लगाया जा सकता है। शाह ने अपने संबोधन में कहा, प्रधानमंत्री के नेतृत्व में गृह विभाग कई आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपट रहा है। इन चुनौतियों में जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद, पूर्वोत्तर और वामपंथी उग्रवाद, जिसका दर्द देश कई दशकों से झेलता आ रहा है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि मोदी सरकार ने जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद पर लगाम लगाने में बड़ी सफलता हासिल की है। उन्होंने कहा कि इसी तरह पूर्वोत्तर में ८,००० से अधिक हथियारबंद युवकों ने आत्मसमर्पण किया और उन्हें मुख्यधारा में लाया गया है। शाह ने कहा कि पूरे पूर्वोत्तर भारत में शांति है और वहां विकास और विश्वास का नया माहौल बना है। उन्होंने वामपंथी उग्रवाद (एलडब्ल्यूई) को लेकर कहा कि २०२१ में ऐसी घटनाओं की रिपोर्ट करने वाले जिलों की संख्या ९६ से गिरकर ४६ हो गई है। उन्होंने कहा कि वामपंथी उग्रवाद के तहत हर तरह की हिंसा में ७० फीसदी की कमी आई है। शाह ने कहा, इससे पता चलता है कि देश बहुत कम समय में वामपंथी उग्रवाद की समस्या पर पूरी तरह से काबू पा लेगा। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के नशा मुक्त अभियान के तहत गृह विभाग विभिन्न राज्यों की सरकारों के साथ समन्वय कर इसे आगे बढ़ा रहा है। शाह ने मधुबन में आयोजित परेड की सलामी भी ली। इस अवसर पर हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर, गृह मंत्री अनिल विज, विधानसभा अध्यक्ष ज्ञान चंद गुप्ता और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कहानी

अर्धांगिनी

शैलेश मटियानी

टिकटघर से आखिरी बस जा चुकने की सूचना दो बार दी जा चुकने के बावजूद नैनसिंह के पाँव अपनी ही जगह जमे रह गए। सामान आँखों की पहुँच में, सामने अहाते की दीवार पर रखा था। नजर पड़ते ही, सामान भी जैसे यही पूछता मालूम देता था, कितनी देर है चल पड़ने में? नैनसिंह की उतावली और खीझ को दीवार पर रखा पड़ा सामान भी जैसे ठीक नैनसिंह की ही तरह अनुभव कर रहा था। एकाएक उसमे एक हल्का-सा कम्पन हुए होने का भ्रम बार-बार होता था, जबकि लोहे के ट्रंक, वी.आई.पी. बैग और बिस्तर-झोले में कुछ भी ऐसा न था कि हवा से प्रभावित होता।

सारा बंटाढार गाड़ी ने किया था, नहीं तो दीया जलने के वक्त तक गाँव के ग्वैठे में पाँव होते। ट्रेन में ही अनुमान लगा लिया था कि हो सकता है, गोधूली में घर लौटती गाय-बकरियों के साथ-साथ ही खेत-जंगल से वापस होते घर के लोग भी दूर से देखते ही किये नैनसिंह सुबेदार-जैसे चले आ रहे हैं? खास तौर पर भिमुवा की माँ तो सिर्फ धुँधली-सी आभा-मात्र से पकड़ लेती कि कहीं रमुवा के बाबू तो नहीं? 'सरप्राइज भिजिट' मारने के चक्कर में ठीक-ठाक तारीख भले ही नहीं लिखी'' मगर महीना तो यही दिसंबर का लिख दिया था? तारीख न लिखने का मतलब तो हुआ कि वह कृष्णपक्ष, शुक्लपक्ष -- सब देखे।

कैसी माया है कि छुट्टियों पर जाने की कल्पना करने के समय से ही चित्त के भटकने का एक सिलसिला-सा प्रारम्भ हो जाता है। कैंट की दिनचर्या जैसे एक बवाल टालने की वस्तु हो जाती है। स्मृति में, मुँह सामने के वर्तमान की जगह, पिछली छुट्टियों में का व्यतीत छा जाता है। पहाड़ की घाटियों में कोहरे के छा जाने की तरह, जो खुद तो धुंध के सिवा कुछ नहीं, मगर जंगलों और पहाड़ों तक को अंतर्धान कर देता है।

आखिर यही मोहग्रस्तता घर के आँगन में पहुँचने-पहुँचने तक, कहीं भीतर-भीतर उड़ते पक्षियों की तरह साथ-साथ चलती है।

दिखाई कुछ भी सिर्फ सपनों में पड़ता है, लेकिन आवाज तो जैसे हर वक्त व्याप्त रहती है। क्या गजब कि टनकपुर के समीप पहुँचते-पहुँचते आँख लग गई थी, जबकि आँख खुलने के बाद, फिर रात से पहले सोने की आदत नहीं। जाने कौन साथ में यात्रा करती महिला कहीं बाथरूम की तरफ को निकली होगी, बिल्कुल भिमुवा की माँ के पाँवों की-सी आवाज हुई थी। छुट्टियों में घर पर रहते हैं तब तक ध्यान नहीं जाता। लौट आते हैं, तब याद आता है कि भैसिया छाते में इन्तजार करते, सिगरेट पीते, कोई फिल्मी गाना गा रहे होते। आसमान में या चंद्रमा होता था, या सिर्फ तारे। रात के सन्नाटे में एक तरफ सौलगाड़ का बहना कानों तक आ रहा था -- दूसरी तरफ, घर का काम निबटाकर आ रही है सूबेदारनी के झांवरों की आवाज!

आवाज ही क्यों, धीरे-धीरे आकृति उपस्थित होने लगती है। धीरे-धीरे तो बाबू बच्चों - सभी की, मगर मुख्य रूप से उसी की, जो कि दो-तीन वर्षों के अंतराल में छुट्टियों की तैयारी होते ही प्रकृति की तरह प्रगट होती जाती है। जिसके साथ छुट्टियों में बिताया गया समय कबूतरों की तरह कंधों पर बैठता, पंख फड़फड़ाता अनुभव होता है। मन में होता है कि यह ट्रेन सुसरी, तो बार-बार ऐसे अड़ियल घोड़ी की तरह रुक जाती है - यह क्या ले चलेगी, हम इसे उड़ा ले चलें। रेलगाड़ी-बस से यात्रा करते भी सारा रास्ता पैदल पैदल ही नाप रहे होने की-सी भ्रांति घेरे रहती है। गाड़ी रुकते ही, देर तक गाड़ी के डिब्बे में पड़े रहने की जगह, आगे पैदल चल पड़ने को मन होता है। एक गाड़ी से नीचे, तो अगला कदम सीधे घर के आँगन में रखने का मन होता है। घर पहुँच चुकने के बाद तो उतना ध्यान नहीं रहता, लेकिन पहले यही कि सुबह के उजाले में क्या आलम रहता है और शाम के धुँधलके या रात के अंधेरे क्या उस स्थान का, जहाँ कि सूबेदारनी हुआ करती है। स्मृति के संसार में विचरण करते में जैसे ज़्यादा रूप पकड़ती जाती है। स्वभाव भी क्या पाया है। अकेले ही सारी सृष्टि चलाती जान पड़ती है। सृष्टि है भी कितनी। जितनी हमसे जुड़ी रहे।

पींग-पींग की लम्बी आवाज सुनाई पड़ी, तो भ्रम हुआ कि कहीं कोई स्पेशल बस तो नहीं लग रही पिथौरागढ़ को, लेकिन यह तो ट्रक था। निराश हो नैनसिंह ने मुँह फेरा ही था कि पींग-पींग हुई। घूमकर देखा, तो फिर वही ट्रक था। जैसे ही रुख बदला, फिर वही पींग-पींग ! -- अब ध्यान आया कि ठीक ड्राइवर वाली सीट की बगल में बाहर निकला कोई हाथ, 'इधर आओ' पुकार रहा है।

नैनसिंह ने नहीं पहचाना। बनखरी वाली दीदी का हवाला दिया, तो नाता जुड़ा कि अच्छा, क्या नाम कि जसोंती प्रधान का मझला खीमा है। हाँ, सुना तो था कि इन लोगों की गाड़ियाँ चलती है। खीमसिंह का बोलना, देवताओं के आकाशवाणी करने-सा प्रतीत होता गया और साथ चलने का शसिग्नलश पाते ही, नैनसिंह सूबेदार सामान ट्रक में रखवाने की युद्धस्तर की तत्परता में हो गए। जैसे कि यह ट्रक ही एकमात्र और आखिरी साधन रह गया हो गाँव पहुँचने का। अच्छा होता, अम्बाला से ही एक चिठ्ठी बनखरी वाली दीदी को भी लिख दी होती कि फलां तारीख के आस-पास घर पहुँचने की उम्मीद है। घर वाली ने जागर भी खोल रखा है और हाट की कालिका ने पूजा भी देनी हुई। तुम भी एक-दो दिनों को जरूर चली आना। बहनोई तो पाकिस्तान के साथ दूसरी लड़ाई के दिनों में मारे

बीच-बीच में सीटी बजाने और गाने की कोशिश भी इसी सावधानी में रही कि खीमसिंह को पता चले, ये सब तो बहुत मामूली बातें हैं। बस का किराया बच भी गया है, तो घर में बच्चों के हाथ रखने को तो कुछ रुपए जबर्दस्ती भी देने होंगे। टिकट के पैसों से दूने ही बैठेंगे। क्योंकि अभी तो चंपावत में पड़ाव होना है और वहाँ रात का डिनर भी तो सूबेदार के ही जिम्मे पड़ेगा। मगर खुशी इस बात की है कि टनकपुर अगरचे कहीं होटल में रहना पड़ गया होता, तो जेब जो कटती, सो कटती यह आधा पहाड़ कहाँ पार हुआ होता। अब तो जहाँ आती-जाती, खेतों में काम करती औरतें दिख जा रही है, सभी में रूक्मा सूबेदारनी की छाया गोचर होती है।

गए। पेंशनयाफ्ता औरत हैं। भाई-बहनों के साथ-साथ, कुछ कर्मक्षेत्र का रिश्ता भी बनता है। पिथोरागढ़ के ज़्यादातर गाँवों की विधवाओं में तो फौज में भर्ती हुए लोगों की ही होंगी, नहीं तो पहाड़ के स्वच्छ हवा-पानी में बड़ी उम्र तक जीते हैं लोग।

ट्रक के स्टार्ट होते ही, नैनसिंह को पंख लग गए हों। ट्रक का रूप कुछ ऐसा हो गया था, जैसे कि नैनसिंह सूबेदार बैठे हैं, तो वह भी चला चल रहा है पिथोरागढ़ को, नहीं तो कहाँ इस साँझ के वक्त टनकपुर से चंपावत तक की चढ़ाई चढ़ता फिरता। खीमसिंह ने पहले ही बता दिया था कि रात तो आज चंपावत में ही पड़ाव करना होगा, लेकिन सुबह दस तक पिथोरागढ़ सामने। यहाँ टनकपुर में ही ठहर जाने का मतलब होता, कल सन्ध्या तक पहुँचना। हालांकि घर तो जो आनन्द ठीक गोधूलि की बेला में पहुँचने का है, दोपहर मे कहाँ। शाम का धुँधलका आपको तो अपने में आवृत्त रखता हुआ-सा पहुँचता है, लेकिन जहाँ घर पहुँचना हुआ कि उसे कौन याद रखता है।

देखिए तो काल भी अजब वस्तु है। सब जगह -- और सब समय -- काल भी एक-सा नहीं। संझा का समय जो मतलब पहाड़ में रखता है, खासतौर पर किसी गांव में, वह मैदानी शहरों में कहाँ? पिछले वर्ष ठीक संध्या झूलते में पहुँचना हुआ और संयोग से घर के सारे लोगों से पहले रूक्मा सूबेदारनी उर्फ भिमुचा की अम्मा ही सामने पड़ गई, तो क्या हुआ सूबेदारनी का हाल और क्या खुद सूबेदार साहब का? क्या गजब कि पन्द्रह साल पहले, चौत के महीने शादी हुई थी और बन की हिरनी का सा चौंकना अभी तक नहीं गया।

भीड़भाड़ वाला क्षेत्र पार करते-करते, खीमसिंह के साथ आशल-कुशल और नाना दीगर संवाद करते तथा कैप्सटन की सिगरेट की फूँक उड़ाते भी, नैनसिंह सूबेदार व्यतीत के धुँधलके में डूबते ही चले गए।

खीमसिंह ट्रक के साथ-साथ, खुद को भी ड्राइव करता जान पड़ता था। उसकी सारी इंद्रियाँ जैसे पूरी तरह ट्रक के हवाले हो गई थीं। और देखिए तो यह टनकपुर से पिथौरागढ़ की तरफ को जाते, या उस तरफ से आते, हुए रास्ते पर गाड़ी चलाना भी किसी करिश्मे से कहाँ कम है। पलक झपकते में ऐसे-ऐसे मोड़ हैं कि ड्राइवर का ध्यान चूकते ही, बसेरा नीचे घाटी में ही मिलता है।

ट्रक, रफ्तार से ज़्यादा, शोर उत्पन्न कर रहा था। आखिर दो-तीन किलोमीटर पार करते-करते में ही, पहले ट्रेन में रात-भर ठीक न सो पाने की भूमिका बाँधी और फिर आँखें बन्द कर ली, नैना सूबेदार ने मगर नींद कहाँ। आँस बन्द रखते में सड़क ट्रक के साथ ही मुड़ती जान पड़ती थी, ट्रक सड़क के साथ जाता हुआ। नीचे अब अतल लगती-सी मीलों गहरी घाटियाँ हैं और खीमसिंह का या खुद ट्रक का ध्यान जरा-सा भी चूका नहीं कि सूबेदार नैनसिंह ने, हड़बड़ाकर आँखों को खोल दिया, तो सामने एक एक परिदृश्य 'आँखें क्यों बन्द कर ले रहे हो' पूछता-सा दिखाई पड़ा। सचमुच में नींद हो, तो बात और है, नहीं तो टनकपुर पिथौरागढ़ को अधर में टांगती-सी सड़क पर कहाँ इतनी निश्चिंतता थी कि आँखें बन्द किये, रूक्मा सूबेदारनी की एक-एक छवि को याद करते रहो। पिछली छुट्टियों में रामी, यानी रमुआ सिर्फ डेढ़ साल का था और स्साला उल्लू का बच्चा बिलकुल बन्दर के डीगरे की तरह माँ की छाती से चिपका रहता था। इस बार की छुट्टियों के लिए तो सूबेदार ने तब एक ही कोशिश रखी कि दो लड़के 'मोर दॅन सफिशियेंट' माने जाने चाहिए, जरूरत अब सिर्फ एक कन्याराशि की है। कुछ कहिए, साहब, जो आनन्द कन्या के लालन-पालन में हैं, जैसे वह आईने की तरह आपको अपने में झलकाती-सी बोलती बतियाती है -- वह बात ससुरे लड़कों में कहाँ। इसलिए पिछली बार प्राण-प्रण से लड़की की कोशिश थी और उसी कोशिश में थी यह प्रार्थना कि -- 'हे मइया, हाट की कालिका! आगे क्या कहूँ, तू खुद अंतर्यामिनी है।'

चलते-चलाते ही, यह भी याद आ गया नैनसिंह सूबेदार को कि अबकी बार घर से इस प्रकार की कोई खबर चिठ्ठी में नहीं आई। लगता है मइया पूजा पाने के बाद ही प्रसाद देगी। वह भी तो आदमी के सहारे है। जैसी जिसकी मान्यता हो, वैसी समरूप वो भी ठहरी।

निराशा के सागर में आशा के जहाज की तरह ट्रक लेकर उदित होने वाले खीमसिंह के प्रति अहसान की भावना स्वाभाविक ही नहीं, जरूरी भी थी क्योंकि मिलिट्री की नौकरी से घर लौटते आदमी की छवि ही कुछ और होती है, लोगों में। फिर खीमसिंह से तो दीदी के निमित्त से भी रिश्ता हुआ। लगभग हर दस-पंद्रह किलोमीटर के फासले पर ट्रक को विश्राम देते हुए, खीमसिंह की चाय-पानी, गुटुक-रायते को पूछना खुद की जिम्मेदारी ही लगती रही सूबेदार को।

बीच-बीच में सीटी बजाने और गाने की कोशिश भी इसी सावधानी में रही कि खीमसिंह को पता चले, ये सब तो बहुत मामूली बातें हैं। बस का किराया बच भी गया है, तो घर में बच्चों के हाथ रखने को तो कुछ रुपए जबर्दस्ती भी देने होंगे। टिकट के पैसों से दूने ही बैठेंगे। क्योंकि अभी तो चंपावत में पड़ाव होना है और वहाँ रात का डिनर भी तो सूबेदार के ही जिम्मे पड़ेगा। मगर खुशी इस बात की है कि टनकपुर अगरचे कहीं होटल में रहना पड़ गया होता, तो जेब जो कटती, सो कटती यह आधा पहाड़ कहाँ पार हुआ होता। अब तो जहाँ आती-जाती, खेतों में काम करती औरतें दिख जा रही है, सभी में रूक्मा सूबेदारनी की छाया गोचर होती है।

अभी-अभी भूमियाधार की चढ़ाई पार करते में, यो ऊपर के धुरफाट में न्योली गाती कुछ अपने को ही हृदय का हाल सुनाती जान पड़ रही थीं। जैसे कहती हों कि पलटन से लौट रहे हो, हमारे लिए क्या लाये हो। मन तो हुआ कि कुछ देर को ट्रक रुकवा कर, या तो उन औरतों के पास तक खुद चल दिया जाएँ या उन्हें ही संकेत किया जाए कि यहाँ तक आकर न्यौली श्टेपश करा जाएँ। फिलिप्स का ट्रांजिस्टर कम टेपरिकार्डर, यानी 'टू इन वन' इसी मकसद से तो लाए हैं -- लेकिन सर्वप्रथम बाबू से कुछ जागर गवाना है -- तब खुद सूबेदारनी की न्यौली 'टेप' करनी है। माँ तो परमधाम में हुई। कुछ ही साल पहले तक दोनों सास-बहू मिलके न्यौली गाती थीं और ज़्यादा रंग में हुई, तो एक-दूसरे की कौली भर लेती थीं।

स्त्री तत्व भी क्या चीज हुआ। सारे ब्रह्मांड में व्याप्त ठहरा। कोई ओर-छोर थोड़े हुआ इनकी ममता का।

अपरंपार रचना हुई। नाना रूप, नाना खेल। देखिए तो क्या कर सकता है। हजार बंदिशों का मारा बंदा। इच्छा कर लेता है, सब कर लेता है। सूबेदारनी से मिलती-जुलती, और खुद के हृदय का हाल सुनाती-सी औरतों का ओझल होना देखते चल रहे हैं नैनसिंह सूबेदार भी। सवारी का साधन भी एक निमित्त मात्र हुआ, चलने वाला तो हर हाल में आदमी ही ठहरा। आदमी चलता रहे, तो गाड़ी-मोटर, सड़क, खेत खलिहान, पेड़-जंगल और पशु-पक्षी भी साथ चलते रहे। आदमी रुका, तहाँ सभी रुक गए। आदमी को दिखते तक में अपरंपार सृष्टि का सभी कुछ प्राणवान और विद्यमान हुआ। आदमी से ओझल होते ही, सब-कुछ शून्य हो जानेवाला ठहरा।

क्या है कि ध्यान धरता है आदमी। ध्यान करता है, आदमी। ध्यान से ही सूबेदारनी ठहरी। औरतें सब लगभग समान हुई और लगभग सभी माता-बहिन-बेटी इत्यादि, लेकिन किसी की कोई बात ध्यान में रह गई किसी की कोई।

माँ का स्वयं के परमधाम सिधारते समय का, 'नैनुवा रे' कहते हुए पूरी आकृति पर हाथ फिराना ध्यान में रह गया है, तो रूक्मा सूबेदारनी को देखते ही हिरनी का सा चौंकना। फोटू कैमरामैन हो जाने वाली ठहरी यह औरत और आपके एक-एक नैन-नक्श को पकड़ती, प्रकट करती ऐसा ध्यान खींच ले कि पंद्रह सालों की गृहस्थी में भी आखों की आब ज्यों-की-त्यों हुई। और बाकी तो शरीर में जो है, सो है, मगर आँखें क्या चीज हुई कि प्राणतत्व तो यहीं झलमल करता हुआ ठहरा। फिर कमला सूबेदारनी का तो हाल क्या हुआ कि खीमसिंह 'स्टीयरिंग-व्हील' को हाथों से घुमा रहा है, वैसे आपको सूबेदारनी सिर्फ आँखों से घुमा सकने वाली ठहरी। यह बात दूसरी हुई कि अनेक मामलों में वो 'रिजर्व फॉरिस्ट' ही ठहरी।

नैनसिंह सूबेदार का अनायास और अचानक हँस पड़ना, जैसे जंगल की वनस्पतियों और पक्षियों तक में व्याप्त हो गया। खीमसिंह का ध्यान भी चला गया इस अचानक के हँस पड़ने पर, तो उसने भी यही कहा कि फौज का आदमी तो, बस, इन्हीं चार दिनों की छुट्टियों में जी भर हँस-बोल और मौज-मजा कर लेता है, दाज्यू! कुछ जानदार वस्तु तो आप जरूर साथ लाए होंगे? यहाँ तो पहाड़ में ससूरी आजकल डाबर की गऊमाता का दूध-मूत चल रहा है, मृतसंजीवनी सुरा! थ्री एक्स रम, ब्लैकनाइट-पीटरस्कॉट व्हिस्की और ईगल ब्रांडी जैसी वस्तुएँ तो औकात से बिलकुल बाहर पहुँचा दी है सरकार ने।''

चम्पावत आते ही, खीमसिंह ने ट्रक को पहचान के ढाबे के किनारे खड़ा कर दिया। कुछ ऐसे ही मनोभाव में, जैसे गाय-भैस थान पर बाँध रहा हो। उँगलियों की कैंची फँसाकर, लम्बी जमुहाई लेते हुए, ''जै हो कालिका मइया की, आधा सफर तो सकुशल कट गया।'' कहा उसने और दृष्टि सूबेदार की तरफ स्थिर कर दी।

अर्थ तो रास्ता चलते ही समझ लिया था, और मन भी बना लिया कि जाता ही देखो, तो दिन दरिया बना लो। हँसते हुए ही इंगित कर दिया कि मामला ठीकठाक है। खीमसिंह का तो रोज का बासा हुआ। जितनी देर में खीमसिंह ढाबे की तरफ निकला, सूबेदार ने अपनी वी.आई.पी. अटैची खोलकर उसमें हैंडलूम की कोरी धोती में लपेटी हुई कोटे की 'थ्री एक्स' बोतलों में एक बाहर निकली। कुछ द्विविधा में जरूर हुए कि कोई खाली अद्धा पड़ा होता, तो 'फिफ्टी-फिफ्टी कर लेते। ड्राइवरों-क्लीनरों की नजरों से तो बाकी छुड़ाना कठिन हो जाता है। जब तक किसी तरह की व्यवस्था करते खीमासिंह न सिर्फ कटी प्याज कलेजी- गुर्दा- दिल- फेफड़े के साथ ही आलू भी मिलाए हुए भुटूवे की, भाप उठती प्लेट लेकर उपस्थित! कहो कि पानी का जग लाना रह गया। तो इतने में आधी बोतल थर्मस में कर लेने का अवसर मिल गया।

चलो, अब कहने को हो गया कि कुछ रास्ते में ले चुके, बोतल में बाकी जो बच रही, सो ही आज की रात के नाम है।

गनीमत कि क्लीनर हरीराम कुछ ही दूरी पर के अपने गाँव चला गया और खीमसिंह ने भी मरभुक्खापन नहीं दिखाया। सच कहिए, तो आदमी के बारे में अपने हिसाब, या अपनी तरफ से आखिरी बात भूलकर तय न करे कोई। बहुत रंगारंग प्राणी हुआ करता है। इसकी आँखों में पढ़ रहे है आप कुछ और ही, मगर दिल में न जाने क्या है। एक-एक पैसे को साँसों की तरह एकट्ठा करके चलना होता है छुट्टियों पर, क्योंकि बन्धन हजार है। ऐसे में पैसा शरीर में से बोटी की तरह निकलता जान पड़ता है, क्योंकि गाँव-घर, अड़ोस-पड़ोस में ही अगर न हुआ कि नैनसिंह सूबेदार का छुट्टियों पर घर आना क्या होता है, तो नाक कहाँ रही। और अब इसे भी तो नाक रखना ही कहेंगे कि भुटुवा और पराठे-शिकार-भात, डिनर का सारा खर्चा खीमसिंह ने अपने जिम्मे लगा लिया कि --''दाज्यू, चंपावत से अपना होमलैंड शुरू हो जाता है। आज तो आप हमारे 'गेस्ट' हो। खाने का बंदोबस्त हमारी तरफ से पीने का आपकी। मरना हमारा, जीना आपका। सीना हमारा, चाकू आपका! कोई चीज किसी वक्त में हो जाती है और उसे गॉडगिफ्ट मान लेना, मनुवा! आप हमको कड़क फौजी ड्रेस में बस अड्डे पर खड़े दिख गए, यह भी भगवान की मर्जी का खेल ठहरा! ठहरा कि नहीं ठहरा? अगर नहीं तो कौन जानता है, भेंट भी होती या नहीं। आप 'भरती होजा फौज में, जिंदगी है मौज में' गाते-बजाते, छुट्टी काटकर, चल भी देते।''

प्रेम है कि नफरत है, जहाँ शराब कुछ भीतर तक उतरी, तहाँ आदमी की असलियत बोलने लगती है कि वह दरअसल है क्या। इस वक्त कम-से-कम खीमा साथ है, तो कुछ घर का सा वातावरण है। कहीं टनकपुर में ही अतक गए होते, तो फिर वही आधे अंग का खाना-पीना और सोना। केप छोड़ा था, तब से ही लगातार यही हुआ कि संपूर्णता नहीं है। प्रत्येक क्षण किसी की स्मृति है और, बस थोड़े-से फासले पर साथ-साथ चल रही है। पर मायामयी छाया को शरीर धारण करने में अभी भी बहुत समय लगना है। कल जाकर गाँव पहुँचेंगे, तब ही यह व्याकुलता थमेगी।

''जब तक सुदर्शनचक्र हाथ में है, तब तक सोचा है! इसकी छोटे मुँह बड़ी बात मान लेना, दाज्यू! कौन हसबैंड ऑफ मदर झूठ बोल रहा है! खीमसिंह ड्राइवर का नाम लेकर इन्क्यावरी कर सकता है, हर शख्स, जो चलना है टनकपुर-सोर की दस लाइन में, जहाँ कि जरा-सा बेलाइन हुए आप, श्रीमान जी तो समझिए कि मुरब्बा तैयार है!'' कहते हुए, खीमसिंह ने भुटुवे की प्लेट उठाकर, उसमें लगा तेल-मसाला चाटना शुरू कर दिया, तो मध्यम कोटि के सरूर में सूबेदार का ध्यान गया सीधे इस बात पर कि रास्ते में जाने कितनी बार तो सचमुच यही झस-झस् हुई थी कि कहीं ऐसा न हो आइडेंटिटी-कार्ड साथ में रहता है, शिनाख्त जरूर पहुँच सकती है, लेकिन आदमी की जगह, सिर्फ उसकी शिनाख्त का पहुँचना कितना खतरनाक हो सकता है, इस बात की तमीज तो ससुरे इस सृष्टि के सिरजनहार तक को नहीं रही। एक खूबी इस चीज में है। एकदम लाइन के पार नहीं निकल जाए आदमी, तो पुल पर का चलना है। नीचे आपके मंथर गति की नदी बह रही है और आस-पास के पहाड़ ससुरे ऐसे घूर रहे हैं, जैसे कि घरवाली मायके जाती हो। कल्पना अगर किसी चिड़िया का नाम है, तो ठीक ऐसे ही मौके पर पंख खोलती है। जितनी बार खतरनाक मोड़ पड़ते थे, उतनी ही बार सूबेदारनी जंगल में हिरनी-जैसी व्याकुल होती जान पड़ती थीं, क्योंकि ध्यान में तो बैठी रहती हैं वही। और भीतर-ही-भीतर दोनों

हाथ बार-बार इसी प्रार्थना में उठ जा रहे थे कि -- हे मइया, हाट की कालिका!

''औरत है कि देवी है -- माया-मोह और भय-भीति का ही सहारा है। अटैची में चमचमाता लाल साटन डेढ़ मीटर रखा हुआ है और पौने इंची सुपरफाइन गोट और सितारे। चोला मइया का सूबेदारनी खुद अपने हाथों तैयार करेगी। जब तक मइया का ध्यान है, तब तक रक्षा जरूर है। नहीं तो, फौज की नौकरी में कौन जानता है कि सरकार ने कब दाना-पानी छुड़ा देना है। कैवेलरी की जिंदगानी है। जीन-लगाम ही अंगवस्त्र है। पिछले साल अचानक ही कैसा ब्लूस्टार ऑपरेशन हो गया और कितने वीर जवान राष्ट्र को समर्पित हो गए। अग्नि को भी समर्पण चाहिए। राष्ट्र की ज्योति जली रहे।

अब नैना सूबेदार का मन हो रहा था, एक प्लेट भुटुवा और मंगा लें, फिर चाहे थर्मस तक भी नौबत क्यों न आ पहुँचे। जाने को तो यह जिन्दगी ही चली जाने के लिए ही है, लेकिन कुछ वक्त ऐसे जरूर आते हैं, जो चाँदी के सिक्कों की तरह बोलते मालूम पड़ते हैं कि हम साथ रहेंगे। अब जैसे कि रूक्मा सूबेदारनी का ही ध्यान है, यह मात्र एकाध जनम तक ही साथ देने वाली वस्तु तो नहीं है। पहले कैसे धोती के पल्ले में नाक दबा लेती थीं सूबेदारनी साहिबा, पिछली बार की छुट्टियों में निमोनिया की पकड़ में थीं, तो दो चम्मच ब्राण्डी पिलाना मछली का मुँह खोलकर, पानी का घूँट डालना हो गया। बाद में खुद कहने लगीं कि खेत-जंगल के कामों से टूटता बदन कुछ ठीक हो जाता है।

चूँकि भुगतान करने का जिम्मा खीमसिंह ने लिया, इसलिए संकोच था कि यह जोर डालना हो जाएगा, मगर अपने भीतर की भाषा खीमसिंह में फूट पड़ी --''सूबेदार दाज्यू, भुटुवा बहुत जोरदार बना ठहरा। एक प्लेट और लाता हूँ।''

आखिर-आखिर थर्मस खंगाल कर पानी लेना पड़ा, लेकिन न खीमसिंह आपे से बाहर हुआ, न सूबेदार। धीरे धीरे जाने कहाँ-कहाँ की फसक-फराल लगाते में, रिमझिम-रिमझिम जज्ब होती चलीं गई। कैंप की कैंटीन से बाहर निकलने की सी निश्चिंतता में, दोनों अब भोजन प्राप्त करने ढाबे की बेंच तक पहुँचे, तो देखा- ढाबे की मालकिन ही पराठे सेंक रही है और इतना तो खीमसिंह ने पहले ही बता दिया था कि यहाँ के खाने में रस है। औरत भी क्या चीज है, साहब। जो स्वाद सिल पर पिसे मसाले का, सो पुड़िया में कहाँ हैं। और पराठे स्साला कोई मर्द सेंक रहा हो, तो घी चाहे जितना लगा लें मगर यहा भुवनमोहिनी आवाज और हँसी कहाँ से लाएगा? इधर पराठा बेलती हैं, सेंकती है और उधर मजाक भी करती जाती है कि सूबेदारनी बहुत याद आ रही होंगी? कहाँ-कहाँ तक फैला दिया इसे भी, फैलाने वाले ने, जहाँ देखी, वैसी ही आभा है। जहाँ आप जल रहे, जाने कब शक्कर हो गई। बोलती है और अचानक ही हँस देती है, तो दुकानदारी करती कहाँ दिखाई देती है। कैसे पलक झपकते में दाँव लगा दिया कि 'आदमी तो दूर देश और बरसों का लौटा ही चीज होता है।' -- प्रौढ़ावस्था को प्राप्त हुई में भी एक आँच हैं। वातावरण में घर की सी उष्मा मालूम देने लगी। 'हाँ, हाँ' कहने के सिवा और क्या कहना हुआ। तीन साल के बाद लौटने में तो अपने इलाके का इस पेड़ से उस पेड़ की तरफ कूदता-फाँदता बन्दर भी अपना-सा लगता है। यह तो अन्नपूर्णा की सी मूरत सामने है। होने को तो कुछ सुरूर 'थ्री-एक्स' का भी जरूर है, मगर जब तक भीतर की धारा से संगम ना हो, नशा चाहे जितना हो ले, यह दिव्यमनसता कहाँ।

चूल्हे की आँच में वह किसी वनदेवी की प्रतिमा की-सी छवि में हैं। सोने का गुलुबंद झिलमिला रहा है। पराठा पाथते में हाथों की चूड़ियाँ बज रही है। बीच-बीच में माथे पर के बाल हटाने को बायीं कुहनी हवा में उठाती है, तो रूक्मा सूबेदारनी की नकल उतारती-सी जान पड़ती है। कांक्षा हो रही है, दो के सिवा और कोई उपस्थित न हो। कोई-कोई समय जाने कैसी एक उतावली-सी भर देता है भीतर कि कहीं यह बीत न जाए।

नैनसिंह सूबेदार को एक-एक ग्रास पहले पर्वत, फिर राई होता गया। आँखों की दुनिया अलग होती गई, हाथ-मुँह-उदर की अलग। खीमसिंह को तो, शायद, यह भ्रम हुआ हो कि थ्री एक्स ने भूख का मुँह खोल दिया है, लेकिन सूबेदार को जान पड़ा कि यह अकेले का खाना नहीं। बस, यही फिर सूबेदारनी का ही सामने बैठा होता-सा प्रतीत हुआ नहीं कि डकार भी आ गई। गिलास-भर पानी एक ही लय में गटकते, सूबेदार हाथ धोने नल की तरफ बढ़ गए।

कुछ क्षण होते हैं, विस्तार पकड़ते जाते हैं और कुछ विस्तार, जो धीरे-धीरे, क्षणिक होते जाते हैं, रास्ते का एक दिन कटना पर्वत, 'लेकिन घर पर महिने-भर की छुट्टियाँ कपूर हो जाती है। पक्षियों-सा उड़ता समय कान में आवाज देता रहता है, लो, आज का दिन भी बीता तुम्हारा। अब बाकी कितने हैं।

बाबू ने थोड़े आँखर जागर गा तो दिया, अपशकुन क्यों करते हो कहने और सूबेदारनी बहू की गाई न्योली के कुछ बन्द सुन लेने पर, लेकिन आखिर तक उनका यह अफसोस गया नहीं कि जितनी रकम इस फोटू कैमरे और ट्रांजिस्टर-टेपरिकार्डर में लगा दिए सूबेदार ने, उतने में घर के कितने जरूरी-जरूरी काम निबट जाते। अलबत्ता जर्सी, सूटों और थ्री एक्स की तीन बोतलों से उनकी आत्मा जरूर प्रसन्न हो गई कि 'यार, पुत्र, जाड़े की मार से बचाने को आ गया तू।'

चार सेल वाला टार्च भी उन्हें बहुत जमा और दस-पाँच दिन बीतते न बीतते तो खुद ही इस मजेदार मूड़ में आ गए कि -- यार, पुत्र, पैसा तो स्साला हाथ का मैल ठहरा! पुरुष की शोभा ठहरी जिंदादिली और रंगीनी! ले, आज तू भी क्या याद करेगा, चार आँखर भगवती जागरण पूरी श्रद्धा से कर देता हूँ। क्या करता हूँ कहता है तू, रिकार्ड ऑन करता हूँ? -- तो कर फिर ऑन -- हरी भगवान जी, प्रथम ध्यान मैं किसका धरता हूँ? तो ध्यान धरता हूँ, उस चौमुखी थिरंचि विधाता का, मइया महाकाली, जिसने कि यह अपूर्व सृष्टि रची और आकाश की जगह पर आकाश, धरती की जगह धरती और पहाड़ की जगह पहाड़, नदी की

ट्रक-समेत कहीं अदृश्य लोक में प्रवेश करते होने की भी अनुभूति होती थी और भय। सारा ध्यान इसी बात पर टँगा रहता कि क्या सचमुच इसी जनम में फिर रूक्मा सूबेदारनी होंगी और उनके साथ का तालाब में की मछली का-सा इस कोने से उस कोने तक उजाड़ना? घर पहुँचने के बाद, थोड़ा एकान्त पाते ही सूबेदारनी एकाएक दोनों पाँव जकड़ लेंगी और सोते-से फूट पड़ेंगे धरती में। जन्म-जन्मांतरों की-सी व्याकुलता में, उनकी पीठ तक हिलती होगी। तब, दोनों हाथ काखों में डाले, ऊपर उठाएँगे सूबेदार और सात्वंना देने में, एकाकार हो जाएँगे। तब ट्रक की यात्रा में ही जाने कितनी बार हुआ कि परमात्मा तो अंतर्यामी है, उससे क्या छिपा है, मगर बगल में ड्रायवर की सीट पर बैठा खीमसिंह भी न देख रहा हो। जब कोई जागता है हर क्षण आदमी की स्मृतियों में, पशु-पक्षी भी भीतर तक झाँकते गोचर होते है।

जगह नदी, अग्नि की जगह अग्नि और क्या नाम, माता गौरी शंकरी छप्परधारिणी, कि पानी की जगह पानी उत्पन्न किया। और कि फूल को पत्तों, दूध को कटोरे के आधार पर रखा। हाड़-माँस के पुतले में रखी प्राणों को संजीवनी। अहा री मइया सिंहवाहिनी -- कैसी अपरम्पार हुई सृष्टि कि सारे ब्रम्हाण्ड में एक महाशब्द व्याप्त हो गया। मनुष्य, तो मनुष्य हुआ, पाताल में का पक्षी भी 'मैं यहाँ, तू कहाँ' गाता दिखाई दिया! कहीं ऊँचा हिमालय रखा, कहीं मैला समुन्दर कहीं धूप रखी, कहीं छाया। कहीं मोहिनी रखी, कहीं माया। विरंची के बाने सृष्टि रची, विष्णु के रूप पोषण किया और शिव के रूप किया संहार -- दूसरा स्मरण तेरा है, माता भगवती, कि तूने भी जब गौरी पार्वती से माया का रूप महाभद्रा-महाकाली रखा, तभी स्थापना हुई तेरी भी हाट का कालिका, घाट की जोगिनी के रूप में। घर को घरिणी तू हुई, वन को हिरणी। पूत को माता हुई, पिता को कन्या कुआँरी --'

बाबू देवी जागरण गाए जा रहे थे। जाने कब गिलास में बाकी बची रम की एक ही घूँट में चढ़ाकर, खूँटी पर से हुड़का भी उतार लिया उन्होंने और 'दुड़-तुकि-दुड्-दुड्' का लहरा लगाते, पूरी तरह लय में हो गए। उनके माथे पर की चुटिया तक रंग में आ गई।

पूरी पट्टी में कौन है उनके मुकाबले में भगवती महाकाली का जागरण रचाने वाला? लेकिन नैना सूबेदार का ध्यान तो 'कन्या-कन्या' सुनते ही इस तरफ चला गया, तो फिर लौटना मुश्किल हो गया कि आज तो उन्नीसवाँ दिवस, उन्होंने तो घर पहुँचने के पहले ही दिन मजाक-मजाक में सूबेदारनी के पाँव ही पकड़ लिए थे कि -- 'भगवती, कन्या ही देना' हाँ, तरंग तो कुछ तब भी जरूर रही होगी लेकिन दृष्य भी उत्पन्न तभी होता है, जबकि भीतर कोलाहल हो। जागर में भी तो यही बताया बाबू ने कि प्रथम तो उदित हुआ शब्द, तब कहीं जाके सूरज? इसी बात पर तो, खीमा के साथ ट्रक में की जात्रा की तरह, फिर अचानक हँसी फूट पड़ी और बाबू ने समझा कि कुछ ज्यादा चढ़ गई होगी। एक-दो बन्द और गाकर, हुड़के की पाग को गले से उतार कर, हुड़के में ही लपेट दिया, 'कल का दिन बीच में है, नैन ! परसों शनिवार -- तीन दिन का जागर मइया हाट की कालिका के दरबार में लगना ही है। जा, सो जा, बहू रास्ता देखती होगी। मइया के दरबार में देखना कैसा जागर लगाता हूँ। आखिरी जागर होगा यह।'

बुढ़वा जी बदमाश हैं। 'बच्चे रास्ता देखते होंगे' नहीं कहते। क्या कर रहे थे उस दिन कि जीवन

वह गाँव पहुँचने की पहली ही रात थी। किंतु डोंगरे बालामृत वाले कलेंडर में माँ हाट की कालिका के पांवों के नीचे आ पड़े शिवशंकर की सी जो दशा अनुभव हुई थी, वह अब तक साथ है। फर्क इतना कि शंकर अनजाने आ गए, पाँवों के नीचे, नैना सूबेदार अंतःप्रेरणा से। सूबेदारनी 'विहानतारा निकल आया' कहती खड़ी हुई ही थी कि बिस्तर से पाँव बाहर रखते तक में, नैना सूबेदारनी ने सब सुन लिया।

की चक्की का एक पाट जाता रहा, एक रह गया। माँ को परमधाम गए ठीक-ठीक कितने साल बीते होंगे?

ज्यों-ज्यों छुट्टियाँ पूँछ रहती जाती है, बीता और विस्तार पाता चल रहा है। चंपावत में रात कैसी बीती थी? भीतर-भीतर कोई यहाँ तक जोर बाँधने लगा था कि राइफिल की नोक पर सामने बिठाए रखो इस औरत को और बताओ इसे कि रोम-रोम में जो व्याकुलता जगाए चली गई हो, इसका देनदार कौन है? हवा की जगह आँधी का रूप रखती खुद गायब हुई जा रही हो, और नैनसिंह सूबेदार पेड़ की डालों से लेकर पहाड़ की चोटियों तक काँपता पड़ा रह गया है, रात के इस अनन्त लगते हुए-से सन्नाटे में? रूप भी शरीर से है, इसे तुम क्या नैना सूबेदार से कुछ कम जानती होगी भगवती? आँखो से लाचार खींचता है, बलवान तो हाथों से काम लेता है।

बस इसी बलवान वाली बात पर सूबेदार को खीमसिंह के साथ चुपचाप उठ जाना पड़ा कि कहीं 'जम्बू बोले यह गत भई, तू क्या बोले कागा?' वाली बात न हो जाय। बद अच्छा, बदनामी बुरी। तब का व्यतीत, अब तक साथ है ।

अड्डे तक सचमुच दस बजे से भी कुछ पहले ही पहुँच दिया था खीमसिंह ने। सुबह-सुबह चम्पावत से लोहाघाट तक कितनी गहरी और गझिन धुंध थी।

ट्रक-समेत कहीं अदृश्य लोक में प्रवेश करते होने की भी अनुभूति होती थी और भय। सारा ध्यान इसी बात पर टँगा रहता कि क्या सचमुच इसी जनम में फिर रूक्मा सूबेदारनी होंगी और उनके साथ का तालाब में की मछली का-सा इस कोने से उस कोने तक उजाड़ना? घर पहुँचने के बाद, थोड़ा एकान्त पाते ही सूबेदारनी एकाएक दोनों पाँव जकड़ लेंगी और सोते-से फूट पड़ेंगे धरती में। जन्म-जन्मांतरों की-सी व्याकुलता में, उनकी पीठ तक हिलती होगी। तब, दोनों हाथ काखों में डाले, ऊपर उठाएँगे सूबेदार और सात्वंना देने में, एकाकार हो जाएँगे। तब ट्रक की यात्रा में ही जाने कितनी बार हुआ कि परमात्मा तो अंतर्यामी है, उससे क्या छिपा है, मगर बगल में ड्रायवर की सीट पर बैठा खीमसिंह भी न देख रहा हो। जब कोई जागता है हर क्षण आदमी की स्मृतियों में, पशु-पक्षी भी भीतर तक झाँकते गोचर होते है।

सूबेदारनी साहिबा से क्या कहा था उस पहली रात ही कि 'एक आँख से हम देख रहे हैं, एक से तुम। वह भगवती पराठा सेंकती जाती है और मंजीरा-सा बजाती है कि 'एक पराठा तो और लो सूबेदार, साहब!' -- और हमें आप ही सेंकती-खिलाती नजर आती हो। ये तो आपने अब बताया कि कल रात का व्रत रखा था। देखिए कि हम बिना खबर हुए ही दो जनों का भोजन कर गए।'

क्या रखा है स्साले किसी आदमी की जिंदगी में, अगर कहीं पाँवों से लेकर, सिर से ऊपर तक का, गहरे तालाब-जैसा प्रेम नहीं रखा है। कहाँ तो एकमूकता का-सा आलम था प्रारम्भ में। फिर शब्द फूटा एकाएक, तो सचमुच एक सृष्टि होती चली गई। जीभ में लपटा तागे का गुच्छा हट गया और वाणी झरना होती गई। जाने कब, कहाँ रात बीती। सूबेदारनी साहिबा ने नहीं टोका एक बार भी, सिर्फ इतना कहती, उठ खड़ी हुई कि विहानतारा निकल आया है। सूबेदार को भी यही हुआ कि माता भगवती, तू नहीं, तो और कौन है। कौन जागता है, दिन-रात हमारे लिए। कौन देता है इतना ध्यान। किसे पड़ी है हमारी इतनी चिन्ता।

वह गाँव पहुँचने की पहली ही रात थी। किंतु डोंगरे बालामृत वाले कलेंडर में माँ हाट की कालिका के पांवों के नीचे आ पड़े शिवशंकर की सी जो दशा अनुभव हुई थी, वह अब तक साथ है। फर्क इतना कि शंकर अनजाने आ गए, पाँवों के नीचे, नैना सूबेदार अंतःप्रेरणा से। सूबेदारनी 'विहानतारा निकल आया' कहती खड़ी हुई ही थी कि बिस्तर से पाँव बाहर रखते तक में, नैना सूबेदारनी ने सब सुन लिया।

छुट्टियों के लिए अर्जी लगाने के दिन से लेकर, यहाँ पहुँचने के दिन तक की सारी व्याकुलता पर कैसे अपने ही रक्त में से बार-बार अवतरित होती, रोम-रोम में छा जाती रही सूबेदारनी। बाजार निकलते, सो कैसे साक्षात् उपस्थित होती-सी खुद ही ध्यान दिलाती रहती पग-पग पर कि उनके लिए क्या-क्या वस्तुएँ लेनी है, और क्या बच्चों और

बाबू के लिए, इनका जाने कब, कहाँ से अचानक छाया की तरह का प्रकट होना और सारा ध्यान अपनी ओर खींच लेना, बस, गाँव पहुँचकर ही थमा है।

पाँव छूते ही मिट्टी के घड़े की तरह का फूट पड़ना और सारा जल सूबेदार पर उँडेल देना किया था सूबेदारनी ने, तब कहीं खुद के पूर्णांग हुए होने की-सी तृप्ति हुई थी।

कल और भी क्या हुआ था। उधर बाबू देवी-जागरण में हैं और इधर सूबेदारनी के साथ का एक-एक दिन बाइस्कोप के चित्रों की तरह आँखों के सामने हुआ जा रहा है कि कौन-सा सूबेदारनी के साथ कितना बीता और कितना खेतों, कितना जंगल और नदी-बावड़ी में। कितना एक बगल सूबेदारनी है, दुसरी बगल भिमुवा या रमुवा! सूबेदार कह रहे हैं -- 'भिमुवा की अम्मा!' -- सूबेदारनी -- 'रमुवा के बाबू!' -- और यह कि 'इजा की जगह' अम्मा क्यों कहने लगे हो?'

सूबेदार एकाएक अपनी फौजी अंग्रेजी ठोंक दे रहे हैं -- 'एव्हरी डे एण्ड एव्हरी नाइट -- माई डियर सूबेदारनी, यू वॉज ऑन माई ड्रीम!' -- और सूबेदारनी पालिएस्टर की नई साड़ी का छोर मुँह में दबा ले रही, 'आग लगे तुम्हारी इस लालपोकिया बानरों की जैसी बोली को।'

अंग्रेजी का अ-आ नहीं जानती है, लेकिन अंग्रजी का रंग गुलाबी होता है, इतना उन्हें पता है। सूबेदार समझा देते है कि 'इतना तो, माई डियर, बिल्कुल करेक्ट पकड़ लिया आपने कि यह लालपोकिया अंग्रेजी की लैंग्विज है।'

रातों को काफी ठंड है और छोटे रमुवा ने सोए-सोए ही लघुशंका निबटा दी है, तो सूबेदारनी मजाक कर रही है, 'वहाँ फौज में भी ऐसा ही कर देते हो क्या?' सूबेदार बदले में कुछ और गहरा मजाक करने की सोच ही रहे हैं कि सूबेदारनी की आँखें एकाएक आर्द्रा नक्षत्र में हो जाती है, 'मेरे लिए रमुवा में तुममें क्या अंतर हुआ!'

इसीलिए कहने और मानने को मन करता है कि देवी मइया, तू नहीं, तो कौन है। दो-तीन साल बलि के बकरे की तरह का टंगा होना होता है वहाँ और कौन है वहाँ, जिससे बातें करते खुद के ऊँचे-ऊँचे पर्वतशिखरों पर आसीन होने और साथ में किसी के अपने में से ही झरने की तरह फूट, या नीचे नदी की तरह बह रहे होने की प्रतीति हो। जहाँ सिर के ऊपर जाने ससुरे कितने कप्तान-कर्नल-जर्नल लढ़े रहते हैं, वहाँ सूबेदार की औकात क्या होती है। लेकिन यहाँ -- और स्मृति की मानो, तो वहाँ भी -- एक तेरा स्पर्श होता है कि शरीर में वनस्पतियाँ-सी फूट पड़ती है।

हाट की कालिका मइया के दरबार में जाने का दिन सिर पर आ रहा है और तत्पश्चात् ही सामने होगी -- विदा होने की घड़ी। सूबेदारनी के साथ बीते एक-एक दिन के पुष्प अँधेरे में बिखेर देने को मन करता है और टॉर्च हाथ में लेकर, ढूँढने को। आज भी सूबेदारनी अभी-अभी, रोज की तरह, विहानतारे को गोद में लेकर दूध पिलाने को उतावली, छाती पर पाँव रखती-सी निकल गई है, लेकिन झाँवरों की आवाज अभी भी मधुमक्खियों का सा छत्ता डाले हुए है।

'चहा तैयार है, बाबू!' कहता भिमुवा देहली पर खड़ा दिखाई दिया, तब हुआ कि सुबह हो गई होगी। आज का दिन बीच में है, कल ही हाट की जात्रा पर जाना है। सूबेदारनी कल कह रही थी कि 'हंहो, रमुवा के बाबू, तुम कह रहे थे इस बार बाँज की पाल्यों कैसी हो रही है?'

जंगल गाँव के उत्तरी छोर में है। एक सिलसिला-सा है, जो सात-आठ गाँवों के सिरहाने के सधन हरीतिमा की तरह, आर-से-पार तक चला गया है। नीचे-नीचे तक कई बार हो आए हैं, सूबेदार, लेकिन चूँकि शिकार खेलने को मना कर देती रही है सूबेदारनी कि, 'हंहो, यह अपनी भड़ाम-भड़ाम यहाँ अपनी मिलेटरी में ही किया करो। हमको नहीं लगरी अच्छी हत्या' -- इसलिए सूबेदार भी, बस, राइफल को कंधे पर सैर-भर करवा के लौट आते रहे हैं -- लेकिन दो-दो तन-तनाते बकरे हाट की कालिका के मन्दिर में काटे जाने हैं, एक भिमुवा की बधाई का भाखा हुआ है, दूसरा रमुवा की-- देवी मइया नहीं कहती होगी कि हमें नहीं अच्छी लगती हत्या? -- खैर, वो क्या है कि बाबू देवी-जागरण में कैसे बताते हैं कि एक हाथ में खड्ग लिया, दूसरे में गदा, एक हाथ में -- सोलह हाथों में मइया कालिका ने आयुध धारण किये और दो हाथों में खप्पर।

इससे ज्यादा दूर तक मस्तिष्क जा नहीं पाता है। क्योंकि वह तो जब तक दो हाथों वाली है, तब तक हमारी पहुँच में है। आगे का रूप ऋषि-मुनियों के ज्ञान की वस्तु हुई।

चाय पीने को बाहर आँगन में निकल आए सूबेदार, तो अब तक का सारा मायालोक जैसे कमरे में ही छूट गया। भीतर चित्त का विस्तार था, बाहर प्रकृति उपस्थित है। गाँव में बाखलियों (घरों की शृंखला) से नीचे घाटी में, नदी के किनारे तक खेतों का सिलसिला चला गया है। लगता है, सुबह-सुबह -- विशेष तौर पर सर्दियों की ऋतु में। नदी में स्नान करके, कोई सीढ़ियों पर पाँव, रखती-सी, वो ऊपर जंगल में निकल गई। दो-चार दिन घट (पनचक्की) की ओर निकल गए थे, सूबेदारनी कपड़े धोती रही थी और वो भी देखते रहे, तालाब में मछलियों का खेल। जीवन का खेल जल-थल, सब जगह एक है। आजकल गेहूँ खेतों में अन्नप्राशन के बाद के बच्चों-जितना सयाना हो आया है। घुटनों के बल खड़ा होने की कोशिश करता हुआ-सा -- लेकिन अभी कोहरे में धोती से पल्ले के नीचे दुबका पड़ा-सा अंतर्धान है। कहीं आठ-नौ बजे तक कुहासा ठीक से छंट पाएगा। अभी तो भूमिया देवता के कमर से नीचे के परिधान की तरह व्याप्त है। गाँव भी तो कितना छोटा है यह। पहाड़ का बच्चा मालूम देता है।

दस बजे तक में सबको खिला-पिलाकर, सूबेदारनी ने सीढ़ी के पत्थर पर दराती को धार लगाना शूरू किया, तो सूबेदार भी वर्दी में हो लिये। खूँटी पर से उतारकर, राइफल कंधे पर रखी। हवाई बैग में टेपरिकार्डर, कैमरा और सिगरेट का डिब्बा रखा और चल पड़े।

आँगन से लेकर, जंगल की तरफ वाली पगडंडी में परिचितों-बिरादरों से 'राम-राम पायलागों -- जीते रहो' निबटाते हुए, पूर्ण एकान्त होते में ही सिगरेट का एक जोरों का कश लिया। फिर थोड़ा रूककर, पीछे-पीछे आती सूबेदारनी को बराबरी पर रोकते हुए, कंधे पर हाथ रख दिया, 'आज आपको बहुत जी-जान से गाकर सुना देती है, न्योली, माई डियर! घर में और खेतों में 'भोइस' दबवा दी थी आपने। अब तो चलाचली का वक्त है। कल पूजा हो जानी है। बस, दो-चार दिन और बासा मानिए। फिर वहीं, आफ्टर मिनीमम टू और थ्री एयर्स वाली बात गई। आप उस न्यौली को जरूर गाना आज अपने फूल भौल्यूम में -- काटते-काटते फिर पाल्योंता जाता है बांज का जंगल-- दि फारेस्ट ऑफ मिरकिल्स!'

सूबेदारनी कुछ नहीं बोलीं, प्रकृति बनी रही। लगभग एक मील के बाद अरण्य का सम्पूर्ण वृत्त, वनस्पतियों से भरी झील हो गया। दूर-दूर गाय-बकरियाँ चरती दिखाई दे रही थीं और कुछ औरतें। बांज-फल्या के पल्लव बटोरती। सूबेदारनी को इतना संकोच तो था कि पहले साथ-साथ जाने वाली औरतें, जहाँ और जब आमना-सामना होगा, मजाक जरूर उड़ाएँगी, लेकिन इनका संग तो सदैव का है, सूबेदार का कहाँ। ये तो फूल की तरह खिले और वो भी दो-तीन बरसों में एक बार। एकाध महिना अपने संग-संग हमें भी खिलाए रहे और फिर अचानक एक दिन, आँख-ओझल।

अब जंगल तो रेशा-रेशा जाना हुआ है। एकान्त

ढूँढने में ज्यादा समय नहीं लगा। सूबेदार बच्चा हो गए कि पाल्यों कटे न कटे, न्योली पहले निबटानी है। चौरस जगह टोहकर, सूबेदारनी अपने नए, रंगीन घाघरे को ठीक से फैलाती बैठ गई। हरी क्रेप के घाघरे में लाल रंग की गोट है। कमर में धोती का पीताम्बरी फेंटा है। पिठां-अक्षत माथे पर ऐसे हैं, जैसे गर्भ से ही साथ हों। नाक में चंदकों वाली, तीन तोले की बाएँ कान के पास तक का स्थान घेरती नथ है -- कानों में सोने की मुद्रिकाएँ। गले में मोतीमाला काला चरेवा और गुलुबन्द है। हाथों में पहुँचियाँ और पाँवों में झांवर। पूरे आभूषण धारण किये है आज नैना सूबेदार के आग्रह पर। एक हाथ में दराती है। दूसरे में अभी तक बांज-फल्यांट के पल्लव रखने का जाल था, अब उसमें रंग-बिरंगे फूलोंवाला घमेला है। क्या रूप है। क्या रंग है।

सूबेदार एकाएक उठे अपनी जगह से सूबेदारनी साहिबा के सिर पर हाथ फेरते हुए 'ओक्के' कहा और जंगली मृग होते, कुलाँच मारते-से, कुछ फासले पर हो गए। कभी कहें - माई डियर, जरा-सा दाएँ। कभी बाएँ। कभी मुस्कुराओ, कभी खिलखिलाओ और कभी न्योली गाने की, फिर कभी जंगल में किसी खोए हुए को ढूँढ़ने की सी मुद्रा में हो जाओ -- सूबेदारनी साहिबा को भी जाने क्या हुआ कि जैसा कहा, तैसी होती गई। बीच में सिर्फ इतना ही बोली, 'देखो, जैसे तुम्हारा मन अचाता है, तैसा कर कर लो। -- मगर इस वक्त फाटू मिलेटरी में चाहे अपने दोस्तों-दोस्तानियों को दिखाते फिरना, यहाँ रमुवा के बूबू (दादा) और दूसरे लोगों की नजर में नहीं पड़ने चाहिए -- बहुत मजाक उड़ाएँगे लोग! कहेंगे, घर में जगहा नहीं मिली --'

सूबेदारनी साहिबा का खिलखिलना हिलाँस पक्षी के चंद्राकार झुंड-सा उड़ता हुआ, जाने हिमालयों के शिखरों तक कहाँ-कहाँ चला गया। सारा अरण्य डूब गया। नैना सूबेदार के मुँह से इतना ही निकला -- 'हमको तो आप ही देवी है --'

सूबेदारनी में सारा संकोच पतझर के समय का पत्तों-सा झरता, और ऋतु वसंत के पल्लवों-सा उगता चला गया। कहाँ फोटो में गाता दिखाई पड़ने-भर को न्योली शुरू की थी, कहाँ एक लड़ी-सी बँधती चली गई।

काटते-काटते सिर पल्लवित हो जाता है
बांज का वन
समुद्र भर जाता है, मेरे प्राण,
नहीं भरता मन!
आश्विन मास की नदी में चमकती है
असेला मछली
अब जाते हो
कौन जानता है, फिर कब होगी भेंट!
वो देखो, उधर हिमालय की द्रोणियों में
कैसी चादर-सी बिछ गई है बर्फ
पक्षी होती मैं, मेरे प्राण,
उड़ती, बस उड़ती ही चली जाती
तुम्हारी दिशा में!

'टेप' की गई न्योलियों को खुद सूबेदारनी ने सुना, तो पहले मुग्ध हुई और फिर फूट-फूटकर रो पड़ी। कल रात से अब तक में एकत्र सारा सुख, जैसे अपने सारे आचरण पृथक करता हुआ-सा, एक साथ प्रकट हो गया।

लौटते-लौटते शरद ऋतु का दिन और छोटा पड़ता गया। सूबेदारनी के पाँव भारी हो गए हैं। एक गट्ठर सिर पर लदा है बांज और फल्यांट के पल्लवों का। एक भीतर इकट्ठा है। पाल्यों उतारने और जाल भर लेने के बाद के विश्राम में, सिर सूबेदारनी साहिबा के गोद में था और जूँ ढूँढ़ने की प्रक्रिया में उनके अँगूठों के नाखून आपस में जुड़ते थे, तो लगता था आवाज मीलों दूर तक जा रही होगी। तब याद आया था, अचानक, फिर वहीं खीमा के साथ की ट्रक-यात्रा में एकाएक उपस्थित होकर, सफर समाप्त होने तक लगातार विद्यमान रहा मृत्यु-भय! सुख अकेले कहाँ आता है।

रात के सन्नाटे में, नीचे घाटी की दिशा से, सियारों का समवेत आता है। और याद आता है, सूबेदारनी का आँचल ओठों में दबाकर, यह बताना कि इसी बर्ष जुलाई में गाँव के तीन घरों में तार आए। सुना, उधर अमृतसर में कोई लड़ाई हो गई एक साया फौजियों के घर मँडराता फिरता रहा है महिने भर। किसी भी दिन हो सकता है, अघटित का घटित होना। फौजी गुजरता है, तो सिर्फ तार ही देखने को मिलता है। रूप, आकार -- उसी में सब कुछ देख लो। अच्छा ही है कि जीवन का अन्त जब भी हो, सूबेदारनी साहिबा से कहीं बहुत दूर हो। हाट की कालिका के मन्दिर में देवदार के जुड़वाँ पेड़ है। सैंकड़ो वर्ष पुराने। जाना कल है, पेड़ आज ही क्यों याद आ पड़े? दोनों को देखो, तो एक में से ही दो किये हुए-से दिखाई पड़ते हैं। लगभग बराबर ऊँचे, बादलों को छुने की बढ़ते हुए-से। बराबर सधन। धूप छतरी पर ही अटक जाती है। नीचे कितनी गहरी छाया। इनमें से एक को काट दीजिए, तो दूसरा सिर धुनता दिखाई पड़ेगा।

माता तू ही रक्षा करना!

सूबेदारनी देवी का चोला सिल चुकी हैं। चढ़ावे की अन्य सामग्रियों के साथ दोनों घंटे भी एक कोने में रख दिए गए थे। भीमू और रामू, लाख मना करते भी, कभी-कभी बजा देते हैं, सो घंटे के वृत्त में खुले अक्षर उनका नाम पुकारते मालूम देते हैं -- श्री भीमसिंह, आत्मज ठाकुर, श्री नैनसिंह, आत्मज ठाकुर, श्री नैनसिंह, आत्मज श्रीमान

हर बार इन छुट्टियों-भर का उत्सव है। दोनों छोरों पर। इस बार मइया की कालिका के दरबार में बधाइयाँ जानी हैं, तो यही रंग सबसे ऊपर है। बच्चे अपने दादा की नकल में देवी-जागरण लगाते हैं। भिमवा ने क्या कहा था कि अगर कोई बहन होती, तो उसमें देवी का अवतार कराते?

सूबेदारनी साहिबा की प्रतिच्छवि और उतर भी किसमें पाएगी? आधी सृष्टि उसी पक्ष में हैं। आधी उससे बाहर।

घर तो, घर है, ऊपर दो मंजिले पर व्यतीत होते जीवन में नीचे गोठ के पशुओं तक का साझा जान पड़ता है। कुछ ही दिनों को आए है, तो भी भैंस दुहने, नहलाने, उधर धार में के पेड़ों पर स्तूप की तरह चिनी गई घास की पुल्लियों को उतरवाने तथा लकड़ी फाड़ने, नाना प्रकार के छोटे-छोटे घरेलू काम है। यहाँ आकर समझ में आता है कि एक सूबेदारनी के सिर पर कितने काम। भाई कोई संग आया नहीं। बहनें थीं, एक आसाम गई है अपने परिवार के साथ, दूसरी चार दिनों को आई, वनखरी वासी दीदी, हवा के साथ-साथ लौट गई। सबके अपने-अपने कारोबार हैं।

कहो कि बुढ़ढे जी अभी भी छोटे-मोटे कई काम निबटा लेते हैं। इस बार यहीं तो समझ रहे थे कि आधी पेंशन पर ही चले आओ। सूबेदारनी भी यही चाहती है, मगर अभी और चार-पाँच साल खींच लेना ही ठीक है। फौज के रहे को फिर यहाँ कौन-सी नौकरी-दुकानदारी करनी। पूरी पेंशन लेकर घर बैठना है। यहीं खेती-बाड़ी सँभालनी है और बच्चों को आगे बढ़ाना है।

सोचते जाओ, तो जीवन के तर्क पीठ पर सवार होते जाते हैं। सूबेदारनी से कुछ छिपा नहीं रहता। कभी अड़ोस-पड़ोस घूमने में लगा देती हैं। कभी नमकीन और प्याज सामने लगा देती है। खाने-पीने की चीजों में कुछ छूट जाए। दो-चार दिन घरेलू व्यंजनों की हौंस। कभी भट-मदिरा का जोजा और लहसुन, हरी धनिया का नमक है। कभी चौमास से रखी करड़ी ककड़ी का रायता, गड़ेरी का भंग पड़ा रसदार साग और पूरियाँ। कभी मुट्ठी-भर लहसुन पड़ी और घी में जम्बू से छोंकी मसूर की दाल है, हरी पालक-लाही का टपकिया और ताजे-ताजे ऊखलकुटे घर के चावलों का भात।

कभी घर में ही बकरा कट गया। सान-सून, भुटुवे से लेकर सिरी-मणुओं का शोरबा! -- घर में न

हुआ, कभी कभी पास-पड़ोस से आ गया शिकार। कभी शहर से खाने-पीने, फसक-फरालय हर चीज की बहार। यही सब धूप-छाँव ठहरी आदमी के जीवन में, बाकी क्या रखा ठहरा। कैलाश का देवता भी आदमी के आँगन में उतरा, तो उसे भी आखिर नाच-कूद के चल ही देना हुआ। बाबू बड़े गिदार हुए, कितनी कहावतें हुई उनके पास। कभी तरंग में हुए तो नातियों के साथ-साथ, बहू को भी बिठा लिया। बाप-बेटे, दोनों के सामने रम के पेग हुए। बाबू कभी 'और मेरे रंगीले, झुमाझुमी नाच।' की मस्ती में, तो कभी 'सदा न फूले तोरई, सदा न साचन होय,' को बैराग में।

बाद के दिन तो भारी होते गए। हाटे के देवी-मंदिर से लाया गया लालवस्त्र आँगन-किनारे के खुबानी के पेड़ की टहनी में बँधा हुआ है, लेकिन नैना सूबेदार देखते हैं, तो रेलगाड़ी के गार्ड के हाथ में थमी हरी झंडी मालूम देता है। हवा में हिलता है, तो 'चलो, चल पड़ो' कहता सुनाई पड़ता है। और इस वक्त हाल यह है कि सारा सामान बँधा पड़ा है, लेकिन कुली अभी तक कहीं नहीं दिखाई पड़ा। कल शहर स्कूल जाने वाले बच्चों से कहलावा भेजा था कि किसी भट को भिजवा दे हिमालया होटल का बची सिंह, मगर कहीं कोई चिन्ह ही नहीं है। गाँव का हाल है यह कि कुली का काम पी.डब्लू. डी. या जंगलार के ठेकों पर करने वाले अनेक हैं, लेकिन बिरादरों का बोझ उठाना गुनाह है। माया-मोह में रह भी गए अंतिम गुंजाइश तक। अब अगर कल सुबह तक टनकपुर ही नहीं पहुँच पाए, तो अम्बाला छावनी कहाँ समय पर पहुँचना हो पाएगा। कई बार जी में आता है कि खुद ही लादें और ले चलें। वापसी का सामान है, बहुत भारी नहीं, मगर जो देखेगा, सो ही हँसेगा। सारी सूबेदार साहबी मिट्टी में मिल जाएगी।

सूबेदार बार-बार सिगरेट सुलगा रहे थे और बार-बार घड़ी पर आँखें जाती थीं बाबू बूढ़े और कमजोर हैं। बच्चे कच्चे। डेढ़-दो-घंटे से कम का रास्ता नहीं बस-अड्डे तक का और दोपहर बाद तो आखिरी बस क्या, ट्रक मिलना भी कठिन हो जाएगा। नैना सूबेदार अभी हताशा और बेचैनी में ही डूबे थे कि देखा, सूबेदारनी बाबू से कुछ कहती, नजदीक पहुँची है और जब तक में वो कुछ ठीक से समझें, सूटकेस उठाकर सिर पर रख लिया और कह क्या रही है कि 'बिस्तरबंद इसके ऊपर रख दो।'

सूबेदारनी के कहने में कुछ ऐसी दृढ़ता थी, और परिस्थिति का दबाव कि सूबेदार की पाँवों से सिर तक एक झुरझुरी-सी तो जरूर हुई, मगर इस तर्क

'इज्जत तो भीतर की भावना हुई। हम निगोड़ी तुम-तुम ही तुमड़ाती रही जिंदगी भर। तुमसे 'आप-आप' से नीचे नहीं उतरा गया। दुर्गा सासू कह रही थी, घरवाली को प्रतिष्ठा देना कोई इसके सूबेदार से सीखे। तुम जब वहाँ रात-दिन हम लोगों की चिंता में घुलते रहने वाले हुए, तब कुछ नहीं -- एक दिन को तुम्हारा बोझ हमारे सिर पर आ गया- तो क्या पर्वत आ गया ठहरा? सिर के ताज तो आखिर तुम ही हुए --'

का कोई जवाब सूझा नहीं कि 'मुँह ताकते तो दिन निकल जाएगा। थोड़ी दूर तक तो चले चलते हैं, रास्ते में कुली जहाँ भी मिल जाएगा --'

नई बात इसमें कुछ नहीं। छुट्टी पर आते में कुली साथ आता है, वापसी में घर के लोग पहुँचा देते हैं। सिपाही-लांसनायक तक तो अपना सामान खुद नहीं उठाते, हवालदार-सूबेदार की तो नाक ही कटी समझिए।

गाँव की सरहद के समाप्त होते-होते, चित्त काफी-कुछ व्यवस्थित हो गया। बाबू और बच्चों की आकृतियाँ धुँधली पड़ती गई। गाय-भैस बकरियों तक की स्मृति कुछ दूर तक साथ चलती आती है। सरहद तक तो खेत तक साथ चलते मालूम पड़ते हैं। दरवाजे के ऊपर चिपकाया गया दशहरे का छापा भी। दशहरे के हरेले दिन सावन के रक्षाबंधन की सहेज रखी रक्षा बाँधते और हरेला सिर पर रखते हुए क्या कहा था, ठीक माँ की तरह -- जीते रहना, जागते रहना। यों ही बार-बार भेंटते रहना। सियार की जैसी बुद्धि हो, सिंह का सा बल! चातकों का-सा हठ हो -- योगियों का सा ज्ञान!

***

रक्षा का मंत्र तो खुद सूबेदार को भी याद ठहरा -- 'येन बद्धो बली राजा। दानवेन्द्रो महाबल' ये तागे ऐसे ही हुए। दानवेन्द्रों से भी नहीं। तोड़े से भी नहीं तोडे जा सके, हम नर-वानर किस गिनती में। माँ जब तक हुई, ठीक यहीं, इस गधेरे तक आती रही छोड़ने। यही रोककर स्फटिक स्वच्छ गंगाजल अंजुलि में भर लाती थीं और सूबेदार के माथे पर छिड़कती, बाहों में बाँध लेती थीं। तागों का एक पूरा जाल हुआ। घर पहुँची, तो अदृश्य हो जाने वाला ठहरा। वापस लौटते में लोहे के तारों का गड़ना। यह सब जीवन का सामान्य प्रवाह हुआ। किसने पार पाया, कौन पा सकेगा। मुखसार की ऋतु में बैल खुले हैं, जुलाई के वक्त कहाँ। एक के बाद, दूसरा सिगरेट जलाते हुए, यही गाने का मन हो रहा कि -- चल, उड़ जारे पंछी -- ई-ई-ई

टेपरिकार्डर, कैमरा हवाई बैग में हैं। इसके अलावा टिफिन भी सूबेदार के हाथ में। रूल कभी -कभी उन्हीं से टकरा कर बज उठता है। सूटकेस और सफारी होल्डाल सूबेदारनी साहिबा के सिर पर है। यों तो अनेक का यही सिलसिला है। हवालदार साहब ट्रांजिस्टर लटकाए, रूल हिलाते, घड़ी बार बात देखते और सिगरेट पीते आगे-आगे चल रहे हैं और पीछे-पीछे घरवाली -- सामान, सिर पर लादे हुए --मगर नैना सूबेदार के साथ यह पहला अवसर है। कभी भी, अपने से दो अंगुल कम करके तो देखा ही नहीं।

एकाएक बोले 'सूबेदारनी, आप जरा रुकिये। ये बैग और टिफिन आप पकड़ लीजिये अब। थोड़ी दूर तक अटैची-होल्डाल मैं ले चलता हूँ।'

सूबेदारनी पीछे को मुड़ी, हौले से मुस्कुराई, तेजी से आगे बढ़ गईं। जैसे गंध प्रकट करती जाती हो अपनी। बोलती गईं -- 'मेरा तो यह रोज का अभ्यास हुआ, रमुआ के बाबू! बेकार के संकोच में पड़ रहे हो। खेतों में पर्सा नहीं ढ़ोती कि घास-अनाज के गट्टर नहीं। उस दिन भी तुम्हारे पीछे-पीछे पाल्यों का जाल लिये चल रही थी --'

'वो घर का- रोजदारी काम हुआ -- मगर ये तो --'

'एक प्रकार की कुलीगिरी हुई,' को सूबेदार ने अपने भीतर ही अंतर्धान कर कर लिया।

'आज बात करने में तुम 'माई डियर!' नहीं कर रहे हो -- इतना उदास पड़ जाना भी क्या ठहरा --'

अब सूबेदार कैसे बताएँ कि अग्निपथ बीत गया, राख रह गई। यहाँ से यहाँ तक बुझा-बुझापन-सा व्याप्त हुआ पड़ा है।

'इज्जत तो भीतर की भावना हुई। हम निगोड़ी तुम-तुम ही तुमड़ाती रही जिंदगी भर। तुमसे 'आप-आप' से नीचे नहीं उतरा गया। दुर्गा सासू कह रही थी, घरवाली को प्रतिष्ठा देना कोई इसके सूबेदार से सीखे। तुम जब वहाँ रात-दिन हम लोगों की चिंता में घुलते रहने वाले हुए, तब कुछ नहीं -- एक दिन को तुम्हारा बोझ हमारे सिर पर आ गया- तो क्या पर्वत आ गया ठहरा? सिर के ताज तो आखिर तुम ही हुए --'

सूबेदार को लगा कि सूबेदारनी का बोलना फिर कानों तक आते चला गया और सूबेदार को लगा, जैसे कलम से शरीर पर लिखे दे रही है कि अगली छुट्टियों में क्या-क्या लेते आना है।

फिर स्मृति में स्पर्श उभरते ही गए कि गाँव पहुँचने के दिन एक-एक वस्तु को कैसे हजार आँखों से देखती-सी मुग्ध होती जाती थीं सूबेदारनी। सिंथाल की बट्टी को जब इन्होंने सूँघा, तब उससे सुगंध फूटनी शुरू हुई थी। लोभ नहीं हैं, लाए हुए को सार्थक कर देना है। इस वक्त 'यह मत भूलना, वह जरूर लेते आना' की सारी रट सिर्फ सूबेदार की उत्साह और गरिमा बढ़ा देने के लिए है।

गाँव से शहर तक की इस सड़क पर, यह कोई पहली बार का चलना तो नहीं इन्हीं छुट्टियों में दो बार जा चुके हैं। एक बार शहर घूमा, कुछ खरीदारी की - मैटिनी शो देखा और हिमालया होटल में ही ठहर गए। हाँ, प्रसंग बदल गया है, तो सड़क भी पाँव थामे ले रही है।

पिथौरागढ़-झूलाबार वाली मुख्य सड़क अब थोड़े ही फासले पर है। इस गाँव वाली सड़क के दोनों ओर पत्थरों की चिनाई हुई है। समतल नहीं, ऊबड़-खाबड़ हैं। बूटों की आवाज कानों को स्पर्श करती मालूम पड़ती है। नजर नीचे चली जाय, तो खेतों में घास बीनती औरतें या इनारे-किनारे की भूमि पर चरते पशु दिखाई पड़ जाते हैं। ऊपर आसमान की तरफ देखो, ये ही सब पक्षी बनकर उड़ते-से जान पड़ते हैं। जहाँ तक यह गाँव वाली कच्ची सड़क जाती है, सब एक है, पक्की डामरवाली सड़क आते ही, पृथक हो गए होने का आभास होता है।

दूर खड़ा भराड़ी का जंगल श्याद रखना, भूलना मतश पुकारता-सा आगे को आ रहा है और प्रकृति सूबेदारनी की ही भाँति घाघरा फैलाए बैठी मालूम पड़ती है। मुसन्यौले ज्यादा लम्बे नहीं उड़ते, सिर्फ एक से दूसरी झाड़ी तक फूदकते है और चीं-चीं-चीं मचाए रहते हैं। याद आता है कि इस बार कन्या की कामना इतनी क्यों रही होगी, तो वहाँ अम्बाला छावनी में साथ के एक फौजी अधिकारी के यहाँ आँखों में छा गई छोटी-सी बच्ची की आकृति स्मृति में उभरती जाती है।

याद आता है उसका 'अंकल-अंकल' कहना और कंधे पर चढ़ने की जिद करना। और यह कि बाबू की वृद्धावस्था और घर के वीरान पड़ जाने के डर में परिवार को साथ रखने का अवसर नहीं।

कल यों ही पूछ लिया कि सूबेदारनी साथ चलोगी? जवाब क्या आया कि किस बार नहीं चली हैं। जब छाया न रहे, तब समझो कि साथ नहीं हैं। और इस वक्त साथ चल रही हैं, तो छाया से ज्यादा कहाँ हैं। प्रकृति की ही भांति, सूबेदारनी भी तो ज्यों-ज्यों ओझल, त्यों-त्यों और प्रत्यक्ष होती जाती है। हर बार यही होता आया है। बस में बैठते ही स्मृतियाँ पक्षियों के झुँडों का तरह उदित हो जाती है भीतर। कौन दिन कौन क्षण कैसा बीता सूबेदारनी के साथ, जंगल में हवा की तरह बजने लगता है भीतर। यहाँ से कैम्प पहुँचने तक नदी की यात्रा है।

अचानक रूकी और 'दो मिनट ठहरना' -- कहते-कहते, सूबेदारनी ने सिर पर का सामान दीवार पर रखवा देने का इंगित किया। सूबेदार को लगा, चढ़ाई चढ़ते थक गई हैं। सामान ठीक से रखाते, कुछ कहने को हुए कि संकोच और शरारत में मुस्कुराती, सूबेदारनी तेजी से नीचे खेतों की दिशा में उतर गईं। जब तक में वो लौटी, नैना सूबेदार को अचानक ही भराड़ी के जंगल में की वह जलधारा स्मरण हो आई, जिसे उद्गम में देखते, उन्होंने सूबेदारनी से मजाक किया था-- यह नहीं शरमाती। सूबेदारनी क्या बोली -- धरती तो माता हुई। उसे सभी समान हुए।

शादी के बाद का एक बरसों लंबा सिलसिला है, जो सूबेदारनी को सयानी करता चला। आने के साल से अब तक में क्या से क्या है। भराड़ी के जंगल में से प्रकट हुई पतली-सी जलधारा, दूर तक क्या जाइए, नीचे घाटी तक में पनचक्की के पाट घुमाती नदी हो गई है। जाने कितने स्त्रोतों से जल इकट्ठा होता गया।

रोकते-रोकते भी, फिर सामान उठा लिया चल पड़ने से पहले, बोलीं, 'आप जाने लगते हो, तो जाने क्या होता है भीतर-भीतर ठंड-सी मालूम पड़ती है। इस बार तो दूर तक का साथ हुआ। पिछली बार आँगन में ही खड़ी थी। आप आँखों से ओझल हुए कि -- तब भी --'

जब तक नैना सूबेदार कुछ बोलने की कोशिश करें, वो चल पड़ीं। दो कदम पीछे चलते, साफ-साफ दिखती हैं। सिर पर के बोझ और असमतल रास्ते के कारण, कमर दाएँ-बाएँ लचकती है, तो सुबहला-सा गोरा रंग नजर थाम लेता है। पिंडलियों पर से घाघरे का पाट उठता है, तो मछली के पानी में करवट मारते होने की सी झिलमिल। जाते समय सूबेदारनी, हर बार, ऐसी हो आती है कि नदी का छूटना है। सफर करते में घंटों बाद कोई नदी आती है रास्ते में, तो कैसे उसकी आब ऊपर तक आती मालूम पड़ती है। यह आद्रा कभी नहीं छूटती। बाहर ओझल होते ही, भीतर बहने लगती है।

बिलकुल चुपके आस्तीन से आँखें पोंछी, तो भी कुछ आवाज-सी आती सुनाई पड़ी। नैना सूबेदार ने जर्सी की जेब में से निकाल कर, चश्मा लगा लिया। सूबेदारनी चली जा रही थीं। उनका तेज चलना हाथ में बंधी घड़ी पर वजन डालता मालूम पड़ रहा था। दोनों हाथ ऊपर को उठाए चल रही है, तो औरत होना अपनी भाषा बोलता-सा सुनाई पड़ता है। नदी में नहाकर, किनारे जाइए। कपड़े बदलिए, वापस लौट चलिए। थोड़ा स्मृति पर जोर देने की कोशिश करिए कि नदी को बहते होने की आवाज -- खास तौर पर पहाड़ में -- कितनी दूर-दूर तक साथ आती है।

मुख्य सड़क तक पहुँचने से पहले ही, कुछ कुली कंधे पर रस्से डाले शहर की तरफ जाते दिख गए, तो सूबेदार ने जोरों से पुकार लिया। वो ठिठके, तो आने का संकेत किया। तब तक में सूबेदारनी ने सिर पर से सामान उतार, दीवाल पर रख दिया। एक-एक रुपये के नोटों की एक नई गड्डी जर्सी से निकाल कर, सूबेदारनी के हाथों में थमाई नैना सूबेदार ने। कहा कुछ नहीं। हाथों को कुछ क्षण यों ही थामे रहे। सुबेदारनी ही हँस पड़ी, 'इतनी ज्यादा रकम दे रहे हो मजदूरी में -- अगली बार भी हम ही लाएँगी साहब का सामान -'

सूबेदारनी हँस रही थीं। हाथों को अलग करना कठिन हो गया। बेल लिपटी जान पडती है। एकएक भराड़ी के जंगल में न्योली गाते समय का परिदृश्य छा गया। भीतर कोई फूट-सा पड़ा-छोड़ो यार, सूबेदार! सारा बोरा-बिस्तर भूल जाओ यहीं सड़क पर। यों ही हाथ फँसाए, सूबेदारनी को ले उड़ो। खेत, घाटी, जंगल, नदी -- सबको उलँघते चले जाओ, जब थक जाओ, सूबेदारनी की गोद में सिर रखे, आँचल ऊपर उठा दो और पड़े रहो।

इस हिमशिखर के पार का झरना साफ दिखाई देता है। झाँको तो खुद के प्रतिबिम्ब झलकते है।

कुली ने सामान लाद लिया, तो सूबेदारनी ने पाँवों को स्पर्श किया और सिर तक समा गई उनकी उंगलियों की छुअन, बूटों तक के भीतर ही नहीं, पूरे स्मृति जगत में व्याप्त हो गई। कुछ समझ नहीं पाए कि पाँवों पर झुकी सूबेदारनी को 'जीती रहो, जगती रहो' कैसे कहें। सूबेदारनी अब विदा लेने को खड़ी हुई, तो पिठाँ-अक्षत जैसे एकाएक प्रकट हुए हों माथे पर। जाने कितनी गहरी रेखाएँ उभर आई, आँखों के बीच की जगह अंतर्धान हो गई। दोनों ऊपर तक डबडबा उठीं थी अब। नैना सूबेदार को लगा, पक्षी योनी से पहले इस झील का पार कठिन है। सूबेदार को हुआ, पंख होते हुए तो एक ही उड़ान में बोझिल हो जाते।

ऊपर पक्की सड़क तक पहुँचते में सूबेदार मुड़े नही। गाँव की कच्ची सड़क का मुहाना मुख्य सड़क में समा गया, तब पलट कर देखा।

सूबेदारनी इसी ओर टकटकी लगाए खड़ी थीं। ओझल होते, तो उन्हें ही देखना है।

○

कहानी

भाभी

बिखरे हुए बालों का गोल-मोल सर और बड़ी-बड़ी आँखें ऊपर से झाँकीं। एक छलाँग में भैया मुँडेर पर थे और मुजरिम के बाल उनकी गिरफ्त में।

इस्मत चुगताई

भाभी ब्याह कर आई थी तो मुश्किल से पंद्रह बरस की होगी। बढवार भी तो पूरी नहीं हुई थी। भैया की सूरत से ऐसी लरजती थी जैसे कसाई से बकरी। मगर सालभर के अंदर ही वो जैसे मुँह-बंद कली से खिलकर फूल बन गई। आँखों में हिरनों जैसी वहशत दूर होकर गरूर और शरारत भर गई।

भाभी आजाद फिजाँ में पली थी। हिरनियों की तरह कुलाँचें भरने की आदी थी, मगर ससुराल और मैका दोनों तरफ से उस पर कड़ी निगरानी थी और भैया की भी यही कोशिश थी कि अगर जल्दी से उसे पक्की गृहस्थन न बना दिया गया तो वो भी अपनी बड़ी बहन की तरह कोई गुल खिलाएगी। हालाँकि वो शादीशुदा थी। लिहाजा उसे गृहस्थन बनाने पर जुट गए।

चार-पाँच साल के अंदर भाभी को घिसघिसा कर वाकई सबने गृहस्थन बना दिया। दो-तीन बच्चों की माँ बनकर भद्दी और ठुस्स हो गई। अम्मा उसे खूब मुर्गी का शोरबा, गोंद सटूरे खिलातीं। भैया टॉनिक पिलाते और हर बच्चे के बाद वो दस-पंद्रह पौंड बढ़ जाती।

आहिस्ता-आहिस्ता उसने बनना-सँवरना छोड़ ही दिया। भैया को लिपस्टिक से नफरत थी। आँखों में मनों काजल और मस्करा देखकर वो चिढ जाते। भैया को बस गुलाबी रंग पसंद था या फिर लाल। भाभी ज्यादातर गुलाबी या सुर्ख ही कपडे पहना करती थी। गुलाबी साड़ी पर सुर्ख (लाल) ब्लाउज या कभी गुलाबी के साथ हलका गहरा गुलाबी।

शादी के वक्त उसके बाल कटे हुए थे। मगर दुल्हन बनाते वक्त ऐसे तेल चुपड़कर बाँधे गए थे कि पता ही नहीं चलता था कि वो पर-कटी मेम है। अब उसके बाल तो बढ गए थे मगर पै-दर-पै बच्चे होने की वजह से वो जरा गंजी-सी हो गई थी। वैसे भी वो बाल कसकर मैली धज्जी-सी बाँध लिया करती थी। उसके मियाँ को वो मैली-कुचैली ऐसी ही बड़ी प्यारी लगती थी और मैके-ससुराल वाले भी उसकी सादगी को देखकर उसकी तारीफों के गुन गाते थे। भाभी थी बड़ी प्यारी-सी, सुगढ नक्श, मक्खन जैसी रंगत, सुडौल हाथ-पाँव। मगर उसने इस बुरी तरह से अपने आपको ढीला छोड़ दिया था कि खमीरे आटे की तरह बह गई थी।

उफ! भैया को चैन और स्कर्ट से कैसी नफरत थी। उन्हें ये नए फैशन की बदन पर चिपकी हुई कमीज से भी बड़ी घिन आती थी। तंग मोरी की शलवारों से तो वो ऐसे जलते थे कि तौबा! खैर भाभी बेचारी तो शलवार-कमीज के काबिल रह ही नहीं गई थी। वो तो बस ज्यादातर ब्लाउज और पेटीकोट पर ड्रेसिंग गाउन चढाए घूमा करती। कोई जान-पहचान वाला आ जाता तो भी बेतकल्लुफी से वही अपना नेशनल ड्रेस पहने रहती। कोई औपचारिक मेहमान आता तो अमूनन वो अंदर ही बच्चों से सर मारा करती। जो कभी बाहर जाना पड़ता तो लिथड़ी हुई सी साड़ी लपेट लेती। वो गृहस्थन थी, बहू थी और चहेती थी, उसे बन-सँवरकर किसी को लुभाने की क्या जरूरत थी! और भाभी शायद यूँ ही गौडर बनी अधेड़ और फिर बूढी हो जाती। बहुएँ ब्याह कर लाती, जो सुबह उठकर उसे झुककर सलाम करतीं, गोद में पोता खिलाने को देतीं। मगर खुदा को कुछ और ही मंजूर था।

शाम का वक्त था, हम सब लॉन में बैठे चाय पी रहे थे। भाभी पापड़ तलने बावर्चीखाने में गई थी। बावर्ची ने पापड़ लाल कर दिए, भैया को बादामी पापड़ भाते हैं। उन्होंने प्यार से भाभी की तरफ देखा और वो झट उठकर पापड़ तलने चली गई। हम लोग मजे से चाय पीते रहे।

धाँय से फुटबाल आकर ऐन भैया की प्याली में पड़ी। हम सब उछल पडे। भैया मारे गुस्से के भन्ना उठे।

'कौन पाजी है?' उन्होंने जिधर से गेंद आई थी, उधर मुँह करके डाँटा।

बिखरे हुए बालों का गोल-मोल सर और बड़ी-बड़ी आँखें ऊपर से झाँकीं। एक छलाँग में भैया मुँडेर पर थे और मुजरिम के बाल उनकी गिरफ्त में।

'ओह!' एक चीख गूँजी और दूसरे लम्हे भैया ऐसे उछलकर अलग हो गए जैसे उन्होंने बिच्छू के डंक पर हाथ डाल दिया हो या अंगारा पकड़ लिया हो।

'सारी...आई एम वेरी सॉरी...' वो हकला रहे थे। हम सब दौड़ कर गए . देखा तो मुंडेर के उस तरफ एक दुबली नागिन-सी लड़की सफेद ड्रेन टाइप और नींबू के रंग का स्लीवलेस ब्लाउज पहने अपने बालों में पतली-पतली उँगलियाँ फेरकर खिसियानी हँसी हँस रही थी और फिर हम सब

हँसने लगे।

भाभी पापडों की प्लेट लिए अंदर से निकली और बगैर कुछ पूछे ये समझकर हँसने लगी कि जरूर कोई हँसने की बात हुई होगी। उसका ढीला-ढाला पेट हँसने से फुदकने लगा और जब उसे मालूम हुआ कि भैया ने शबनम को लड़का समझकर उसके बाल पकड़ लिए तो और भी जोर-जोर से कहकहे लगाने लगी कि कई पापड़ के टुकडे घास पर बिखर गए। शबनम ने बताया कि वो उसी दिन अपने चचा खालिद जमील के यहाँ आई है। अकेले जी घबराया तो फुटबॉल ही लुढ़काने लगी। जो इत्तिफाकन भैया की प्याली पर आ कूदी।

शबनम भैया को अपनी तीखी मस्कारा लगी आँखों से घूर रही थी। भैया मंत्र-मुग्ध सन्नाटे में उसे तक रहे थे। एक करंट उन दोनों के दरमियान दौड़ रहा था। भाभी इस करंट से कटी हुई जैसे कोसों दूर खड़ी थी। उसका फुदकता हुआ पेट सहमकर रुक गया। हँसी ने उसके होंठों पर लड़खड़ाकर दम तोड़ दिया। उसके हाथ ढीले हो गए। प्लेट के पापड़ घास पर गिरने लगे। फिर एकदम वो दोनों जाग पडे और ख्वाबों की दुनिया से लौट आए।

शबनम फुदककर मुंडेर पर चढ गई।

'आइए चाय पी लीजिए', मैंने ठहरी हुई फिजाँ को धक्का देकर आगे खिसकाया।

एक लचक के साथ शबनम ने अपने पैर मुंडेर के उस पार से इस पार झुलाए। शबनम का रंग पिघले हुए सोने की तरह लौ दे रहा था। उसके बाल स्याह भौंरा थे। मगर आँखें जैसे स्याह कटोरियों में किसी ने शहद भर दिया हो। नीबू के रंग के ब्लाउज का गला बहुत गहरा था। होंठ तरबूजी रंग के और उसी रंग की नेल पॉलिश लगाए वो बिलकुल किसी अमेरिकी इश्तिहार का मॉडल मालूम हो रही रही थी। भाभी से कोई फुट भर लंबी लग रही थी, हालाँकि मुश्किल से दो इंच ऊँची होगी। उसकी हड्डी बड़ी नाजुक थी। इसलिए कमर तो ऐसी कि छल्ले में पिरो लो।

भैया कुछ गुमसुम से बैठे थे। भाभी उन्हें कुछ ऐसे ताक रही थी जैसे बिल्ली पर तौलते हुए परिंदे को घूरती है कि जैसे ही पर फड़फडाए बढकर दबोच ले। उसका चेहरा तमतमा रहा था, होंठ भिंचे हुए थे, नथुने फड़फडा रहे थे।

इतने में मुन्ना आकर उसकी पीठ पर धम्म से कूदा। वो हमेशा उसकी पीठ पर ऐसे ही कूदा करता था जैसे वो गुदगुदा-सा तकिया हो। भाभी हमेशा ही हँस दिया करती थी मगर आज उसने चटाख-चटाख दो-चार चाँटे जड़ दिए।

शबनम परेशान हो गई।

'अरे...अरे...अरे रोकिए ना' उसने भैया का हाथ छूकर कहा, 'बड़ी गुस्सावर हैं आपकी मम्मी। उसने मेरी तरफ मुँह फेरकर कहा।

इंट्रोडक्शन कराना हमारी सोसायटी में बहुत कम हुआ करता है और फिर भाभी का किसी से इंट्रोडक्शन कराना अजीब-सा लगता था। वो तो सूरत से ही घर की ब लगती थी। शबनम की बात पर हम सब कहकहा मारकर हँस पडे। भाभी मुन्ने का हाथ पकड़कर घसीटती हुई अंदर चल दी।

'अरे ये तो हमारी भाभी है' मैंने भाभी को धम्म-धम्म जाते हुए देखकर कहा।

'भाभी?' शबनम हैरतजदा होकर बोली।

'इनकी, भैया की बीवी।'

'ओह!' उसने संजीदगी से अपनी नजरें झुका लीं।

'मैं...मैं...समझी' उसने बात अधूरी छोड़ दी।

'भाभी की उम्र तेईस साल है।' मैंने वजाहत (स्पष्टता) की।

'मगर, डोंट बी सिली...।' शबनम हँसी, भैया भी उठकर चल दिए।

'खुदा की कसम!'

'ओह...जहालत...।'

'नहीं...भाभी ने मारटेज से पंद्रह साल की उम्र में सीनियर कैम्ब्रिज किया था।'

'तुम्हारा मतलब है ये मुझसे तीन साल छोटी हैं। मैं छब्बीस साल की हूँ।'

'तब तो कतई छोटी हैं।'

'उफ, और मैं समझी वो तुम्हारी मम्मी हैं। दरअसल मेरी आँखें कमजोर हैं। मगर मुझे ऐनक से नफरत है। बुरा लगा होगा उन्हें?'

'नहीं, भाभी को कुछ बुरा नहीं लगता।'

'चरू...बेचारी!'

'कौन...कौन भाभी?' न जाने मैंने क्यों कहा।

'भैया अपनी बीवी पर जान देते हैं।' सफिया ने बतौर वकील कहा।

'बेचारी की बहुत बचपन में शादी कर दी गई होगी?'

'पच्चीस-छब्बीस साल के थे।'

'मगर मुझे तो मालूम भी न था कि बीसवीं सदी में बगैर देखे शादियाँ होती हैं। शबनम ने हिकारत से मुस्कराकर कहा।'

'तुम्हारा हर अंदाजा गलत निकल रहा है...भैया ने भाभी को देखकर बेहद पसंद कर लिया था, तब शादी हुई थी। मगर जब वो कँवल के फूल जैसी नाजुक और हसीन थीं'

'फिर ये क्या हो गया शादी के बाद?'

'होता क्या... भाभी अपने घर की मल्लिका हैं, बच्चों की मल्लिका हैं। कोई फिल्म एक्ट्रेस तो हैं नहीं। दूसरे भैया को सूखी-मारी लड़कियों से घिन आती है। मैंने जानकर शबनम को चोट दी। वो बेवकूफ न थी।'

'भई चाहे कोई मुझसे प्यार करे या न करे। मैं तो किसी को खुश करने के लिए हाथी का बच्चा कभी न बनूँ...और मुआफ करना, तुम्हारी भाभी कभी बहुत खूबसूरत होंगी मगर अब तो...।'

'ऊँह, आपका नजरिया भैया से अलग है।' मैंने बात टाल दी और जब वो बल खाती सीधी-सुडौल टाँगों को आगे-पीछे झुलाती, नन्हे-नन्हे कदम रखती मुँडेर की तरफ जा रही थी, भैया बरामदे में खडे थे। उनका चेहरा सफेद पड़ गया था और बार-बार अपनी गुद्दी सहला रहे थे। जैसे किसी ने वहाँ जलती हुई आग रख दी हो। चिड़िया की तरह फुदककर वो मुँडेर फलाँग गई। पल भर को पलटकर उसने अपनी शरबती आँखों से भैया को तौला और छलावे की तरह कोठी में गायब हो गई।

भाभी लॉन पर झुकी हुई तकिया आदि समेट रही थी। मगर उसने एक नजर न आने वाला तार देख लिया। जो भैया और शबनम की निगाहों के

हम सब तो हँस ज्यादा रहे थे, मगर वो सर झुकाए निहायत तन्मयता से केक उड़ाने में मसरूफ थीं। चटनी लगा-लगाकर भजिए निगल रही थीं। सिके हुए तोसों पर ढेर-सा मक्खन लगा-लगाकर खाए जा रही थीं, भैया और शबनम को देख-देखकर हम सब ही परेशान थे और शायद भाभी भी फिक्र-मंद होगी, लेकिन अपनी परेशानी को वो मुर्गन खानों में दफ्न कर रही थीं। उन्हें हर वक्त खट्टी डकारें आया करतीं मगर वो चूरन खा-खाकर पुलाव-कोरमा हजम करतीं। वो सहमी-सहमी नजरों से भैया और शबनम को हँसता-बोलता देखती। भैया तो कुछ और भी जवान लगने लगे थे। शबनम के साथ वो सुबह-शाम समंदर में तैरते। भाभी अच्छा-भला तैरना जानती मगर भैया को स्वीमिंग-सूट पहने औरतों से सख्त नफरत थी। एक दिन हम सब समंदर में नहा रहे थे। शबनम दो धज्जियाँ पहने नागिन की तरह पानी में बल खा रही थी।

दरमियान दौड़ रहा था।

एक दिन मैंने खिड़की में से देखा। शबनम फूला हुआ स्कर्ट और सफेद खुले गले का ब्लाउज पहने पप्पू के साथ सम्बा नाच रही थी। उसका नन्हा-सा पिकनीज कुत्ता टाँगों में उलझ रहा था। वो ऊँचे-ऊँचे कहकहे लगा रही थी। उसकी सुडौल साँवली टाँगें हरी-हरी घास पर थिरक रही थीं। काले-रेशमी बाल हवा में छलक रहे थे। पाँच साल का पप्पू बंदर की तरह फुदक रहा था। मगर वो नशीली नागिन की तरह लहरा रही थी। उसने नाचते-नाचते नाक पर अंगूठा रखकर मुझे चिड़ाया। मैंने भी जवाब में घूँसा दिखा दिया। मगर फौरन ही मुझे उसकी निगाहों का पीछा करके मालूम हुआ कि ये इशारा वो मेरी तरफ नहीं कर रही थी।

भैया बरामदे में अहमकों की तरह खडे गुद्दी सहला रहे थे और वो उन्हें मुँह चिडाकर जला रही थी। उसकी कमर में बल पड़ रहे थे। कूल्हे मटक रहे थे। बाँहें थरथरा रही थीं। होंठ एक-दूसरे से जुदा लरज रहे थे। उसने साँप की तरह लप से जुबान निकालकर अपने होंठों को चाटा। भैया की आँखें चमक रही थीं और वो खडे दाँत निकाल रहे थे। मेरा दिल धक से रह गया। ...भाभी गोदाम में अनाज तुलवाकर बावर्ची को दे रही थी।

'शबनम की बच्ची' मैंने दिल में सोचा। ...मगर गुस्सा मुझे भैया पर भी आया। उन्हें दाँत निकालने की क्या जरूरत थी। इन्हें तो शबनम जैसे काँटों से नफरत थी। इन्हें तो अंगरेजी नाचों से घिन आती थी। फिर वो क्यों खड़े उसे तक रहे थे और ऐसी भी क्या बेसुधी कि उनका जिस्म सम्बा की ताल पर लरज रहा था और उन्हें खबर न थी।

इतने में ब्वॉय चाय की ट्रे लेकर लॉन पर आ गया... भैया ने हम सबको आवाज दी और ब्वॉय से कहा भाभी को भेज दे।

रस्मन शबनम को भी बुलावा देना पडा। मेरा तो जी चाह रहा था कतई उसकी तरफ से मुँह फेरकर बैठ जाऊँ मगर जब वो मुन्ने को पट्टी पर चढाए मुँडेर फलाँगकर आई तो न जाने क्यों मुझे वो कतई मासूम लगी। मुन्ना स्कार्फ लगामों की तरह थामे हुए था और वो घोडे की चाल उछलती हुई लॉन पर दौड़ रही थी। भैया ने मुन्ने को उसकी पीठ पर से उतारना चाहा। मगर वो और चिमट गया।

'अभी और थोडा चले आंटी।'

'नहीं बाबा, आंटी में दम नहीं...।' शबनम चिल्लाई। बड़ी मुश्किल से भैया ने मुन्ने को उतारा। मुँह पर एक चाँटा लगाया। एक दम तड़पकर शबनम ने उसे गोद में उठा लिया और भैया के हाथ पर जोर का थप्पड़ लगाया।

'मेरे भी तो चार बच्चे हैं... मेरी कमर तो डनलप पिल्लो का गद्दा नहीं बनी।' उन्होंने अपने सुडौल जिस्म को ठोक-बजाकर कहा और भाभी मुँह थूथाए भीगी मुर्गी की तरह पैर मारती झुरझुरियाँ लेती रेत में गहरे-गहरे गड्ढे बनाती मुन्ने को घसीटती चली गईं। भैया बिलकुल बेतवज्जो होकर शबनम को पानी में डुबकियाँ देने लगे।

'शर्म नहीं आती...इतने बडे ऊँट के ऊँट छोटे से बच्चे पर हाथ उठाते हैं।' भाभी को आता देखकर उसने मुन्ने को गोद में दे दिया। उसका थप्पड़ खाकर भैया मुस्करा रहे थे।

'देखिए तो कितनी जोर से थप्पड़ मारा है। मेरे बच्चे को कोई मारता तो हाथ तोड़कर रख देती।' उसने शरबत की कटोरियों में जहर घोलकर भैया को देखा। और फिर हँस रहे हैं बेहया।

'हूँ...दम भी है जो हाथ तोड़ोगी...।' भैया ने उसकी कलाई मरोड़ी . वो बल खाकर इतनी जोर से चीखी कि भैया ने कांप कर उसे छोड़ दिया और वो हंसते-हंसते जमीन पर लोट गई. चाय के दरमियान भी शबनम की शरारतें चलती रहीं। वो बिलकुल कमसिन छोकरियों की तरह चुहलें कर रही थी। भाभी गुमसुम बैठी थीं। आप समझे होंगे शबनम के वजूद से डरकर उन्होंने अपनी तरफ तवज्जो देनी शुरू कर दी होगी। जी कतई नहीं। वो तो पहले से भी ज्यादा मैली रहने लगीं। पहले से भी ज्यादा खातीं।

हम सब तो हँस ज्यादा रहे थे, मगर वो सर झुकाए निहायत तन्मयता से केक उड़ाने में मसरूफ थीं। चटनी लगा-लगाकर भजिए निगल रही थीं। सिके हुए तोसों पर ढेर-सा मक्खन लगा-लगाकर खाए जा रही थीं, भैया और शबनम को देख-देखकर हम सब ही परेशान थे और शायद भाभी भी फिक्र-मंद होगी, लेकिन अपनी परेशानी को वो मुर्गन खानों में दफ्न कर रही थीं। उन्हें हर वक्त खट्टी डकारें आया करतीं मगर वो चूरन खा-खाकर पुलाव-कोरमा हजम करतीं। वो सहमी-सहमी नजरों से भैया और शबनम को हँसता-बोलता देखती। भैया तो कुछ और भी जवान लगने लगे थे। शबनम के साथ वो सुबह-शाम समंदर में तैरते। भाभी अच्छा-भला तैरना जानती मगर भैया को स्वीमिंग-सूट पहने औरतों से सख्त नफरत थी। एक दिन हम सब समंदर में नहा रहे थे। शबनम दो धज्जियाँ पहने नागिन की तरह पानी में बल खा रही थी। इतने में भाभी जो देर से मुन्ने को पुकार रही थीं, आ गईं। भैया शरारत के मूड में तो थे ही, दौड़कर उन्हें पकड़ लिया और हम सबने मिलकर उन्हें पानी में घसीट लिया। जब से शबनम आई थी भैया बहुत शरारती हो गए थे। एकदम से वो दाँत किचकिचा कर भाभी को हम सबके सामने भींच लेते, उन्हें गोद में उठाने की कोशिश करते मगर वो उनके हाथों से बोंबल मछली की तरह फिसल जातीं। फिर वो खिसियाकर रह जाते। जैसे कल्पना में वो शबनम ही को उठा रहे थे और भाभी लज्जित होकर फौरन पुडिंग या कोई और मजेदार डिश तैयार करने चली जातीं। उस वक्त जो उन्हें पानी में धकेला गया तो वो गठरी की तरह लुढ़क गईं। उनके कपड़े जिस्म पर चिपक गए और उनके जिस्म का सारा भौंडापन भयानक तरीके से उभर आया। कमर पर जैसे किसी ने रजाई लपेट दी थी। कपड़ों में वो इतनी भयानक नहीं मालूम होती थीं।

'ओह, कितनी मोटी हो गई हो तुम!' भैया ने कहा, 'उफ तोंद तो देखो...बिलकुल गामा पहलवान मालूम हो रही हो।'

'हँह... चार बच्चे होने के बाद कमर...।'

'मेरे भी तो चार बच्चे हैं... मेरी कमर तो डनलप पिल्लो का गद्दा नहीं बनी।' उन्होंने अपने सुडौल जिस्म को ठोक-बजाकर कहा और भाभी मुँह थूथाए भीगी मुर्गी की तरह पैर मारती झुरझुरियाँ लेती रेत में गहरे-गहरे गड्ढे बनाती मुन्ने को घसीटती चली गईं। भैया बिलकुल बेतवज्जो होकर शबनम को पानी में डुबकियाँ देने लगे।

जब नहाकर आए तो भाभी सर झुकाए खूबानियों के मुरब्बे पर क्रीम की तह जमा रही थीं। उनके होंठ सफेद हो रहे थे और आँखें सुर्ख थीं। गटारचे की गुड़िया जैसे मोटे-मोटे गाल और सूजे हुए मालूम हो रहे थे।

लंच पर भाभी बेइंतिहा गमगीन थीं। लिहाजा बड़ी तेजी से खूबानियों का मुरब्बा और क्रीम खाने में जुटी हुई थीं। शबनम ने डिश की तरफ देखकर ऐसे फरेरी ली जैसी खूबानियाँ न हों, साँप-बिच्छू हों।

'जहर है जहर। उसने नफासत से ककड़ी का टुकड़ा कुतरते हुए कहा और भैया भाभी को घूरने लगे। मगर वो शपाशप मुरब्बा उड़ाती रहीं। 'हद है! उन्होंने नथूने फड़काकर कहा।

भाभी ने कोई ध्यान न किया और करीब-करीब पूरी डिश पेट में उंडेल ली। उन्हें मुरब्बा-शोरबा खाता देखकर ऐसा मालूम होता था जैसे वो ईर्ष्या-द्वेष के तूफान को रोकने के लिए बंद बाँध रही हों।

'खुदा के लिए बस करो... डॉक्टर भी मना कर चुका है...ऐसा भी क्या चटोरपन!' भैया ने कह ही दिया। मोम की दीवार की तरह भाभी पिघल गईं। भैया का नश्तर चर्बी की दीवारों को चीरता हुआ ठीक दिल में उतर गया। मोटे-मोटे आँसू भाभी के फूले हुए गालों पर फिसलने लगे। सिसकियों ने जिस्म के ढेर में जलजला पैदा कर दिया। दुबली-पतली और नाजुक लड़कियाँ किस लतीफ और सुहाने अंदाज में रोती हैं। मगर भाभी को रोते देखकर बजाए दुख के हँसी आती थी। जैसे कोई रुई के भीगे हुए ढेर को डंडों से पीट रहा हो।

वो नाक पोंछती हुई उठने लगीं, मगर हम लोगों ने रोक लिया और भैया को डाँटा। खुशामद करके वापस उन्हें बिठा लिया। बेचारी नाक सुड़कती बैठ गईं। मगर जब उन्होंने कॉफी में तीन चम्मच शकर डालकर क्रीम की तरफ हाथ बढ़ाया तो एकदम ठिठक गईं। सहमी हुई नजरों से शबनम और भैया की तरफ देखा। शबनम बमुश्किल अपनी हँसी रोके हुए थी,भैया मारे गुस्से के रुआँसे हो रहे थे। वो एकदम भन्नाकर उठे और जाकर बरामदे में बैठ गए। उसके बाद हालात और बिगड़े। भाभी ने खुल्लम-खुल्ला ऐलाने-जंग कर दिया। किसी जमाने में भाभी का पठानी खून बहुत गर्म था। जरा-सी बात पर हाथापाई पर उतर आया करती थीं और बारहा भैया से गुस्सा होकर बजाए मुँह फुलाने के वो खूँखार बिल्ली की तरह उन पर टूट पड़तीं, उनका मुँह खसोट डालतीं, दाँतों से गिरेबान की धज्जियाँ उडा देतीं। फिर भैया उन्हें अपनी बाँहोंमें भींचकर बेबस कर देते और वो उनके सीने से लगकर प्यासी, डरी हुई चिडिया की तरह फूट-फूटकर रोने लगतीं। फिर मिलाप हो जाता और झेंपी-खिसियानी वो भैया के मुँह पर लगे हुए खरोंचों पर प्यार से टिंचर लगा देतीं, उनके गिरेबान को रफू कर देतीं और मीठी-मीठी शुक्र-गुजार आँखों से उन्हें तकती रहतीं।

ये तब की बात है जब भाभी हल्की-फुल्की तीतरी की तरह तर्रार थीं। लड़ती हुई छोटी-सी पश्चिमी बिल्ली मालूम होती थीं। भैया को उन पर गुस्सा आने की बजाए और शिद्दत से प्यार आता। मगर जब उन पर गोश्त ने जिहाद बोल दिया, वो बहुत ठंडी पड़ गई थीं। उन्हें अव्वल तो गुस्सा ही न आता और अगर आता भी तो फौरन इधर-उधर काम में लगकर भूल जातीं।

उस दिन उन्होंने अपने भारी-भरकम डील-डौल को भूलकर भैया पर हमला कर दिया। भैया सिर्फ उनके बोझ से धक्का खाकर दीवार से जा चिपके। रुई के गट्टर को यूँ लुढ़कते देखकर उन्हें सख्त घिन आई। न गुस्सा हुए, न बिगडे, शश्लमदा, उदास सर झुकाए कमरे से निकल भागे, भाभी वहीं पसरकर रोने लगीं।

बात और बढ़ी और एक दिन भैया के साले आकर भाभी को ले गए। तुफैल भाभी के चचा-जाद भाई थे। भैया उस वक्त शबनम के साथ क्रिकेट का मैच देखने गए हुए थे। तुफैल ने शाम तक उनका इंतजार किया। वो न आए तो मजबूरन भाभी और बच्चों का सामान तैयार किया।

जाने से पहले भैया घड़ी भर को खडे-खडे आए। 'देहली के मकान मैंने इनके मेहर में दिए', उन्होंने रुखाई से तुफैल से कहा।

'मेहर?' भाभी थर-थर काँपने लगीं।

'हाँ...तलाक के कागजात वकील के जरिए पहुँच जाएँगे।'

'मगर तलाक...तलाक का क्या जिक्र है?'

'इसी में बेहतरी है।'

'मगर...बच्चे...?'

'ये चाहें तो उन्हें ले जाएँ...वरना मैंने बोर्डिंग में इंतजाम कर लिया है।'

एक चीख मारकर भाभी भैया पर झपटीं...मगर उन्हें खसोटने की हिम्मत न हुई, सहमकर ठिठक गईं।

और फिर भाभी ने अपने नारीत्व की पूरी तरह बेआबरूई करवा डाली। वो भैया के पैरों पर लोट गईं, नाक तक रगड़ डाली।

'तुम उससे शादी कर लो...मैं कुछ न कहूंगी। मगर खुदा के लिए मुझे तलाक न दो। मैं यूँ ही जिंदगी गुजार दूँगी। मुझे कोई शिकायत न होगी।'

मगर भैया ने नफरत से भाभी के थुल-थुल करते जिस्म को देखा और मुँह मोड़ लिया।

'मैं तलाक दे चुका, अब क्या हो सकता है?'

मगर भाभी को कौन समझाता। वो बिलबिलाए चली गईं।

'बेवकूफ...' तुफैल ने एक ही झटके में भाभी को जमीन से उठा लिया। 'गधी कहीं की, चल उठ! . ..' और वो उसे घसीटते हुए ले गए।

क्या दर्दनाक समाँ था। फूट-फूटकर रोने में हम भाभी का साथ दे रहे थे। अम्मा खामोश एक-एक का मुँह तक रही थीं। अब्बा की मौत के बाद उनकी घर में कोई हैसियत नहीं रह गई थी। भैया खुद-मुख्तार थे बल्कि हम सबके सर-परस्त थे। अम्मा उन्हें बहुत समझाकर हार चुकी थीं। उन्हें इस दिन की अच्छी तरह खबर थी, मगर क्या कर सकती थीं।

भाभी चली गईं...फिजा ऐसी खराब हो गई थी कि भैया और शबनम भी शादी के बाद हिल-स्टेशन पर चले गए।

***

सात-आठ साल गुजर गए... कुछ ठीक अंदाजा नहीं... हम सब अपने-अपने घरों की हुईं। अम्मा का इंतकाल हो गया।

आशियाना उजड़ गया। भरा हुआ घर सुनसान हो गया। सब इधर-उधर उड़ गए। सात-आठ साल आँख झपकते न जाने कहाँ गुम हो गए। कभी साल-दो साल में भैया की कोई खैर-खबर मिल जाती। वो ज्यादातर हिन्दुस्तान से बाहर मुल्कों की चक-फेरियों में उलझे रहे मगर जब उनका खत आया कि वो मुंबई आ रहे हैं तो भूला-बिसरा बचपन फिर से जाग उठा। भैया ट्रेन से उतरे तो हम दोनों बच्चों की तरह लिपट गए। शबनम मुझे कहीं नजर न आई। उनका सामान उतर रहा था। जैसे ही भैया से उसकी खैरियत पूछने को मुड़ी धप से एक वजनी हाथ मेरी पीठ पर पडा और कई मन का गर्म-गर्म गोश्त का पहाड़ मुझसे लिपट गया।

'भाभी! मैंने प्लेटफॉर्म से नीचे गिरने से बचने के लिए खिड़की में झूलकर कहा। जिंदगी में मैंने शबनम को कभी भाभी न कहा था। वो लगती भी तो शबनम ही थी, लेकिन आज मेरे मुँह से

'भाभी! मैंने प्लेटफॉर्म से नीचे गिरने से बचने के लिए खिड़की में झूलकर कहा। जिंदगी में मैंने शबनम को कभी भाभी न कहा था। वो लगती भी तो शबनम ही थी, लेकिन आज मेरे मुँह से बेइख्तियार भाभी निकल गया। शबनम की फुआर...उन चंद सालों में गोश्त और पोस्त (मांस-त्वचा) का लोंदा कैसे बन गई। मैंने भैया की तरफ देखा। वो वैसे ही दराज कद और छरहरे थे। एक तोला गोश्त न इधर, न उधर।

बेइख्तियार भाभी निकल गया। शबनम की फुआर. ..उन चंद सालों में गोश्त और पोस्त (मांस-त्वचा) का लोंदा कैसे बन गई। मैंने भैया की तरफ देखा। वो वैसे ही दराज कद और छरहरे थे। एक तोला गोश्त न इधर, न उधर।

जब भैया ने शबनम से शादी की तो सभी ने कहा था... शबनम आजाद लड़की है, पक्की उम्र की है. ..भाभी...तो ये मैंने शहजाद को हमेशा भाभी ही कहा। हाँ तो शहजाद भोली और कमसिन थी... भैया के काबू में आ गई। ये नागिन इन्हें डस कर बेसुध कर देगी। इन्हें मजा चखाएगी।

मगर मजा तो लहरों को सिर्फ चट्टान ही चखा सकती है।

'बच्चे बोर्डिंग में हैं, छुट्टी नहीं थी उनकी...।' शबनम ने खट्टी डकारों भरी सांस मेरी गर्दन पर छोड़कर कहा.

और मैं हैरत से उस गोश्त के ढेर में उस शबनम को, फुआर को ढूँढ रही थी, जिसने शहजाद के प्यार की आग को बुझाकर भैया के कलेजे में नई आग भड़का दी थी। मगर ये क्या? उस आग में भस्म हो जाने से भैया तो और भी सच्चे सोने की तरह तपकर निखर आए थे। आग खुद अपनी तपिश में भस्म होकर राख का ढेर बन गई थी। भाभी तो मक्खन का ढेर थी...मगर शबनम तो झुलसी हुई टसयाली राख थी...उसका साँवला-कुंदनी रंग मरी हुई छिपकली के पेट की तरह और जर्द हो चुका था। वो शरबत घुली हुई आँखें गंदली और बेरौनक हो गई थीं। पतली नागिक जैसी लचकती हुई कमर का कहीं दूर-दूर तक पता न था। वो मुस्तकिल तौर पर हामिला मालूम होती थी। वो नाजुक-नाजुक लचकीली शाखों जैसी बाँहें मुगदर की तरह हो गई थीं। उसके चेहरे पर पहले से ज्यादा पावडर थुपा हुआ था। आँखें मस्कारा से लिथड़ी हुई थीं। भवें शायद गलती से ज्यादा नुच गई थीं, जभी इतनी गहरी पेंसिल घिसनी पड़ी थी। भैया रिट्ज में ठहरे। रात को डिनर पर हम वहीं पहुँच गए।

कैबरे अपने पूरे शबाब पर था। मिस्री हसीना अपने छाती जैसे पेट को मरोडिया दे रही थी, उसके कूल्हे दायरों में लचक रहे थे...सुडौल मरमरीं बाजू हवा में थरथरा रहे थे, बारीक शिफान में से उसकी रूपहली टाँगें हाथी-दाँत के तराशे हुए सतूनों (खम्भों) की तरह फड़क रही थीं... भैया की भूखी आँखें उसके जिस्म पर बिच्छुओं की तरह रेंग रही थीं...वो बार-बार अपनी गुद्दी पर अनजानी चोट सहला रहे थे।

भाभी...जो कभी शबनम थी...मिस्री रक्कासा (नर्तकी) की तरह लहराई हुई बिजली थी, जो एक दिन भैया के होशों-हवास पर गिरी थी, आज रेत के ढेर की तरह भसकी बैठी थी। उसके मोटे-मोटे गाल खून की कमी और मुस्तकिल स्थायी बदहज्मी की वजह से पीलेपन की ओर अग्रसर हो रहे थे। नियान लाइट्स की रोशनी में उसका रंग देखकर ऐसा मालूम हो रहा था जैसे किसी अनजाने नाग ने डस लिया हो। मिस्री रक्कासा के कूल्हे तूफान मचा रहे थे और भैया के दिल की नाव उस भँवर में चक-फेरियाँ खा रही थीं, पाँच बच्चों की माँ शबनम...जो अब भाभी बन चुकी थी, सहमी-सहमी नजरों से उन्हें तक रही थी, ध्यान बँटाने के लिए वो तेजी से भुना हुआ मुर्ग हड़प कर रही थी।

आर्केस्ट्रा ने एक भरपूर साँस खींची...साज कराहे. ..ड्रम का दिल गूँज उठा...मिस्री रक्कासा की कमर ने आखिरी झकोले लिए और निढाल होकर मरमरीं फर्श पर फैल गई।

हॉल तालियों से गूँज रहा था...शबनम की आँखें भैया की ढूँढ रही थी...बैरा तरो-ताजा रसभरी और क्रीम का जग ले आया। बेखयाली में शबनम ने प्याला रसभरियों से भर लिया। उसके हाथ लरज रहे थे। आँखें चोट खाई हुई हिरनियों की तरह परेशान चौकड़ियाँ भर रही थीं।

भीड़-भाड़ से दूर...हल्की अंधेरी बालकनी में भैया खडे मिस्री रक्कासा का सिगरेट सुलगा रहे थे। उनकी रसमयी निगाहें रक्कासा की नशीली आँखों से उलझ रही थीं। शबनम का रंग उड़ा हुआ था और वो एक ऊबड़-खाबड़ पहाड़ की तरह गुमसुम बैठी थी। शबनम को अपनी तरफ तकता देखकर भैया रक्कासा का बाजू थामे अपनी मेज पर लौट आए और हमारा तआरुफ कराया।

'मेरी बहन, उन्होंने मेरी तरफ इशारा किया। रक्कासा ने लचककर मेरे वजूद को मान लिया। 'मेरी बेगम... उन्होंने ड्रामाई अंदाज में कहा। जैसे कोई मैदाने-जंग में खाया हुआ जख्म किसी को दिखा रहा हो। रक्कासा स्तब्ध रह गई। जैसे उनकी जीवन-संगिनी को नहीं खुद उनकी लाश को खून में लथपथ देख लिया हो, वो भयभीत होकर शबनम को घूरने लगी। फिर उसने अपने कलेजे की सारी ममता अपनी आँखों में समोकर भैया की तरफ देखा। उसकी एक नजर में लाखों फसाने पोशीदा थे। 'उफ ये हिन्दुस्तान जहाँ जहालत से कैसी-कैसी प्यारी हस्तियाँ रस्मों-रिवाज पर कुर्बान की जाती हैं। काबिले-परस्तिश हैं वो लोग और काबिले-रहम भी,जो ऐसी-ऐसी 'सजाएँ भुगतते हैं। ...मेरी शबनम भाभी ने रक्कासा की निगाहों में ये सब पढ़ लिया। उसके हाथ काँपने लगे। परेशानी छुपाने के लिए उसने क्रीम का जग उठाकर रसभरियों पर उंडेल दिया और जुट गई।

प्यारे भैया! हैंडसम और मजलूम...सूरज-देवता की तरह हसीन और रोमांटिक, शहद भरी आँखों वाले भैया, चट्टान की तरह अटल...एक अमर शहीद का रूप सजाए बैठे मुस्करा रहे थे...

...एक लहर चूर-चूर उनके कदमों में पड़ी दम तोड़ रही थी...

...दूसरी नई-नवेली लचकती हुई लहर उनकी पथरीली बाँहों में समाने के लिए बेचैन और बेकरार थी।

'मेरी बहन, उन्होंने मेरी तरफ इशारा किया। रक्कासा ने लचककर मेरे वजूद को मान लिया।

'मेरी बेगम... उन्होंने ड्रामाई अंदाज में कहा। जैसे कोई मैदाने-जंग में खाया हुआ जख्म किसी को दिखा रहा हो। रक्कासा स्तब्ध रह गई। जैसे उनकी जीवन-संगिनी को नहीं खुद उनकी लाश को खून में लथपथ देख लिया हो, वो भयभीत होकर शबनम को घूरने लगी। फिर उसने अपने कलेजे की सारी ममता अपनी आँखों में समोकर भैया की तरफ देखा। उसकी एक नजर में लाखों फसाने पोशीदा थे। 'उफ ये हिन्दुस्तान जहाँ जहालत से कैसी-कैसी प्यारी हस्तियाँ रस्मों-रिवाज पर कुर्बान की जाती हैं। काबिले-परस्तिश हैं वो लोग और काबिले-रहम भी,जो ऐसी-ऐसी 'सजाएँ भुगतते हैं। ...मेरी शबनम भाभी ने रक्कासा की निगाहों में ये सब पढ़ लिया। उसके हाथ काँपने लगे। परेशानी छुपाने के लिए उसने क्रीम का जग उठाकर रसभरियों पर उंडेल दिया और जुट गई।

खुले दिमाग़ के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288

₹ 200

शोधादर्श

संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

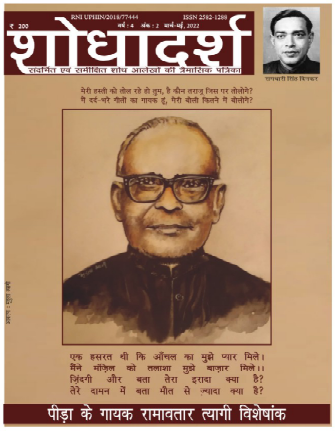

शोधादर्श में प्रकाशित विज्ञापन रेट

क्रम	विज्ञापन स्थान संपूर्ण पृष्ठ	मूल्य रुपए में	विज्ञापन स्थान आधा पृष्ठ	मूल्य रुपए	विज्ञापन स्थान चौथाई पृष्ठ	मूल्य रुपए
1	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	26,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	13,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	7,000.00
2	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	22,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	11,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	6,000.00
3	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	20,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	10,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	5,000.00
4	श्वेत श्याम पृष्ठ	10,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	5,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	2,500.00

तकनीकी जानकारी- आकार- २१.५x२७.५ सेमी, प्रिंट एरिया- १८x२५ सेमी, कॉलम- ३ (कॉलम की चौड़ाई ५.५ सेमी.) लगभग पृष्ठ- आवरण सहित १००

नियमित ग्राहक बनें

RNI- UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288

समयावधि	रुपए डाक खर्च सहित	पीडीएफ/प्रिंट अंक	विशेषांक
वार्षिक	- १००००	४	१
द्विवार्षिक	- १६००	८	२
पंचवार्षिक	- ४५००	२०	५

SHODHADARSH
Bank
Indian Overseas Bank,
Branch-Najibabad
AC- 368602000000186
IFSC- IOBA0003686

रजिस्टर्ड पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Email- shodhadarsh2018@gmail.com Mob.- 9897742814

RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288

₹ 200

शोधादर्श

संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

खुले दिमाग़ के खुले विचार

ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार–पत्र

आज पत्रिकाओं का प्रकाशन कठिन कार्य हो गया है।
बढ़ती महंगाई और घटते पाठक इसकी मूल वजह हैं।
यदि आप बेहतर सामग्री पढ़ना चाहते हैं तो ध्यान रखें

मांगकर नहीं ख़रीदकर पढ़ें